नवम्बर 2022 ■ वर्ष : 68 ■ अंक : 02 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

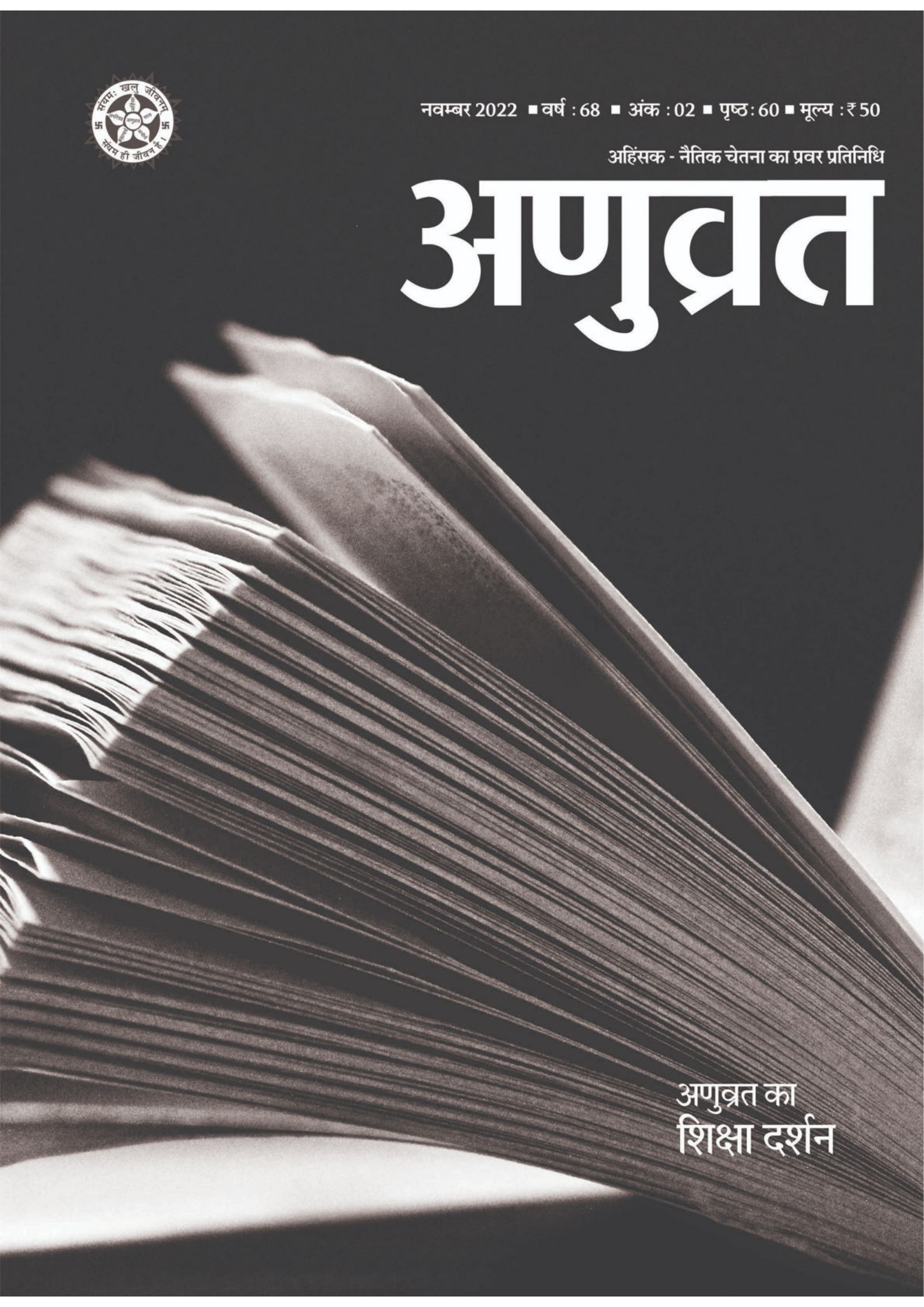

अणुव्रत का शिक्षा दर्शन

अर्हम्

अणुव्रत आन्दोलन परम पूज्य अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी की एक विशिष्ट देन है। इस आंदोलन के साथ कितने-कितने कार्यकर्ता जुड़े हैं और इस आंदोलन के प्रसार में अपना योगदान दिया है। अनेक चारित्रात्माओं का भी विशिष्ट योगदान इसके प्रसार में रहा है। सन् 2023 में अणुव्रत अमृत महोत्सव भी प्रारंभ होने वाला है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अपनी महत्वपूर्ण शक्ति अणुव्रत अमृत महोत्सव की आयोजना में तथा अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में नियोजित करती रहे। इस संस्था के पास जीवन विज्ञान की गतिविधि भी है। सभी नैतिकता और संयम को संपोषित करने वाली गतिविधियां अच्छी तरह चलती रहें, कार्यकताओं में पवित्र उत्साह बना रहे। मंगलकामना।

12 अक्टूबर 2022
छापर, राजस्थान

-आचार्य महाश्रमण

■ ■ ■

धर्म का काम है सोये हुए व्यक्ति को जगाना। जागने का अर्थ है, जीवन को सही दिशा की ओर ले जाना। इसके लिए हमें अपने पर नियंत्रण करना होगा। श्री विनोबाजी का भी यही लक्ष्य था।
मैं मानता हूँ कि आचार्य श्री तुलसी जी का भी यही लक्ष्य है। आपने अणुव्रत के द्वारा जीवन-निर्माण की बात कही है। अणुव्रत और सर्वोदय दो नाम हैं, मगर विचारधारा में समान हैं।

- शिवाजी नरहरि भावे

■ ■ ■

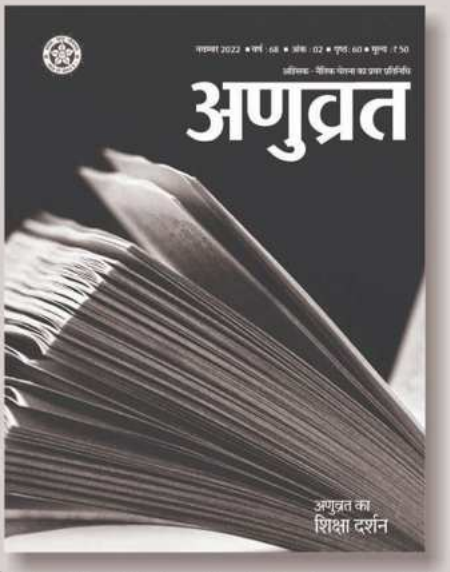

वर्ष 68 • अंक 02 • कुल पृष्ठ 60 • नवम्बर, 2022

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

■ ■ ■

पत्रिका प्रसार व विज्ञापन
संयोजक
शांतिलाल पटावरी

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	–	₹ 50
एकवर्षीय	–	₹ 600
त्रैवर्षीय	–	₹ 1500
पंचवर्षीय	–	₹ 2500
दसवर्षीय	–	₹ 5000
योगक्षेमी (15 yrs.)	–	₹ 11000

₹ 350 का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर आप अपनी प्रति कोरियर से मंगवा सकते हैं।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन सदस्यता हेतु ::

https://rzp.io/l/avbp पर लॉगिन करें
या इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- शिक्षा और संस्कार 08
  आचार्य तुलसी
- अणुव्रत का शिक्षा दर्शन 11
  आचार्य महाप्रज्ञ
- ज्ञान और आचार 14
  आचार्य महाश्रमण

आलेख

- बाल साहित्य... 16
  मानस रंजन महापात्र
- घर की पाठशाला का महत्व 18
  आइवर यूशिएल
- प्रामाणिकता की नजीर 21
  साध्वी आनंदप्रभा
- किशोरों के लिए मूल्य... 22
  डॉ. ज्योति शर्मा
- आत्मनिर्भरता की सीख 26
  विनयशील जैन
- Human Survival and the Need... 28
  Prof. N.Radhakrishnan

कहानी

- शेष चाहत 36
  प्रगति गुप्ता

कविता

- ...ये भी कम नहीं! 17
  साध्वी कल्पमाला
- नैतिकता के नाम 20
  गिरीश पंकज
- दो ग़ज़लें 24
  नित्यानंद 'तुषार'
- अणुव्रत बना सुरक्षा कवच 10
  साध्वी यशोधरा

लघुकथा

- सुवृत्ति 27
  मीरा जैन
- संपादकीय 05
- महामंत्री की कलम से 06
- अणुव्रत अमृत महोत्सव 07
- अतीत के झरोखे से 32
- कदमों के निशां 39
- अणुव्रत बालोदय 40
- अणुव्रत प्रबोधन कार्यशाला 42
- अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह 2022 43
- ईको फ्रेंडली दीपावली 51
- विशेषांक विमर्श 55
- अणुव्रत की बात 58

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

बाल पीढ़ी और भविष्य की दिशाएं

मेरे भगवान !
जरा रुको,
मुझे छोड़ कर
कहाँ दूर
चले जा रहे हो तुम?
जब मैं नादान था
तुम मुझ में
समाये रहते थे,
अपनी दिव्यता से
तुम मुझे
सजाये रखते थे,
लेकिन, अब
जब मुझे
समझ आने लगी है
दूरी मुझ से क्यों
तुम्हारी बढ़ने लगी है?
मेरी दृष्टि
मेरी सृष्टि
क्यों खुद में ही बस
सिमटने लगी है?
खुद के सिवाय
क्यों हर तस्वीर मुझे
उल्टी दिखने लगी है?

मेरी नजरों से
ओझल हो जाओ,
उससे पहले
भगवान ! रुको,
ऐसी समझदारी
मुझे नहीं गवारा
जो मुझे
तुमसे जुदा कर दे,
मैं नासमझ ही अच्छा
तुम मुझे फिर से
बच्चा बना दो।
जरा रुको
मेरे भगवान
तुम मुझे फिर से
सच्चा बना दो।

नयी पीढ़ी का सम्यक् दिशा-दर्शन हर युग की आवश्यकता रहा है। हर युग का समाज अपनी तत्कालीन परिस्थितियों से चिंतित रहते हुए भविष्य को चिंता मुक्त बनाने के लिए प्रयासरत भी रहा है। इस विषय पर अनेक प्रयोग, शोध व अनुसंधान हुए हैं। पुस्तकें लिखी गयी हैं और योजनाएं भी बनायी गयीं, लेकिन पिछली दो सदियों को देखें तो नयी पीढ़ी और मानवता के भविष्य के प्रति हमारी चिंता कम होने के बजाय बढ़ती ही गयी है। इसके लिए हम शासन पद्धतियों को, सामाजिक व्यवस्थाओं को, शिक्षा के ढांचे को तो कभी स्वयं नयी पीढ़ी को ही जिम्मेदार ठहराते रहे, लेकिन समस्या के समाधान के प्रति हम आश्वस्त नहीं हो पाये।

वर्तमान युग को देखें तो हमें वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ऐसे अनेक साधन व संसाधन उपलब्ध हैं, जिनकी कुछ दशकों पूर्व कल्पना करना भी संभव नहीं था। आज हमारे समक्ष जितने विकल्प उपलब्ध हैं, संभवतः पहले कभी नहीं रहे। विकल्पों की प्रचुरता जहां समाधान के व्यापक अवसर उपलब्ध कराती है, वहीं उलझनों और अनिश्चितताओं को भी जन्म देती है। वर्तमान युग में जहां पुरानी परंपराएं टूटने के साथ ही नयी चिंतन धाराएं स्थापित हो रही हैं, नये-नये तर्कों के आधार पर नये सिद्धांत गढ़े जा रहे हैं, इस परिदृश्य में सर्वसम्मत समाधान की बात करना बेमानी-सा होता जा रहा है। भविष्य निर्माण जैसे अहम विषय को समाहित करने के लिए जिस गंभीरता, दूरदर्शिता और निःस्वार्थपरकता की जरूरत होती है, प्रतिस्पर्द्धा और गति के वर्तमान युग में ये तत्त्व दुर्लभ होते जा रहे हैं।

इन परिस्थितियों में भविष्य निर्माण का अहम प्रश्न भ्रम और विवादों की बलि चढ़ता जा रहा है। जीवन के कुछ पहलू ऐसे होते हैं जिन्हें सतही प्रयोगों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। होना तो यह चाहिए कि जब तक नये प्रयोग अपने आप को सफलता के मापदंड पर खरे साबित नहीं कर देते, पुरानी परंपराओं को कायम रखते हुए भविष्य की दिशा का निर्धारण किया जाये क्योंकि निश्चितता के अभाव में यदि स्थापित मूल्यों को छोड़ दिया जाता है तो भावी पीढ़ी अनिश्चितताओं के घेरे में अपने आप को कुंठित-सी अनुभव करती है।

दुनिया के अलग-अलग भागों में शिक्षा और शिक्षणशैली को मूल्य आधारित बनाने के अनेकानेक प्रयास होते रहे हैं, लेकिन अधिकांश प्रयास अपने ही बोझ तले दब कर दम तोड़ते रहे हैं। कई देशों में ऐसे प्रयासों को सफलता मिली है लेकिन उनका वैश्विक स्तर पर क्रियान्वयन संभव नहीं हो सका। हालांकि, शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करने में सरकारी नीतियां, स्थानीय परम्पराएं और संस्कृति बड़ी भूमिका निभाती हैं लेकिन बच्चों के मनोविज्ञान की सार्वभौमिकता को स्वीकार किये बिना सही दिशा को पाना संभव नहीं हो सकेगा।

जीवन विज्ञान ऐसा ही एक प्रयास है जिसे पिछले चार दशकों में व्यापक प्रशंसा और सफलता मिली है। इसके मूल में आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ की दूरदर्शी चिंतनधारा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने इसे 'अणुव्रत का शिक्षा-दर्शन' की उपमा दी है। ऐसे प्रयास समय की मांग हैं। इनकी सफलता के लिए स्कूलों में अनुकूल माहौल बनाना बहुत आवश्यक है और यह तभी संभव है जब स्कूल प्रशासन के साथ-साथ शिक्षक और अभिभावक वर्ग ईमानदार प्रयास करे। ऐसा होने पर ही बच्चे इन कोशिशों से दिल से जुड़ पाएंगे और अपने भविष्य को सही दिशा में अग्रेषित कर पाएंगे। अणुविभा का बालोदय मॉडल भी इस दृष्टि से अनेक संभावनाएं अपने में समेटे है।

विश्व के लगभग सभी देश किसी न किसी रूप में बाल दिवस मनाते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 20 नवम्बर का दिन विश्व बाल दिवस के रूप में घोषित है। किन्तु, क्या हम बच्चों की दशा और उनके भविष्य की दिशा सुधारने में कामयाब हो पाये हैं? शिक्षा की गुणवत्ता निश्चय ही इसमें एक बड़ा पक्ष है, लेकिन साथ ही अशिक्षा, भुखमरी, कुपोषण, शोषण जैसे कलंक भी मानवता को शर्मसार कर रहे हैं। इनसे हम यदि हमारी भावी पीढ़ी को मुक्त नहीं कर पाये तो बाल दिवस मनाते रहना आडम्बर के अलावा कुछ नहीं होगा।

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com

महामंत्री की कलम से

मैं सर्वप्रथम अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक परम श्रद्धेय आचार्य श्री तुलसी एवं वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने श्रद्धा भाव व्यक्त करता हूँ। मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मुझे अणुव्रत जैसे मानवतावादी आंदोलन से जुड़ने का अवसर मिला और समर्पित व सक्षम अणुव्रत कार्यकर्ताओं के साथ काम करने का मौका मिला।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि केंद्रीय संस्था है जिसके अंतर्गत देश-विदेश में हजारों कार्यकर्ता सामाजिक बदलाव के मिशन में जुटे हुए हैं। अणुविभा और देशभर में सक्रिय अणुव्रत समितियों के माध्यम से शिक्षा, संस्कार, समाज सुधार, सद्साहित्य, चुनाव शुद्धि, नशामुक्ति, अहिंसा प्रशिक्षण, विश्व शांति व अहिंसा जैसे विविध और व्यापक विषयों पर आधारित अनेकानेक प्रकल्प अणुव्रत आंदोलन को प्रभावी बनाते हैं। "संयम ही जीवन है" इस ध्येय वाक्य के साथ अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी "सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा" इस लक्ष्य की पूर्ति की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

मैं अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के समस्त पदाधिकारियों, विभिन्न प्रकल्प संयोजकों, राज्य प्रभारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों के प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिनके सहयोग के बिना सफलता की यह यात्रा संभव नहीं थी। इस यात्रा में समस्त अणुव्रत समितियों के अध्यक्ष, मंत्री गण एवं अन्य पदाधिकारियों व सदस्यों का अतुलनीय सहयोग प्राप्त हुआ है। महामंत्री के नाते आप सभी के निरंतर संपर्क में रहने का मैंने प्रयास किया है। आपका जो स्नेह और सहयोग संस्था के विकास में मिला है, उसके प्रति मैं सदैव आप सबका आभारी रहूँगा।

विशेष रूप से आभारी हूँ मैं अध्यक्ष महोदय श्री संचय जी जैन का जिन्होंने मुझ पर विश्वास कर महामंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद पर काम करने का अवसर प्रदान किया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश जी नाहर अध्यक्ष महोदय के साथ कंधे से कंधा मिला कर मेरा मार्गदर्शन करते रहे। उपाध्यक्ष श्री अशोक जी डूंगरवाल, श्री राजेश जी सुराणा, श्री प्रताप जी दुगड़ एवं श्री महेंद्र जी नाहर का भरपूर सहयोग मिला। कोषाध्यक्ष राकेश जी बरड़िया का हिसाब-किताब के व्यवस्थित रखरखाव में निरंतर सहयोग मिलता रहा। दिल्ली कार्यालय की सार-संभाल में सहमंत्री इंद्र बैंगानी, राजसमंद कार्यालय की सार- संभाल में सहमंत्री श्री जगजीवन चोरड़िया, सहमंत्री छतर जी चोरड़िया एवं विमल जी बैद का भी हर कार्य में सहयोग मिला।

अणुव्रत समितियों की दृष्टि से अणुव्रत आंदोलन का कार्यक्षेत्र पूरे भारतवर्ष एवं नेपाल में 5 अंचलों में बांटा हुआ है। पांचों ही क्षेत्रों के सक्षम प्रहरियों के रूप में 5 संगठन मंत्रियों के अथक एवं सकारात्मक प्रयासों से ही हम अणुव्रत की विभिन्न प्रवृत्तियों का सफल संचालन कर सके। उत्तरांचल की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, पश्चिमांचल के श्री विनोद कोठारी, मध्यांचल के श्री संजय जैन, दक्षिणांचल के श्री कन्हैयालाल चिप्पड़ एवं पूर्वांचल के संगठन मंत्री श्री राकेश मालू का अतुलनीय सहयोग मिला। संगठन मंत्री के रूप में श्री जय बोहरा का भी अच्छा सहयोग रहा। प्रचार प्रसार मंत्री के रूप में श्री धर्मेंद्र डाकलिया एवं प्रकाशन मंत्री के रूप में श्री प्रमोद घोड़ावत का भी पूरा सहयोग मिला। दिल्ली में सहयोगी के रूप में वरिष्ठ अणुव्रती श्री शांतिलाल जी पटावरी का भी पूरा सहयोग मिला।

इन सभी कार्यक्रमों-आयोजनों के पीछे जो प्रेरणा व संबल हमें मिलता रहा है उसका स्रोत है परम पूज्य आचार्य प्रवर का सबल आशीर्वाद एवं उत्साहवर्धन। जब-जब हम पूज्य प्रवर के सान्निध्य में उपस्थित हुए हैं, हमें न सिर्फ समस्याओं का समाधान प्राप्त हुआ है वरन आगे बढ़ने की नयी ऊर्जा और प्रेरणा प्राप्त हुई है। अणुव्रत अनुशास्ता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। अणुव्रत के कार्यक्रमों को सही दिशा व गति प्रदान करने के लिए अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि श्री मननकुमार जी का मार्गदर्शन हमारे लिए सदैव उपयोगी रहा है। मैं आपके प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त करता हूँ।

अणुव्रत के इस 73वें अधिवेशन में हम सब कार्यकर्ता देश के अलग-अलग भागों से एक नेक उद्देश्य के साथ एकत्र हुए हैं। यहां से हम नयी शक्ति प्राप्त करके अपने-अपने क्षेत्रों में जाएंगे और अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन के 75वें वर्ष को अणुव्रत अमृत महोत्सव के रूप में सफलता की नयी ऊँचाइयों तक पहुंचाएंगे, इसी आशा और विश्वास के साथ मैं एक बार पुनः सभी के प्रति कृतज्ञता एवं संस्था की भावी उन्नति की मंगलभावना व्यक्त करता हूँ।

इस यात्रा में पारिवारिक जनों का भी मुझे पूरा सहयोग मिला। परिवार के सहयोग के बिना मैं शायद यह कार्य नहीं कर पाता। विशेषकर धर्मपत्नी कुसुम सुराणा का पूरे मनोयोगभाव से मुझे सहयोग मिला। कृतज्ञता। अणुव्रत की इस यात्रा में कार्य करते हुए हम से कोई कमी रह गयी हो, आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य नहीं हो पाया हो तो सबसे करबद्ध क्षमायाचना।

अणुव्रत पत्रिका अपने पाठकों को अणुव्रत दर्शन एवं जीवनशैली से निरंतर परिचित करा रही है। इसे असीम स्नेह प्रदान करने के लिए पाठकों का आभार।

भीखम सुराणा
महामंत्री

अणुव्रत अमृत महोत्सव

महान संत युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी ने 1 मार्च, 1949 को राजस्थान के एक छोटे से कस्बे सरदारशहर में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया था। 74 वर्ष की गौरवमयी यात्रा पूर्ण कर 1 मार्च, 2023 को मानव कल्याण से विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाला यह आंदोलन 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

अणुव्रत अनुशास्ता के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में इस ऐतिहासिक वर्ष को 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। अणुव्रत विचारधारा का समर्थक प्रत्येक व्यक्ति इस वर्ष को उत्साह और समर्पण भाव से मनाने को उद्यत है। अणुविभा टीम 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' की सफलता की हार्दिक मंगलकामना करती है।

आचार्य तुलसी

शिक्षा और संस्कार

जो जीवन के मूलभूत तत्त्व हैं, उन्हीं का नाम मूल्य है। जो जीवन को बनाने या संवारने वाले मौलिक तत्त्व हैं, उन्हीं का नाम मूल्य है। सरलता, सहनशीलता, कोमलता, अभय, सत्य, करुणा, धृति, प्रामाणिकता, संतुलन आदि ऐसे गुण हैं, जिनको जीवन-मूल्यों के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। एक शिक्षित व्यक्ति के जीवन में उक्त मूल्यों का समावेश नहीं होगा तो इनको कहां खोजा जाएगा?

शिक्षा एक प्रकार की जन्मघुट्टी है। जन्म के साथ ही बच्चे को जन्मघुट्टी दी जाती है। विज्ञान के अनुसार जीन्स में व्यक्तित्व के बीज निहित हैं। जनप्रवाह जन्मघुट्टी में व्यक्तित्व की संभावनाएं देखता है। जन्मघुट्टी देने से व्यक्ति के गुण-दोषों का संक्रमण बच्चे में होता है, यह भी एक मान्यता रही है।

जन्मघुट्टी क्या है? कैसे दी जाती है? कौन देता है? कैसे देनी चाहिए? आदि मुद्दों को लेकर कभी कोई आयोग नहीं बैठा। जन्म के बाद बच्चे को माँ का दूध मिलता है। उसके बारे में आज तक कभी कोई वैज्ञानिक विश्लेषण हुआ है क्या? माँ के दूध में कौन-से तत्त्व होते हैं? उसमें और क्या मिलाना चाहिए? आदि प्रश्नों पर कभी कोई व्यापक बहस हुई हो, सुनने या पढ़ने में नहीं आया। माँ का दूध बच्चे के लिए प्राकृतिक खुराक मानी गयी है। उससे बच्चे का पोषण होता है। जो माताएं आधुनिक कहलाने के व्यामोह में बच्चे को अपने दूध से वंचित रखती हैं, वे उसके हितों का विघटन करती हैं, ऐसा भी कहा जाता है।

शिक्षा की जन्मघुट्टी या माँ के दूध से तुलना की जाये तो उसे तर्क-वितर्कों और वितण्डावादों में क्यों उलझाया जाता है? भारत की आजादी के बाद शिक्षा के विषय में कितने आयोग बैठे, कितनी रिपोर्ट बनी, प्रश्न आज भी ज्यों का त्यों उलझा हुआ है। कहीं आयोग काम नहीं करते। कहीं रिपोर्ट नहीं बनती। कहीं रिपोर्ट पढ़ी नहीं जाती। कहीं उसकी क्रियान्विति नहीं होती। 'अ' से लेकर 'ह' तक कहीं कुछ भी नहीं होता। तब फिर एक आयोग बैठता है। अब तक कहीं कुछ नहीं हुआ, यह समीक्षा करने के लिए बैठने वाला आयोग भी जब अतीत के क्रम को दोहरा देता है, तब उससे क्या आशा की जाये? कैसा आश्वासन पाया जाये? और शिक्षा को जीवन के साथ कैसे जोड़ा जाये?

मेरा परामर्श तो यह है कि शिक्षा पद्धति की श्रेष्ठता या अश्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए अब कोई नया आयोग न बैठे। एक के बाद एक शृंखलाबद्ध गोष्ठियों और सेमिनारों का आयोजन भी न हो। हो तो एक ऐसी संगोष्ठी हो, जिसमें वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, शिक्षाशास्त्री, शिक्षक, साहित्यकार, राजनीतिक और सामाजिक व्यक्तियों का उचित प्रतिनिधित्व हो। सब लोग मिलकर भारत की आकांक्षाओं, जरूरतों और बुनावट को ध्यान में रखकर कोई ऐसा सर्वमान्य निर्णय लें, जिसकी क्रियान्विति में किसी प्रकार की बाधा न हो। इस पृष्ठभूमि पर जो भी निर्णय होगा, वह मूल्य आधारित शिक्षा के प्रश्न को अनदेखा नहीं करेगा।

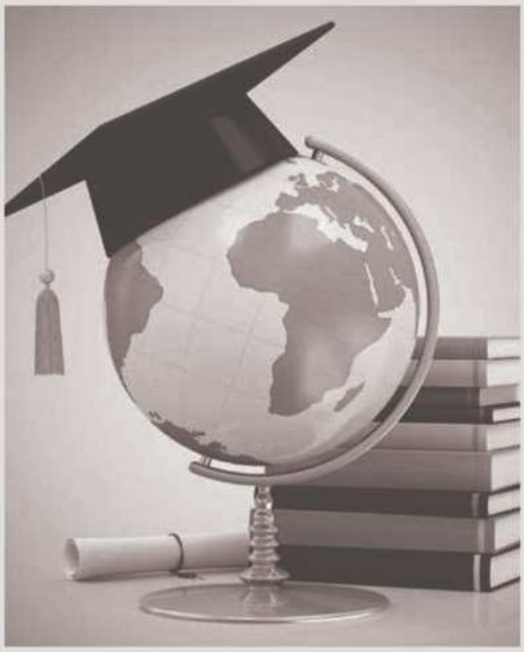

विद्यार्थियों के जीवन में मूल्यहीनता की समस्या का स्थायी समाधान है - अध्यापकों और अभिभावकों के जीवन में बोलते मूल्य। समाज और परिवार में प्रतिष्ठित मूल्यों को ही शिक्षा के माध्यम से संप्रेषित किया जा सकता है।

मूल्य क्या है? जो जीवन के मूलभूत तत्त्व हैं, उन्हीं का नाम मूल्य है। जो जीवन को बनाने या संवारने वाले मौलिक तत्त्व हैं, उन्हीं का नाम मूल्य है। जहां मौलिकता समाप्त हो जाती है, वहां विजातीय तत्त्वों को खुलकर खेलने का मौका मिल जाता है। सरलता, सहनशीलता, कोमलता, अभय, सत्य, करुणा, धृति, प्रामाणिकता, संतुलन आदि ऐसे गुण हैं, जिनको जीवन-मूल्यों के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। एक शिक्षित व्यक्ति के जीवन में उक्त मूल्यों का समावेश नहीं होगा तो इनको कहां खोजा जाएगा? मुझे आश्चर्य है कि मूल्यपरक शिक्षा की बात अब सामने आयी है। क्या अब तक जीवन-मूल्यों की शिक्षा नहीं दी जाती थी?

जिस समय शिक्षा के साथ मूल्यों के समावेश की चर्चा ही नहीं थी, उस समय भी इस देश की नानियां और दादियां बच्चों को कहानी-किस्सों के माध्यम से अच्छी बातें सिखाती थीं। मुझे भी बचपन में कहानी सुनने का शौक था। सभी बच्चों को रहता होगा, पर आज उन कहानियों का स्थान टी. वी. सीरियलों और कॉमिक्स ने ले लिया है। उनके द्वारा जो संस्कार परोसे जाते हैं, वे ही जीवन को प्रभावित करते हैं। जैसी संगत वैसी रंगत – यह कहावत गलत नहीं है। संगत के कारण एक तोता आगन्तुकों का स्वागत करता है और दूसरा उन्हें लूटने की सलाह देता है। विद्यार्थियों के जीवन में मूल्यहीनता की समस्या का स्थायी समाधान है – अध्यापकों और अभिभावकों के जीवन में बोलते मूल्य। समाज और परिवार में प्रतिष्ठित मूल्यों को ही शिक्षा के माध्यम से संप्रेषित किया जा सकता है।

राष्ट्रीय चरित्र और शिक्षा

राष्ट्रीय चरित्र को धूमिल या धवल करने में सबसे बड़ा हाथ होता है शिक्षा का। एक समय था, जब देश परतंत्र था। उस स्थिति में इस पर एक प्रकार की शिक्षा थोपी गयी। उसका चरित्र भारतीय संस्कृति और लोक जीवन के अनुकूल नहीं था। इस बात को समझने पर भी उस शिक्षा का अस्वीकार संभव नहीं था क्योंकि पराधीन व्यक्ति और राष्ट्र को वह सब स्वीकार करना पड़ता है, जो सत्ता के सिंहासन से कराया जाता है।

सामान्यतः शिक्षा का सम्बन्ध जीविका के साथ जोड़ा जाता है, जबकि वह जीवन के लिए अनिवार्य तत्त्व है। जहां जीविका को ही प्रधानता मिलती है, वहां साइंस और टेक्नोलॉजी की शिक्षा का महत्व बढ़ता है और नैतिकता एवं चरित्र के तत्त्व गौण हो जाते हैं। उस बिन्दु पर जाकर शिक्षा कितनी दयनीय बन जाती है, जहां वह जीविका भी नहीं जुटा पाती। न जीवन और न जीविका। ऐसी शिक्षा राष्ट्र के लिए अभिशाप बन जाती है। जीवन मूल्यों से अपरिचित करोड़ों-करोड़ों ऐसे विद्यार्थी हैं, जो बेरोजगारी की राह पर खड़े जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं के लिए तरस रहे हैं। ऐसे समय में शिक्षा नीति या शिक्षा पद्धति की सार्थकता पर कुछ प्रश्न-चिह्न खड़े हो जाते हैं, जो समाज की अपेक्षा और बुनावट पर ध्यान दिये बिना ही विद्यार्थी पर पुस्तकों और डिग्रियों का भार लाद रही है।

विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की लंबी कतारें देश के शैक्षणिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कटिबद्ध हैं। स्तर की परिभाषाएं अलग-अलग हैं। एक दृष्टि से आज का विद्यार्थी अतीत की अपेक्षा बहुत अधिक विषय पढ़ता है। वह देश-विदेश की हर गतिविधि से परिचित रहता है। कई क्षेत्रों में उसने अपनी दक्षता बढ़ायी है, किन्तु कुछ ऐसी बातें भी हैं, जो स्तर को उठाने की अपेक्षा नीचा करने वाली प्रमाणित हो रही हैं। हिन्दी का शुद्ध लेखन और उच्चारण स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भी कठिन हो रहा है। साहित्यिक स्तर की हिन्दी को समझने में तो उन्हें एड़ी से चोटी तक पसीना आ जाता है। एक राष्ट्रभाषा अपने ही राष्ट्र में इतनी उपेक्षित हो जाये तो उसकी ओर ध्यान कौन देगा?

यह सच है कि किसी भी देश के वातावरण को बदलने में शिक्षा की भूमिका अहम होती है। देश के लाखों-करोड़ों विद्यार्थी जैसे संस्कार पाएंगे, उन्हीं के आधार पर देश बनेगा। इस दृष्टि से शिक्षा पद्धति को ठोस बनाना जरूरी है। बहुत लोगों का यह अभिमत है कि हमारी शिक्षा पद्धति गलत है। मेरा चिन्तन इससे भिन्न है। मेरी दृष्टि में शिक्षा पद्धति गलत नहीं, अधूरी है। इससे बौद्धिक विकास हो रहा है, शारीरिक विकास पर भी थोड़ा ध्यान

दिया जा रहा है, किन्तु मानसिक और भावनात्मक विकास शून्य की तरह है। आश्चर्य तो इस बात का है कि शिक्षा नीति में बदलाव के लिए कितने आयोग बने, कितनी रिपोर्टें आयीं, पर हुआ कुछ नहीं। इस स्थिति में निराशा का वातावरण बन रहा है।

नैतिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा आदि शब्द आज इतने घिसे-पिटे हो गये हैं कि इनके प्रति कोई आकर्षण नहीं रहा है। नैतिक शिक्षा पर एक आपत्ति यह भी आ रही है कि जो शिक्षा दी जा रही है, क्या वह अनैतिक है? धार्मिक शिक्षा पर टिप्पणी यह है कि धर्मनिरपेक्ष देश में किसी धर्म-सम्प्रदाय विशेष की शिक्षा कैसे दी जा सकती है? ऐसी स्थिति में शिक्षा को सर्वांगीण बनाने के लिए गहराई से चिन्तन किया गया। उस चिन्तन की निष्पत्ति है जीवन विज्ञान। प्राथमिक कक्षाओं से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक जीवन विज्ञान का पाठ्यक्रम तैयार हो चुका है। इसमें सिद्धान्त पक्ष के साथ प्रायोगिक पक्ष पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। लक्ष्य यह रहा है कि विद्यार्थी के समग्र व्यक्तित्व का निर्माण हो। वह केवल बौद्धिक विकास पर रुके नहीं। उसमें आवेगों और संवेगों पर नियंत्रण पाने की क्षमता भी बढ़े। साइंस और टेक्नोलॉजी के साथ-साथ उसे सहिष्णुता, संतुलन, धृति, करुणा, संयम आदि जीवन मूल्यों का बोध-पाठ दिया जाये। शिक्षा के क्षेत्र में जीवन विज्ञान का प्रवेश शिक्षा संबंधी अनेक समस्याओं को स्थायी समाधान दे सकेगा, ऐसा विश्वास है। ■■■

प्रेरक प्रसंग

आँख वाला अन्धा

एक अन्धा आदमी हाथ में जलता हुआ दीपक लेकर जा रहा था। दोपहर का समय था। बाजार में काफी भीड़ थी। बहुत सावधानी से चलने पर भी वह किसी दृष्टि-सम्पन्न व्यक्ति से टकरा गया। अन्धा व्यक्ति तो अपनी लाठी के सहारे खड़ा रहा, पर देखने वाला गिर पड़ा। गिरते ही वह आग-बबूला हो गया। उसने झल्लाते हुए कहा- "कैसे चलते हो? अन्धे हो क्या?" अन्धा आदमी बोला - "आप ठीक कहते हैं। मैं वास्तव में अन्धा हूँ।"

"अन्धे हो तो, हाथ में यह जलता हुआ दीपक क्यों ले रखा है?" देखने वाले व्यक्ति ने गुस्से में कहा तो वह शान्त भाव से बोला- "महाशय ! यह दीपक आप जैसे अन्धों के लिए है।" आँखें होने पर भी जो व्यक्ति देखकर नहीं चलता, उसे क्या कहा जाये? ज्ञानी होने पर भी जो बुराई करे, उसे कैसे समझाया जाये?

अणुव्रत बना सुरक्षा कवच

■ साध्वी यशोधरा ■

हम साध्वियां ई. सन् 1983 में कोलकाता से पदयात्रा करती हुई बिहार प्रांत में प्रविष्ट हुईं। एक छोटा-सा गाँव, एक युवक दूर से ही हमें देखकर दौड़ता हुआ आया। नमस्कार करते हुए कहा - "साध्वीश्री! आपने मुझे जीवनदान दे दिया।"

मैं असमंजस में पड़ गयी। मैंने विस्मय भरे शब्दों में कहा - "भाई! कैसी बात कर रहे हो? मैं कौन होती हूँ जीवनदान देने वाली?"

युवक ने रहस्य उद्घाटित करते हुए कहा - "आप गाँव-गाँव पदयात्रा करती हुई अपने काफिले के साथ कोलकाता चतुर्मास के लिए जा रही थीं। उस समय हमारे स्कूल में विद्यार्थियों को उद्बोधन देने पधारी थीं। आपने हमें विद्यार्थी अणुव्रत की प्रतिज्ञा करायी। उनमें एक नियम था-'मैं भावावेश में आकर आत्महत्या नहीं करूँगा।' नियति का योग, मैं एक बार परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया। मैंने सोचा-अब माता-पिता को मुँह कैसे दिखाऊँगा? ऐसे जीने से तो मरना ही अच्छा है। मैं सीधा मरने के लिए पटरी पर चला गया। सामने से ट्रेन आ रही थी। ज्योंही पटरी पर सोने के लिए तैयार हुआ कि आप द्वारा दिलायी गयी प्रतिज्ञा स्मृति पटल पर बिजली की तरह कौंध गयी। आपने यह भी हिदायत दी थी कि 'प्राण जाये पर प्रण नहीं जाये' नियम को नहीं तोड़ना है। मैं तत्काल संभल गया। नियम को निष्ठा से अटल निभाऊँगा- साहस कर घर पहुँच गया। उस नियमपालन का ही पुण्य प्रसाद है। मेरा घर बस गया। आज मैं आनंद से सराबोर जिंदगी जी रहा हूँ। आपको दूर से देखते ही कृतज्ञता के भाव उभर आये। मैं सही सलामत आपके दर्शन कर धन्य हो गया हूँ। कृतार्थ हो गया हूँ।"

आचार्य महाप्रज्ञ

अणुव्रत का शिक्षा दर्शन

जीवन के निर्माण का और जीवन की दिशा को बदलने का एक सशक्त माध्यम है - शिक्षा। अणुव्रत का शिक्षा दर्शन है - जीवन विज्ञान, जिसकी कल्पना है - संतुलित विकास। पदार्थ और चेतना दोनों का संतुलित विकास, जिससे मानसिक शांति बनी रहे, आदमी अपराधी न बने, हत्यारा न बने और पदार्थ के प्रति इतना आसक्त न बने कि हजारों को भूखों मारकर अकेला ही सब कुछ डकार जाये।

जीवन के निर्माण का और जीवन की दिशा को बदलने का एक सशक्त माध्यम है – शिक्षा। अणुव्रत का शिक्षा दर्शन है – जीवन विज्ञान, जिसकी कल्पना है – संतुलित विकास। विकास का प्रतिरोधी दृष्टिकोण नहीं। विकास को रोकना नहीं है किन्तु संतुलित विकास। कोरा पदार्थ का विकास हो और चेतना कुंठित होती चली जाये, वह विकास मानव के लिए हितकर नहीं है। वह विकास मानव को राहु बनकर ग्रस लेगा। विकास वह है जहां पदार्थ के विकास के साथ-साथ पदार्थ का प्रयोग करने वाली चेतना का भी विकास होता रहे। पदार्थ और चेतना दोनों का संतुलित विकास, जिससे मानसिक शांति बनी रहे, आदमी अपराधी न बने, हत्यारा न बने और पदार्थ के प्रति इतना आसक्त न बने कि हजारों को भूखों मारकर अकेला ही सब कुछ डकार जाये। इस संतुलित विकास की शिक्षा के पाँच फलित हैं। फलित के आधार पर हम उसकी दृष्टि को समझ पाएंगे।

कर्मजा शक्ति का विकास

शिक्षा का पहला फलित है – कर्मजा शक्ति का विकास। वह शिक्षा अच्छी शिक्षा नहीं कही जा सकती जिसमें कर्मजा शक्ति कुंठित हो जाये, काम करने की शक्ति शून्य हो जाये।

सृजनात्मक शक्ति का विकास

शिक्षा का दूसरा फलित है – सृजनात्मक शक्ति का विकास। जिस शिक्षा से हमारी सृजनात्मक शक्ति न बढ़े, रचनात्मक शक्ति का विकास न हो वह अधूरी शिक्षा होगी। केवल गणित का, आंकड़ों का भार लादने वाली शिक्षा होगी।

संवेग-संतुलन

शिक्षा का तीसरा फलित है – संवेग-संतुलन। कर्मजा शक्ति भी है, सृजनात्मक शक्ति का भी विकास है, पर अपने संवेगों पर, कषायों पर, इमोशन्स पर नियंत्रण नहीं है तो आत्मघाती प्रयत्न होता है। ये जितने द्वंद्व, लड़ाइयां, झगड़े हैं, सबका कारण है – अपने संवेगों पर संतुलन का न होना। असंतुलित संवेग समाज में हमेशा विग्रह पैदा करते हैं, लड़ाइयां पैदा करते हैं।

संवेदनशीलता की चेतना का जागरण

शिक्षा का चौथा फलित है – संवेदनशीलता की चेतना का जागरण। जहां संवेदनशीलता नहीं है, समाज अच्छा नहीं रह सकता। करुणा है, संवेदनशीलता है, एक आदमी दूसरे आदमी की पीड़ा को समझता है, दर्द का अनुभव करता है, व्यथा को

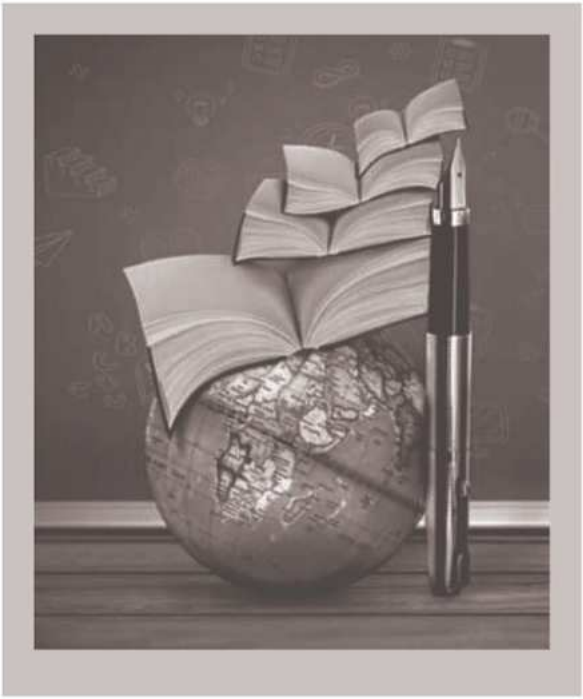

जानता है। जहां इतनी संवेदना है, वहां स्वस्थ समाज की कल्पना की जा सकती है।

विवेक चेतना का जागरण

शिक्षा का पाँचवां फलित है – विवेक चेतना का जागरण। जहां हित और अहित का विवेक है, भक्ष्य और अभक्ष्य का विवेक है, कर्तव्य और अकर्तव्य का विवेक है यानी विश्लेषण की, विवेक की इतनी चेतना है कि सबको एक समान कभी नहीं समझता।

हित क्या है और अहित क्या है? हेय क्या है और उपादेय क्या है? हमारी यह चेतना जाग्रत हो जाये, इसका नाम है – संतुलित शिक्षा। यदि कोरा बुद्धि का जागरण हो गया, यांत्रिक चेतना जाग गयी – इफिशिएंसी बढ़ गयी, तो वह एकांगी शिक्षा है। इस एकांगी शिक्षा ने ही आज बहुत सारी समस्याएं पैदा की हैं। बहुत चिंतन के बाद अणुव्रत की पार्श्वभूमि में जीवन विज्ञान का विकास हुआ और अणुव्रत की वह शिक्षा-दृष्टि बन गयी – वह संतुलित शिक्षा या शिक्षा का समग्र दृष्टिकोण है, जिससे हमारी समग्र चेतना का विकास हो।

अणुव्रत प्रचेता : त्रिवर्गीय समूह

अणुव्रत प्रचेता शिविर में एक दिन अणुव्रत प्रचेताओं की गोष्ठी थी। पूर्व कुलपति मोहनसिंहजी भंडारी ने भी एक बात रखी – "एक अणुव्रती का कार्य स्पष्ट होना चाहिए। अणुव्रत समिति एक व्यवस्था करने वाली समिति है। अणुव्रती का दायित्व और कर्तव्य क्या है? इसका दिशा-निर्देश जरूरी है।"

प्रोफेसर मुसाफिर सिंह ने कहा – "आप शाश्वत मूल्यों की चर्चा कर रहे हैं। जो स्थायी हैं उनकी चर्चा हो रही है, पर पश्चिमी जगत में नयी दृष्टि, नयी खोज, नया चिन्तन, नया विकास है। यहां ऐसा कुछ नहीं है, जो है वह शाश्वत है – हम नया क्या कर पाएंगे? क्या हमारे समाज में यह स्थायित्व नहीं आ गया है? एक परम्परा रूढ़ नहीं हो गयी है?"

मैंने सोचा - शिक्षा दर्शन के साथ उसकी भी एक चर्चा होनी चाहिए। अणुव्रत प्रचेता का क्या संकल्प होना चाहिए? क्या कर्म और क्या गतिविधि होनी चाहिए? वह किसके साथ जुड़ा रहे और यह अनुभव करे कि मुझे कुछ करना है। इसकी एक कल्पना की गयी। उस कल्पना को बहुत चिन्तन के बाद आकार देना संभव हुआ। कल्पना के स्वरूप को मैं प्रस्तुत करूं तो वह यह है – अब अणुव्रत के एक समूह का निर्माण होना चाहिए और वह त्रिवर्गीय समूह रहे। उस समूह के तीन वर्ग हों – प्रथम वैज्ञानिक वर्ग, दूसरा प्रयोक्ता वर्ग – प्रयोग करने वाला और तीसरा प्रतिरोधी वर्ग।

हमें अहिंसक समाज की बात करनी है, स्वस्थ समाज की बात करनी है और आज विज्ञान के साथ चलना है, रूढ़ नहीं बनना है। हमारी जो रचनात्मक शक्ति है उसका उपयोग करना है, नयी बात खोजनी है। मैं समझता हूँ कि यह त्रिवर्गात्मक समूह इन सबकी पूर्ति करने वाला हो सकता है।

वैज्ञानिक वर्ग का काम

वैज्ञानिक वर्ग का काम है सत्य की खोज करना। एक दल ऐसा हो, जो निरन्तर खोज में लगा रहे। मुख्यतः चेतना के रहस्यों की खोज क्योंकि अणुव्रत का संबंध चेतना के परिवर्तन के साथ ज्यादा है। कैसे परिवर्तन किया जा सकता है? परिवर्तन कैसे मान्य हो सकता है? भौतिकता की बढ़ती हुई शक्ति उसे कैसे मान्य कर सकती है? चेतना के रहस्यों की खोज करना, चेतना के विकास की खोज करना और विकल्पों की खोज करना वैज्ञानिक वर्ग का कार्य होगा।

हम कहते हैं कि व्यक्तिगत स्वामित्व की सीमा हो, उपभोग की सीमा हो तो क्या उनको रूखा जीवन जीने की बात कहें? बिल्कुल नहीं। ऐसे विकल्पों की खोज करना कि एक व्यक्ति दिन में हजार रुपये का उपभोग कर जिस तृप्ति और आनंद का अनुभव नहीं कर सकता, वह पचास रुपये में कर सकता है। इस प्रकार की खोज करना कि खाने में कौन-सा अच्छा विकल्प है? पहनने में कौन-सा अच्छा विकल्प है? दिनचर्या का कौन-सा अच्छा विकल्प है? जब तक अच्छे विकल्प प्रस्तुत न किये जाएं, कोई आदमी बदल नहीं सकता, बदलता नहीं है।

छोटे बच्चे मिट्टी खाते हैं, तब मिट्टी खाना छुड़ाना बड़ा मुश्किल होता है। माँ पकड़ कर लाती है घर के भीतर। बच्चा वापस गली में जाकर मिट्टी खाना शुरू कर देता है। जबर्दस्ती तो रोका नहीं जा सकता। कितनी बार पकड़ कर लाये। आखिर उसको वंशलोचन खिलाना शुरू किया। विकल्प आ गया, मिट्टी खाना छूट गया। सन् 1997 में ब्रिटेन में सर्वे हुआ कि आज कितने लोग मांसाहार को छोड़ रहे हैं। उससे दो वर्ष पूर्व ब्रिटेन के खाद्य

हित क्या है और अहित क्या है? हेय क्या है और उपादेय क्या है? हमारी यह चेतना जाग्रत हो जाये, इसका नाम है - संतुलित शिक्षा। यदि कोरा बुद्धि का जागरण हो गया, यांत्रिक चेतना जाग गयी - इफिशिएंसी बढ़ गयी, तो वह एकांगी शिक्षा है। इस एकांगी शिक्षा ने ही आज बहुत सारी समस्याएं पैदा की हैं। वहीं जीवन विज्ञान संतुलित शिक्षा या शिक्षा का समग्र दृष्टिकोण है, जिससे हमारी समग्र चेतना का विकास हो।

मंत्री ने एक वक्तव्य दिया था कि ये शाकाहारी क्या खाते हैं? घास-फूस खाते हैं? इनका कोई खाना है क्या? उसी ब्रिटेन में आज शाकाहार बढ़ता जा रहा है और शाकाहारी होटलों में भीड़ लगी रहती है। इसका कारण है एक विकल्प – शाकाहारी भोजन तो मांस से भी स्वादिष्ट भोजन है। आप विकल्प अच्छा न दें तब तक आपकी बात मान्य नहीं होगी।

विकल्पों की खोज करते रहना, निरन्तर उसमें लगे रहना, अच्छा विकल्प हम दे सकें – यह आवश्यकता है इस वैज्ञानिक वर्ग की। एक ऐसा दल हो अणुव्रत समाज का, अणुव्रत समूह के पाँच- दस व्यक्ति इसी में लगे रहें, विकल्पों को खोजते रहें और वैज्ञानिक परीक्षण करते रहें तथा समाज के सामने प्रस्तुत करते रहें। मैं मानता हूँ कि एक नयी दिशा और समाज-रचना की एक बड़ी अपेक्षा की पूर्ति होगी।

प्रयोक्ता वर्ग का काम

दूसरा है प्रयोक्ता वर्ग, प्रयोग करने वाला। सौ, दो सौ या पाँच सौ व्यक्ति ऐसे मिलें, जो उन विकल्पों का प्रयोग करें। प्रयोग करके समाज के सामने प्रस्तुत करें। बहुत अपेक्षा है प्रयोग करने वालों की। अगर प्रयोग न हो तो कोरी सत्य बात भी अधूरी रह जाती है। जहां तक इसका आध्यात्मिक प्रश्न है, इसका प्रयोक्ता है प्रेक्षाध्यान में भाग लेने वाला व्यक्ति। जैसे मैंने विकल्प की बात कही, अनुभव है मेरा। बहुत वर्ष पहले शिविर में मारवाड़ के लोग आये, बोले - "शिविर में तो आना चाहते हैं पर बिना मिर्ची की सब्जी खायी नहीं जाती।" जब शिविर में आये, रहे और वह भोजन किया तो कहा – "अरे! यह तो बड़ा अच्छा है। इसे तो खाया जा सकता है।" एक प्रयोग करने वाला वर्ग हो, जो हर सत्य का परीक्षण, प्रयोग करे तथा उसका परिणाम जनता के सामने प्रस्तुत करे।

प्रतिरोधी वर्ग का काम

तीसरा है प्रतिरोधी वर्ग, जिनमें अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति है, जुझारूपन है। युद्ध को महावीर ने बहुत खराब बताया। युद्ध पर जितना प्रहार महावीर ने किया, उतना शायद किसी ने नहीं किया। किन्तु दूसरी ओर महावीर ने कहा – "जुद्धारिहं खलु दुल्लहं - युद्ध का अवसर दुर्लभ है। तुम्हें मिल गया है तो खूब लड़ो।"

बड़ी विचित्र बात है – अहिंसा की लड़ाई तो लड़ो, हिंसक लड़ाई मत लड़ो। यह क्षमता भी सबमें नहीं होती। अप्पणा जुज्झाहि – अपने आप से लड़ो। जहां भी लगे कि यह गलत काम हो रहा है, वहां अहिंसा की लड़ाई लड़ो, प्रतिरोध करना सीखो। एक वर्ग वह हो, जिसमें सत्याग्रह की क्षमता हो।

आप यह न मानें कि सत्याग्रह कोई गांधी का चलाया हुआ है। उन्होंने इसका प्रयोग किया था। इतिहास में सत्याग्रह का पहला प्रयोग किसने किया? हमारी जानकारी के अनुसार सुदर्शन ने सत्याग्रह का पहला प्रयोग किया। इतना सत्य पर अड़ा रहा कि मारे तो मारे, पर मैं तो जाऊँगा ही। पिता ने रोका, माँ ने रोका, कहा – "अर्जुन माली सबकी हत्या कर रहा है, तुम मत जाओ।"

सुदर्शन बोला - "कैसे हो सकता है कि महावीर आये और मैं न जाऊं। मैं तो जाऊँगा।" माता-पिता को आज्ञा देनी पड़ी। सुदर्शन गया और ऐसा प्रतिरोध किया कि अर्जुन माली को बदल दिया। पुराना शब्द है – अभिग्रह और गांधी का शब्द है – सत्याग्रह। दोनों का तात्पर्य एक ही है। अभिग्रह करने की जैन लोगों में बहुत परम्परा है। आज भी करते हैं।

हमारी साध्वियों ने विचित्र अभिग्रह किये हैं, श्रावकों ने किये हैं। अभिग्रह करना यानी एक संकल्प ले लेना – जब तक यह बात पूरी नहीं होती तब तक मैं भोजन भी नहीं करूँगा, पानी भी नहीं पीऊँगा। इतना कठोर संकल्प। यह है हमारी संघर्षात्मक वृत्ति, प्रतिरोधात्मक वृत्ति।

जिस समूह के साथ ये तीन शक्तियां होती हैं – सत्य की खोज करने की शक्ति, प्रयोग करने की शक्ति और प्रतिरोध करने की शक्ति – उसे कहीं रुकने की जरूरत नहीं है। उसके सामने विकास का दरवाजा खुला रहता है। अणुव्रत शिक्षा दर्शन इस त्रि-समूह की संक्षिप्त चर्चा है। प्रस्तुत संदर्भ में विचार मंथन की बहुत बड़ी अपेक्षा रहेगी।

आचार्य महाश्रमण

ज्ञान और आचार

आदमी के जीवन में ज्ञान और सदाचार का योग होना चाहिए। बालक-बालिकाओं को विद्यालयों में विभिन्न विषयों और भाषाओं का ज्ञान कराया जाता है। उसके साथ-साथ जीवन के बारे में, अध्यात्म के बारे में भी ज्ञान दिया जाये और वे तदनुसार आचरण करें तो जीवन में परिपूर्णता आ सकती है। सही ज्ञान तो हो, किन्तु आचार वैसा न हो अथवा आचार कुछ हो, किन्तु ज्ञान ठीक न हो तो जीवन में अधूरापन रहता है।

जैन वाङ्मय में सुन्दर कहा गया – पढमं नाणं तओ दया – आदमी को पहले ज्ञान करना चाहिए। फिर सही ज्ञान के अनुसार आचरण करना चाहिए। यदि ज्ञान ठीक नहीं है तो आचरण भी ठीक होना मुश्किल है। आदमी के जीवन में ज्ञान और सदाचार का योग होना चाहिए। बालक-बालिकाओं को विद्यालयों में विभिन्न विषयों और भाषाओं का ज्ञान कराया जाता है। उसके साथ-साथ जीवन के बारे में, अध्यात्म के बारे में भी ज्ञान दिया जाये और वे तदनुसार आचरण करें तो जीवन में परिपूर्णता आ सकती है। सही ज्ञान तो हो, किन्तु आचार वैसा न हो अथवा आचार कुछ हो, किन्तु ज्ञान ठीक न हो तो जीवन में अधूरापन रहता है।

एक जंगल में दो व्यक्ति थे – एक लंगड़ा और एक अंधा। अचानक जंगल में आग लग गयी। लंगड़े व्यक्ति को यह दिखायी तो दे रहा था कि आग सामने से आ रही है, परन्तु वह चलने में अक्षम था। अंधा व्यक्ति चलने में तो सक्षम था, किन्तु उसे दिखायी नहीं दे रहा था कि आग किधर से आ रही है और किधर जाना चाहिए? दोनों के लिए समस्या थी। दोनों ने आपस में बात की। लंगड़े व्यक्ति ने कहा – "भाई प्रज्ञाचक्षु! मैं चल नहीं सकता और तुम देख नहीं सकते। हम दोनों के साथ समस्या है। तुम मुझे अपने कन्धे पर बिठा लो। मैं तुम्हें रास्ता बताता रहूँगा। तुम चलते रहना। इस प्रकार हम इस जंगल से पार हो जाएंगे।" लंगड़ा और अंधा-दोनों अपने-आपमें अधूरे थे। दोनों आपस में मिल गये तो परिपूर्णता आ गयी। दोनों का बचाव हो गया। आदमी के जीवन में भी ज्ञान और आचार का सम्यक् योग हो और उसका प्रभाव बच्चों पर भी पड़े।

यदि प्रारम्भ से ही बच्चों को माता-पिता, अभिभावक और शिक्षक वर्ग द्वारा अच्छी सीख दी जाये तो विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आ सकते हैं। कभी कड़ाई तो कभी नरमाई, जो उपयुक्त हो, वैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। बच्चे का लाड़-प्यार भी रखा जाता है तो कभी ताड़ना भी काम की होती है। संस्कृत साहित्य में नीति श्लोक में कहा गया –

लालयेत् पंचवर्षाणि, दशवर्षाणि ताड़येत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रमिवाचरेत्।।

पाँच वर्ष तक के बच्चे को लाड़-प्यार करना चाहिए। पाँच वर्ष के बाद लड़का बड़ा हो जाता है। फिर कभी-कभी गलती पर उपालम्भ भी देना चाहिए। उसे कभी डांटना भी चाहिए। जब लड़का सोलह वर्ष का हो जाये तब पिता को उसके साथ मित्रता का व्यवहार करना चाहिए। उससे परामर्श लेकर काम करना चाहिए। नीतिशास्त्र में लाड़-प्यार को ठीक माना गया तो तर्जना को भी आवश्यक माना गया। लक्ष्य एक ही है कि बच्चों में संस्कार अच्छे रहें। अध्यापक-वर्ग, अभिभावक आदि ध्यान रखें कि बच्चों में नशे की वृत्ति न पनप जाये। उनमें झूठ बोलने की आदत न पड़ जाये, चोरी की वृत्ति न आ जाये। इतना ही नहीं, माता-पिता, अभिभावक, शिक्षक वर्ग स्वयं अपने व्यवहार से,

अपनी वाणी से, अपनी जीवनशैली से बच्चों को संस्कार दें तो एक अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है।

अनैतिकता और अनाचार के द्वारा जो पैसा कमाया जाता है, उस पैसे की महत्ता नहीं होती। संस्कृत साहित्य में कहा गया –

वरं विभववन्ध्यता सुजनभावभाजांनृणा -
मसाधुचरितार्जिता न पुनरुर्जिताः संपदः।
कृशत्वमपि शोभते सहजमायतौ सुन्दरं
विपाकविरसा न तु श्वयथुसंभवा स्थूलता।।

धन का कम होना कोई खास बात नहीं है, किन्तु जीवन में सज्जनता का होना विशेष बात है। धन ज्यादा हो और सज्जनता न हो तो धन का अधिक होना बेकार है। उदाहरणार्थ-आदमी पतला हो तो कोई बुरी बात नहीं है, किन्तु सूजन से आया हुआ मोटापा ठीक नहीं है।

एक छात्र ने अध्यापक से पूछा – "सर! मैं मोटा होना चाहता हूँ, क्या करना चाहिए?" अध्यापक महोदय भी मूड में थे। उन्होंने कहा – "वत्स! मधुमक्खी के छत्ते को छेड़ो। मक्खियां काटेंगी, सूजन आ जाएगी और तुम मोटे बन जाओगे।"

जैसे आदमी का पतला होना कोई खास बात नहीं है, वैसे ही धन का कम होना कोई खास बात नहीं है। जैसे सूजन से आया हुआ मोटापा ठीक नहीं होता, वैसे ही अनैतिकता से कमाया हुआ धन काम का नहीं होता। इसलिए विद्यार्थियों को प्रारम्भ से ही नैतिकता और सदाचार के संस्कार दिये जाएं। नैतिकता के संदर्भ में किसी कवि ने ठीक कहा है –

तुम पुण्य कार्य मत करो, किन्तु करो मत पाप,
पुण्य के फल को पा लोगे। मत रटो राम का नाम भले ही,
किन्तु करो शुभ काम, राम के बल को पा लोगे।

जो व्यक्ति एक तरफ तो दान-पुण्य करता है और दूसरी तरफ भ्रष्टाचार करता है। उसे कहा गया है कि तुम भले ही दान-पुण्य आदि मत करो, किन्तु भ्रष्टाचार मत करो, बेईमानी मत करो। यही तुम्हारा पुण्य कार्य मान लिया जाएगा। जो व्यक्ति राम-नाम का जप करता है और साथ में गलत काम करता है, उस व्यक्ति को कहा गया कि तुम भले ही राम-नाम का जप मत करो, किन्तु अच्छे काम करो तो तुम्हें राम की शक्ति प्राप्त हो सकती है। आदमी अपने आचरण की ओर ध्यान दे। उसकी जीवन-बगिया सदाचार के सुमनों से सुरभित बनी रहे और उसके निकट आने वाले व्यक्ति को भी सुगन्ध प्राप्त होती रहे। संस्कृत साहित्य में कहा गया –

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्, वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतो हतः।।

दो शब्द हैं-वृत्त और वित्त। वृत्त का अर्थ है चरित्र और वित्त का अर्थ है धन। आदमी अपने चरित्र की रक्षा करे। धन तो आता है और चला जाता है। जिसके पास धन नहीं है, वह व्यक्ति क्षीण नहीं होता, किन्तु जिसका चरित्र नष्ट हो गया तो समझना चाहिए कि वह आदमी एक प्रकार से मर गया। इसलिए आदमी को चरित्र-रक्षा का प्रयास करना चाहिए। अनीति के पथ पर चलने वाला व्यक्ति जीवन में सफल नहीं होता।

एक व्यक्ति के पास गधा था। वह उस पर सामान ढोता था। यदा-कदा वह उस पर नमक की बोरी रखा करता था। रास्ते में एक खाई आती थी। एक दिन वह गधा खाई को पार कर रहा था कि अचानक उस खाई में गिर गया। खाई में पानी था। पानी में नमक बह गया। जब वह वापस उठा तो बहुत हल्कापन महसूस कर रहा था। गधे ने सोचा, यह तरीका अच्छा है, गिरने से भार हल्का हो जाता है। उस दिन भी उस पर नमक की बोरी रखी हुई थी। जैसे ही वह खाई आयी, गधा जान-बूझ कर उसमें गिर गया। नमक पानी में बह गया और भार हल्का हो गया। जब दो-तीन बार उसने वैसा ही किया तो मालिक समझ गया कि गधे की नीयत खराब हो गयी है। एक दिन मालिक ने उस पर रुई की बोरी रखी। गधा तो आखिर गधा था, नादान था। जैसे ही खाई आयी, वह उसमें गिर गया। पानी रुई में समा गया। इस बार जब वह उठा तो और ज्यादा भारी हो गया। अब तो उसके लिए चलना भी मुश्किल हो रहा था। मालिक ने भी उसको खूब पीटा। अब गधे को अक्ल आ गयी कि भविष्य में ऐसा काम नहीं करूँगा। जो अनीति करता है वह जल्दी पकड़ में आये अथवा न आये, किन्तु जब पकड़ में आता है, उसका फल बहुत खराब मिलता है। इसलिए आदमी यह लक्ष्य बनाये कि मुझे अपने जीवन में बुराइयों से बचने का और अच्छाइयों को स्वीकार करने का प्रयास करना है। दुर्गुणों का वर्जन और सद्गुणों का अर्जन व्यक्ति को विकास की ओर ले जाने वाला होता है। ■■■

मानस रंजन महापात्र

बाल साहित्य नैतिकता और आनंद

बच्चों को उनके जीवन में सबसे पहले परोसे जाने वाले साहित्य में आनंद होना चाहिए। उन पुस्तकों को पढ़कर बच्चों के चेहरे पर मुस्कुराहट आनी चाहिए, बल्कि उन पुस्तकों को पढ़कर ठहाका लगना चाहिए। ...और तो और, बच्चों को आनंदमयी साहित्य को पढ़कर मस्ती करना आना चाहिए।

साहित्य अगर समाज का दर्पण है तो बाल साहित्य बालमन का विस्तृत विश्लेषण है। यूं कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी कि साहित्य की शैशवावस्था बाल साहित्य ही है।

साहित्य का जन्म बच्चों के साथ की गयी बतकही से ही हुआ है। बतकही यानी छोटे-छोटे जुमले, छोटे-छोटे रुचिकर वाक्य, छोटे-छोटे बाल गीत और छोटी-छोटी कहानियों से ही बच्चों का परिचय सबसे पहले होता है। यदि उसे बचपन में इस बतकही का रुचिकर वातावरण मिलता है तो आगे चलकर वह साहित्य में रुचि लेता है। प्राचीन काल में यह बतकही ही थी जो आगे चलकर लोककथाओं में प्रचलित हुई। जब छपाई का युग आया, तब ये कथाएँ लिपिबद्ध होकर पुस्तकों के रूप में हमारे सामने आयीं।

अब बाल साहित्य का स्वरूप कैसा हो, यह एक बाल साहित्यकार के लिए गम्भीर विषय है। क्या बच्चों को केवल नैतिक साहित्य पढ़ाया जाये या उन्हें केवल आनंद देने वाला साहित्य दिया जाये। सच बात तो यह है कि बच्चों को उनके जीवन में सबसे पहले परोसे जाने वाले साहित्य में आनंद होना चाहिए। बच्चा जब साहित्य से रूबरू होता है, जब उसके सामने पुस्तकें आती हैं, तो उन पुस्तकों में आनंद होना चाहिए, उन पुस्तकों को पढ़कर बच्चों के चेहरे पर मुस्कुराहट आनी चाहिए, बल्कि उन पुस्तकों को पढ़कर ठहका लगाना चाहिए। ...और तो और, बच्चों को आनंदमयी साहित्य को पढ़कर मस्ती करना आना चाहिए।

अब हमारे मन में यह प्रश्न उठता है कि आनंद वाला साहित्य बच्चों के सामने रखेंगे तो वे भला क्या सीखेंगे। सीखने की तो यही उम्र होती है न, यही उम्र निकल गयी तो...। बच्चों की इस उम्र में हमारा दायित्व है कि हमारे प्रयासों से बच्चे शब्द की तरफ आकर्षित हों, पढ़ने की तरफ आकर्षित हों और अन्ततः पुस्तकों की तरफ आकर्षित हों। जब पुस्तकों के प्रति यह आकर्षण स्थायी हो जाएगा तो बच्चे अन्य जानकारी के लिए भी लालायित रहेंगे। ज्ञान भरे साहित्य में भी उन्हें रस आने लगेगा। उनके मन में नैतिक साहित्य के प्रति भी आकर्षण होगा।

यदि हम उनके साहित्य की शुरुआत भारी-भरकम नैतिक कहानियों से करेंगे तो वे शब्दों से दूर भागेंगे। पढ़ने को मात्र ज्ञान की बातें मानेंगे जो अक्सर उनके सिर के ऊपर से निकल जाती है और वे पुस्तकों को नीरस मानते हुए उनसे दूर भागेंगे। जो बच्चा शब्दों से परिचित नहीं होगा, जो शब्दों को अपना दोस्त नहीं मानेगा वह आगे चलाकर गंभीर विषयों पर कैसे मनन करेगा। हाँ! आनंद की अनभूति देने वाले साहित्य के बीच नैतिकता की कुछ

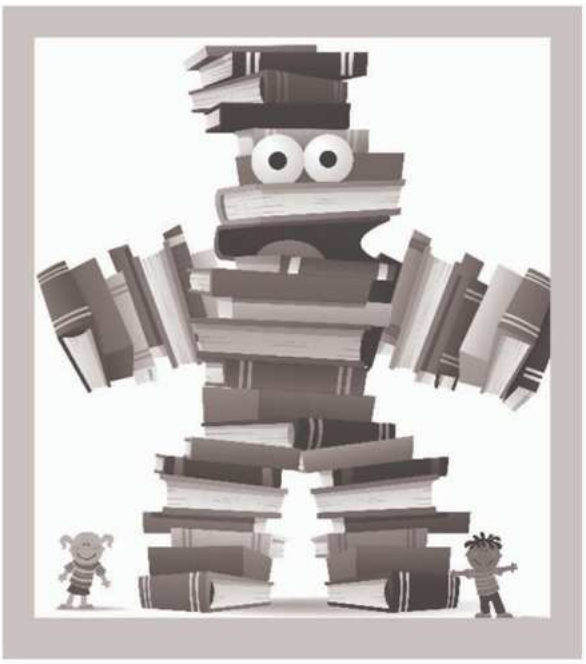

बातें बच्चों के बीच धीरे से सरका देना हम बाल साहित्यकारों की चतुराई कही जा सकती है। मजे-मजे में कहानी कहते हुए उसे जीवन मूल्यों का ज्ञान देने की समझदारी भी कही जा सकती है।

इस समाज में, इस भारत देश में, फिर विभिन्न देशों में और पूरी दुनिया में ज्ञान का अपार भण्डार भरा हुआ है और बढ़ते बच्चों को हमें इस ज्ञान के भंडार के नजदीक लाना है। इसलिए बाल साहित्य आनंद देने के साथ नैतिकता का समावेश लिए भी होना चाहिए।

अभिभावक बच्चों को पढ़ाई के लिए तैयार करके स्कूल भेजते हैं, उनका टिफिन तैयार करने, उन्हें स्कूल से वापस लाने, उनका होमवर्क करवाने और उन्हें मीठी नींद सुलाने के दबाव में रहते हैं। उधर, विद्यालय में अध्यापक बच्चों को पाठ्यक्रम पूरा करवाने और उसका दोहराव कराने के दबाव में रहते हैं। ऐसे में बीच की कड़ी जो बच्चों को आनंद देने का प्रयास करती है, वह गायब हो जाती है। वह आनंद की कड़ी समृद्ध साहित्य द्वारा पूरी की जा सकती है। ऐसे में हम बाल साहित्यकारों का दायित्व बनता है कि हम बच्चों के लिए उच्च श्रेणी वाला और आनंद देने वाला साहित्य रचें। यानी आज से 60 साल पहले के बचपन को जो आनंद उस दौर की कहानी में आता था, वह आज के बचपन को भी उतना ही मजा दे।

पुरी में रहने वाले लेखक ओड़िया भाषा के महत्वपूर्ण कवि व साहित्यकार हैं। वे लम्बे समय तक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास नयी दिल्ली के राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र के प्रमुख रहे हैं। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

...ये भी कम नहीं !

साध्वी कल्पमाला - गंगाशहर

मानव देवता न बने, कोई गम नहीं।
मानव दानव न बने, ये भी कम नहीं।।

न जीए दूसरों के लिए, कोई गम नहीं।
जीने दे दूसरों को, ये भी कम नहीं।।

न बने सहारा किसी का, कोई गम नहीं।
तोड़े न सहारा किसी का, ये भी कम नहीं।।

किसी को आगे बढ़ा न सको, कोई गम नहीं।
बढ़ते हुए को न गिराओ, ये भी कम नहीं।।

रोए न दूसरों के लिए, कोई गम नहीं।
न रूलाये दूसरों को, ये भी कम नहीं।।

गिरे हुए को न उठाये, कोई गम नहीं।
उठे हुए को न गिराये, ये भी कम नहीं ।।

किसी की भलाई कर न सको, कोई गम नहीं।
बुराई किसी की मत करो, ये भी कम नहीं।।

दिल का दर्द न पूछ सको, तो कोई गम नहीं।
किसी का दिल न दुखाओ, ये भी कम नहीं।।

अगर मधुर वचन न बोल सको, तो कोई गम नहीं।
कटु वचन किसी को न कहो, ये भी कम नहीं।।

फूल किसी को न दे सको, तो कोई गम नहीं।
पर शूल किसी को मत देना, ये भी कम नहीं।।

किसी को जोड़ न सको, तो कोई गम नहीं।
मगर किसी को मत तोड़ो, ये भी कम नहीं।।

सहयोग किसी का न कर सको, तो कोई गम नहीं।
पर सहयोग करने वालों से न जलो, ये भी कम नहीं।।

मनुष्य भगवान न बन सके, तो कोई गम नहीं।
मनुष्य मनुष्य ही रहे, ये भी कम नहीं।।

आइवर यूशिएल

घर की पाठशाला का महत्व

शिक्षा, संस्कार, स्वाभिमान और आत्मविश्वास का पाठ पढ़ने के लिए जब बालक प्रारम्भिक शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश करता है तो उससे पहले ही वह अपने परिवार और परिवेश के हिसाब से ऐसा काफी कुछ सीख चुका होता है जो उसकी आगे की जिन्दगी को प्रभावित करने में अपनी प्रभावशाली भूमिका अदा करता है और यह सबसे महत्वपूर्ण पाठशाला होती है उसका अपना घर। यहाँ माँ की गोद में बच्चा जिंदगी के जो पाठ सबसे पहले पढ़ता है, उनकी कोई बराबरी नहीं हो सकती।

यह बात हम सब अच्छी तरह से जानते ही हैं कि हमारे जीवन में शिक्षा का कितना महत्व है। विशेषकर आज के युग में जब प्रगति के पथ पर सारा संसार तेजी से आगे बढ़ता जा रहा है, शिक्षा से विहीन रह जाने का सीधा अर्थ है पशुओं की तरह जीवन जीने की मजबूरी और ऐसी मजबूरी भला कौन स्वीकारना चाहेगा।

वैसे भी प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा के इस दौर में शिक्षा का दायरा भी अब बहुत विस्तृत और विशाल हो गया है। देश के हर कोने में शिक्षण संस्थान तेजी से विस्तार ले रहे हैं। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों तक में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। मेडिकल व इंजीनियरिंग कॉलेजों से प्रशिक्षित छात्र देश में ही नहीं, देश के बाहर भी अपनी कुशलता की पहचान बना रहे हैं। कुछ दशक पूर्व तक जहाँ जिले के बाहर जाकर अध्ययन करना एक चुनौती माना जाता था, वहीं आज उच्च शिक्षा के लिए विदेशों तक छात्रों की पहुँच कोई बहुत बड़ी बात नहीं रह गयी है।

शिक्षा के महत्व का इससे अच्छा प्रमाण और क्या हो सकता है कि महानगरों एवं स्तरीय शहरों में तो बच्चे के जन्म से पूर्व ही विद्यालय में उसके दाखिले का रजिस्ट्रेशन कराया जाने लगा है। इसी सिलसिले में मैं एक घटना का उल्लेख करना चाहूँगा जो आपको रोचक तो लगेगी ही, प्रेरणादायक भी सिद्ध होगी।

पारस पत्थर के बारे में तो सबने सुना ही होगा। लोहे को सिर्फ अपने स्पर्श से सोना बना देने के अलौकिक गुण के कारण हमारी प्राचीन कथाओं में इसका जिक्र बराबर होता रहा है। परन्तु वास्तविकता में मानव कभी इसका उपयोग नहीं कर पाया क्योंकि यह उसके मस्तिष्क की महज एक कल्पना थी, इसका कभी कोई अस्तित्व रहा ही नहीं।

लगभग दो दशक से भी पहले मेरे एक बाल पाठक ने मुझे पत्र लिख कर पूछा था कि वह पारस पत्थर प्राप्त करना चाहता है, इसके लिए उसे क्या करना होगा? मैंने जवाब में सिर्फ इतना ही लिखा कि इस बारे में मैं कुछ बता सकूं, इसके लिए उसे पहले अच्छे अंकों में उच्च शिक्षा प्राप्त करनी होगी। फिर एक लम्बे अंतराल के उपरान्त दिल्ली के एक सम्मेलन में जब एकाएक उससे मेरी मुलाकात हो गयी तो उसने उत्सुकतावश अपना वही प्रश्न फिर दोहराया जबकि तब तक वह एम. एससी., पीएच. डी. करके किसी विद्यालय में अध्यापन कार्य शुरू कर चुका था। मैंने स्पष्ट

हमें अपने देश में यदि एक स्वच्छ एवं सुन्दर समाज का निर्माण करना है तो इसके लिए प्रत्येक परिवार को अपनी नयी पीढ़ी के सुनहले भविष्य के लिए अपने-अपने घरों में ऐसे गुणों से युक्त वातावरण का निर्माण करना होगा जिन विशेषताओं की वे अपने बच्चों में अपेक्षा करते हैं।

किया कि पारस तो वह पहले ही प्राप्त कर चुका है क्योंकि सच्ची शिक्षा से बेहतर कहीं कोई पारस नहीं। यही एकमात्र ऐसा साधन है जिससे अपने धर्म यानी कर्तव्य के प्रति जागरुकता पैदा होती है, अर्थ यानी धन अर्जित करने का जरिया प्राप्त होता है, कामनाओं की पूर्ति में मदद मिलती है और इसके सहारे जीवन सन्तोष और सम्मान से व्यतीत किया जा सकता है। यह शिक्षा ही तो है जिससे समझ पैदा होती है, समझ से सही फैसले लेने में मदद मिलती है और जीवन में लिये गये सही फैसले ही मनुष्य के प्रगति के मार्ग पर सफलता के साथ आगे बढ़ने में सहायक होते हैं।

वास्तव में शिक्षा किसी पारस मणि से कम चमत्कारी नहीं। यह जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही उपयोगी भी। इसे न तो कोई छीन सकता है और न ही इसे चुराया जा सकता है बल्कि यह ऐसी अनोखी सम्पदा है जिसे जितना बाँटा जाता है, उतनी ही अधिक बढ़ती जाती है।

आम तौर पर शिक्षा का सीधा संबंध विद्यालयों से जोड़ा जाता है और अपनी पारम्परिक सोच व सामाजिक विचारधारा के अनुसार पिछले लम्बे समय से शिक्षा प्राप्ति के लिए विद्यालय जाना एक आवश्यक शर्त-सी बन चुकी है। इन विद्यालयों का स्तर धीरे-धीरे प्राप्त की जाने वाली शिक्षा के बढ़ते स्तर के साथ ही ऊँचा उठता जाता है और इस तरह शिक्षा के विभिन्न स्तरीय पाठ पढ़ते हुए छात्र विद्यालय से महाविद्यालय और फिर विश्वविद्यालय तक पहुँच कर अपना लक्ष्य प्राप्त करते हैं। वैसे विद्यालय चाहे किसी भी तरह के हों, किसी भी स्तर के हों परन्तु वहाँ छात्रों को पढ़ाये जाने वाले पाठ ही वास्तव में उनकी शिक्षा का आधार बनते हैं। शायद यही कारण रहा कि हमारे समाज में पाठ शब्द इतना महत्वपूर्ण होकर उभरा कि शाला के साथ जुड़कर पाठशाला के रूप में यह प्रारम्भिक शिक्षा का एक तरह से पर्याय ही बन गया। साथ ही इस धारणा ने पाठशाला को और अधिक महत्व दिलाया जिसके अन्तर्गत यह मान लिया गया कि बालक के अंदर शिक्षा, ज्ञान व संस्कार ढालने की शुरुआत इन्हीं पाठशालाओं से होती है जबकि असलियत इससे कहीं अलग है जिसे प्रायः नजरअंदाज कर दिया जाता है।

वास्तविक स्थिति तो यह है कि शिक्षा, संस्कार, स्वाभिमान और आत्मविश्वास का पाठ पढ़ने के लिए जब बालक प्रारम्भिक शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश करता है तो उससे पहले ही वह अपने परिवार और परिवेश के हिसाब से ऐसा काफी कुछ सीख चुका होता है जो उसकी आगे की जिन्दगी को प्रभावित करने में अपनी प्रभावशाली भूमिका अदा करता है और यह सबसे महत्वपूर्ण पाठशाला होती है उसका अपना घर। यहाँ माँ की गोद में बच्चा जिंदगी के जो पाठ सबसे पहले पढ़ता है, उनकी कोई बराबरी नहीं हो सकती।

घर की पाठशाला इतनी महत्वपूर्ण क्यों है और माँ की गोद में सीखे हुए शुरुआती पाठ आगे की पूरी जिन्दगी को कैसे प्रभावित कर देते हैं, यह जानना भी कम रोचक नहीं। जन्म लेने के बाद हर नवजात शिशु के लिए उसके आसपास की सारी दुनिया एक अजूबे की तरह होती है जिसकी प्रत्येक वस्तु से परिचित होने की जिज्ञासा उसमें जन्मजात समायी रहती है। बिस्तर पर लेटे रहने की तुलना में परिजनों-परिचितों की गोद शिशु को ज्यादा लुभाती है और बाहर घूमने की चाहत तो इतनी होती है कि इसके लिए प्रायः परिचित-अपरिचित का दायरा भी उसके लिए मायने नहीं रखता।

इस सबके पीछे वास्तव में एक मनोविज्ञान कार्य कर रहा होता है और वह यह कि जिस संसार में आगे लम्बे समय तक शिशु को जीवन बिताना होता है, उसके प्रत्येक अंश के साथ वह जल्दी से जल्दी परिचय प्राप्त कर लेना चाहता है। सब कुछ उसके लिए यहाँ नया ही होता है - शक्लें, ध्वनियाँ, वस्तुएँ परन्तु उसे शिशु अधिक समय तक नया नहीं रहने देना चाहता। जो कुछ उसके आसपास है, जो कुछ उसे अपने चारों तरफ नजर आ रहा होता है, वह क्या है, क्या कहलाता है, इसे सीखने-जानने की उसे बेताबी रहती है और ऐसे में उसकी माँ उसकी सबसे बड़ी शिक्षक सिद्ध होती है।

यही समय होता है जब शिशु अपने सूक्ष्म निरीक्षण और अवलोकन से आचरण, उच्चारण और अभिव्यक्ति के तमाम

वचपन में जो कुछ याद किया जाता है, उसे सारी उम्र व्यक्ति भूल नहीं पाता और इसीलिए यह समय शिशु को संस्कारपूर्ण सारी बातों को सिखाने के लिए पूरी तरह उपयुक्त होता है।

तरीके सीखना शुरू कर देता है और इसमें मुख्य भूमिका होती है घर में मौजूद सदस्यों की जिनके व्यवहार से शिशु के लिए एक वातावरण तैयार होता है सीखने और उसे आत्मसात करने के लिए।

गांधीजी का यह कथन भला कैसे असत्य हो सकता है कि कोई व्यक्ति अपने जीवन के शुरुआती सिर्फ पाँच वर्षों में जितना कुछ सीख लेता है, उस रफ्तार से, उतनी मात्रा में वह पूरी जिन्दगी में भी नहीं सीख पाता। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार भी मानव मस्तिष्क में याद रखने की क्षमता उम्र के साथ घटती जाती है जबकि समझ और अनुभव बढ़ते जाते हैं। यह तथ्य सिर्फ किताबी नहीं बल्कि जीवन में व्यावहारिक रूप में पूरी तरह खरा उतरता है। बचपन में जो कुछ याद किया जाता है, उसे सारी उम्र व्यक्ति भूल नहीं पाता और इसीलिए यह समय शिशु को संस्कारपूर्ण सारी बातों को सिखाने के लिए पूरी तरह उपयुक्त होता है ताकि आगे चलकर एक वयस्क के रूप में वह सभ्यतापूर्ण सुसंस्कारी जीवन जी सके। समाज में यह बात सर्वत्र देखी जा सकती है कि पढ़े-लिखे व मर्यादित जीवन जीने वाले परिवारों की अगली पीढ़ी भी प्रायः उन्हीं सारे गुणों से युक्त विकसित होती है जो उन्हें संसार में आँखें खोलते ही अपने परिवार में चारों ओर देखने को मिलती हैं।

इसके विपरीत अनैतिकता, द्वेष, विलासिता और लोभ जैसे दुर्गुणों से घिरे परिवारों में अच्छे इंसान के रूप में शायद कहीं कोई बिरला ही विकसित हो पाता होगा जिसे एक अपवाद माना जाएगा। इसीलिए हमें अपने देश में यदि एक स्वच्छ एवं सुन्दर समाज का निर्माण करना है तो इसके लिए प्रत्येक परिवार को अपनी नयी पीढ़ी के सुनहले भविष्य के लिए अपने-अपने घरों में ऐसे गुणों से युक्त वातावरण का निर्माण करना होगा जिन विशेषताओं की वे अपने बच्चों में अपेक्षा करते हैं क्योंकि यही वातावरण बच्चों के लिए एक ऐसी अनदेखी पाठशाला का-सा प्रभाव पैदा कर देता है जहाँ बच्चे वो सब कुछ सीख लेते हैं जिन्हें बाद में सिखा पाना बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों के वश की बात नहीं हो पाती और दुर्भाग्य से यदि इन्हें वातावरण उपयुक्त न मिले तो आगे चलकर ऐसी पाठशालाओं के छात्र हवालात और कारागार में रहकर भी अपने बचपन के पाठ न भुला पाएं तो आश्चर्य कैसा? यही महत्व है घर की पाठशाला का जहाँ इंसान भी तैयार किये जा सकते हैं और हैवान भी। बाकी हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम किस प्रकार के समाज की रचना करना चाहते हैं?

ज्ञाशिम, बरेली निवासी लोकप्रिय बाल-विज्ञान लेखक। बाल विकास तथा विज्ञान से जुड़े विषयों पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित।

नैतिकता के नाम

गिरीश पंकज - रायपुर

जीवन बालक का रहे, नैतिकता के नाम।
'अणुव्रती' बन वो चले, आजीवन अविराम।।

हर बच्चा गुण से भरा, इन्हें सँजोए आज।
कल को ये ही करेंगे, नित सुंदरतम काज।।

सही दिशा जब-जब मिली, बच्चे बने महान।
गलत पाठ से कब हुआ, पीढ़ी का उत्थान।।

झूठ नहीं यह सत्य है, बच्चों में भगवान।
जो समझे इनका करे, दिन-प्रतिदिन कल्यान।।

क्या निर्धन-धनवान सब, बच्चे गुण की खान।
सब को गर अवसर मिले, चमकें सूर्य-समान।।

मन में शिशुवत-भाव हो, हृदय रहे तब शुद्ध।
हर दुर्गुण से दूर हो, जीवन बने प्रबुद्ध।।

बच्चे कोमल सुमन-से, 'माली' करे न भूल।
ध्यान रखें, सींचें इन्हें, मुरझाए ना फूल।।

राग-द्वेष, छल-छंद से, बच्चे रहते दूर।
जीवन भर जो यूँ रहे, वो होता है शूर।।

ये भविष्य हैं देश के, हम सब की तकदीर।
क्या बालक औ' बालिका, हरें देश की पीर।।

बचपन जैसा कालखण्ड, है स्वर्णिम अध्याय।
हर चिंता से मुक्त मन, केवल बढ़ता जाय।।

साध्वी आनन्द प्रभा

प्रामाणिकता की नजीर

आचार्य तुलसी ने जब समाज के सामने अणुव्रत दर्शन का प्रवर्तन करते हुए अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की तो अनेकानेक लोगों ने स्वप्रेरणा से आगे बढ़कर अणुव्रत दर्शन को जीवन के धर्म के रूप में इसे अंगीकार किया। फिर तो चाहे जैसी भी परिस्थितियां उनके जीवन में आयीं, लेकिन वे अणुव्रत की राह पर अडिग रहे। भले ही उन्हें अपनी नौकरी छोड़ देनी पड़ी, लेकिन वे कर्तव्य पथ से पीछे नहीं हटे।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने भी इसे आत्मसात किया। आचार्य तुलसी ने जब अपनी परिषद में आह्वान किया तो गुरु का इंगित मिलते ही अनेक श्रावकों ने तत्काल अणुव्रतों को स्वीकार किया।

उनमें एक श्रावक हरियाणा के हिसार के प्रेम कुमार जैन जी का भी नाम था। वे एक उच्च सरकारी अधिकारी थे। एक बार उनके सामने बड़ी समस्या आ गयी। कहीं से हिरोइन पकड़ी गयी, जिसकी कीमत करोड़ों में थी। प्रेम कुमार जैन पर सरकारी अफसरों, मंत्रियों का दबाव आने लगा कि आप हिरोइन को गायब कर दो, आपको लाखों-करोड़ों रुपये घर बैठे मिल जाएंगे।

प्रेम कुमार जी के सामने बड़ी समस्या...एक ओर दबाव, दूसरी ओर अणुव्रत के नियम। किसे स्वीकारें, किसे छोड़ें। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी कृष्णा देवी को सारी समस्या बतायी और कहा- "मैंने नियम स्वीकार कर रखे हैं, मैं अप्रामाणिक कैसे बनूं।" कृष्णा देवी ने सहारा देते हुए कहा, "यदि आप अणुव्रतों के नियम के पक्के हो तो गुरुदेव तुलसी को सारा भार सौंपकर सो जाओ। गुरुदेव अपने आप आपको रास्ता दिखाएंगे।" प्रेम कुमार जी का अपने गुरु व नियमों के प्रति अटूट संकल्प व समर्पण था। वे गुरु का नाम लेकर सो गये।

सुबह उठे तो अपने आपको हल्का महसूस करते हुए उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, "मैं रिटायरमेंट ले रहा हूँ। अपना नियम नहीं तोड़ूँगा।" उसी समय उन्होंने पत्र लिखा व सरकार के पास भेज दिया। वहां से उत्तर आया कि अभी आपका समय नहीं हुआ है। आप बीच में रिटायर होते हैं तो आपको पेंशन भी कम मिलेगी।

आप सरकार की उस शर्त को स्वीकार कर रिटायर हो गये, पर मन में खुशी थी कि गुरु से लिया हुआ नियम अखण्ड रह गया। उसके लिए नौकरी गई तो कोई गम नहीं।

ऐसे थे अणुव्रती श्रावक प्रेम कुमारजी जैन। तत्त्वज्ञ श्रावक लाला घासी राम जी व पार्वती देवी के छोटे पुत्र। उन्होंने अपने स्वर्गवास से कुछ दिन पहले यह प्रसंग मुझे बताया। मुझे भी हर्षानुभूति हुई ऐसे संसार पक्षीय पिताजी को पाकर, जो अपने नियम के प्रति दृढ़ रहे।

■ डॉ. ज्योति शर्मा ■

किशोरों के लिए मूल्य शिक्षा क्यों?

जीवन मूल्यों को सिखाने के लिए बाल्यावस्था और किशोरावस्था को ही सबसे उत्तम अवस्था माना जाता है क्योंकि इन अवस्थाओं में सिखायी गयी बातें व्यक्ति आत्मसात कर लेता है और वह उसके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बन जाती हैं। जीवन मूल्य किशोरों की क्षमताओं को मजबूत बना सरलता से आत्मविश्वास के साथ जीवन की प्रत्येक विपरीत परिस्थिति में विजय प्राप्त करने में सहायक बनते हैं।

जीवन मूल्य अर्थात् वे सिद्धांत जिनके अनुसार हम अपना पूरा जीवन व्यतीत करते हैं। जीवन मूल्यों को सिखाने के लिए बाल्यावस्था और किशोरावस्था को ही सबसे उत्तम अवस्था माना जाता है क्योंकि इन अवस्थाओं में सिखायी गयी बातें व्यक्ति आत्मसात कर लेता है और वह उसके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बन जाती हैं। जीवन मूल्य किशोरों की क्षमताओं को मजबूत बना सरलता से आत्मविश्वास के साथ जीवन की प्रत्येक विपरीत परिस्थिति में विजय प्राप्त कराने में सहायक बनते हैं।

मशहूर ग्रीक दार्शनिक हेरोडोट्स का कहना है "प्रतिकूलता हमारी मजबूतियों को सामने लाती है। जब आप अपनी सबसे बड़ी चुनौती के सामने सकारात्मक होते हैं और संरचनात्मक तरीके से रेस्पांस देते हैं तो एक खास किस्म की दृढ़ता, मजबूती, साहस, चरित्र जो आप में ही निहित होता है, भले ही आपको उसका एहसास न हो, पर वह आपको निखारने लगता है।" किशोरावस्था में इन अद्भुत गुणों को अपने जीवन में उतारने और आत्मसात करने के लिए समय के साथ-साथ उचित मार्गदर्शन की जरूरत भी होती है। किशोरों के उत्साह को बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी क्षमताओं को पहचाना जाये और वयस्कों की देखरेख में इन क्षमताओं का विकास किया जाये।

पहले परिवारों में अमूमन तीन पीढ़ियों का समावेश होता था। ये पीढ़ियां मिल-जुलकर परिवार की जिम्मेदारियों को संभालती थीं। दादा-दादी, नाना-नानी कहानियों तथा स्वयं के आचरण के द्वारा बच्चों में जीवन मूल्यों और संस्कारों के बीज बोते थे। राम-लक्ष्मण, कृष्ण-सुदामा के बाल्यकाल का वर्णन, सिंहासन बत्तीसी, बेताल-पच्चीसी, अकबर-बीरबल, तेनालीराम जैसे किरदारों और साहित्य से बच्चे नैतिकता का पाठ पढ़ते हुए किशोरावस्था में प्रवेश करते थे।

पर आज बच्चों के उर्वर मन को सींचने और पोषित करने का वक्त न तो माता-पिता के पास है और न ही आज की अपार्टमेंट लाइफ में दादा-दादी, नाना-नानी के लिए कोई जगह बची है। ऐसे में बच्चे कार्टून, मोबाइल, कंप्यूटर, गेमिंग जैसी तकनीकों के साथ बड़े होते हैं। यही चीजें उनके सीखने का साधन भी होती हैं और मनोरंजन का भी। इन तकनीकों का उपयोग करते-करते बच्चा कब इनका दुरुपयोग करना सीख जाता है, यह न बच्चे को पता चलता है और न माता-पिता को।

ऐसे में नैतिक मूल्य तो बच्चे में आ ही नहीं पाते। किशोरावस्था में प्रवेश करते-करते ये बच्चे इस तकनीक के गुलाम बन जाते हैं। यह टेक्नोलॉजी ही उनकी लाइफ बन जाती है।

किशोरों में असीमित ऊर्जा होती है। हमें उस ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाना होगा। उन्हें साहसिक गतिविधियों में लिप्त करना होगा। आउटडोर गेम्स के माध्यम से उन्हें ऑनलाइन गेमिंग से दूर करना होगा। अच्छे साहित्य का उनके जीवन में पुनः प्रवेश करवाना होगा।

महान शिक्षाविद् सी. एस. लेविस ने तो कहा भी है "मूल्य रहित शिक्षा मनुष्य को एक चतुर शैतान बना देती है।" गेम खेलने से रोकने पर माता-पिता के भोजन में नींद की गोलियां मिला देना, माता-पिता के डांटने पर उनकी हत्या कर देना, गेमिंग के लिए अपने घर में ही चोरी करना, लाखों रुपये उधार लेना, ड्रग्स लेना, अश्लील वीडियो बनाना और देखना, यहां तक कि खुद ही की पैदा की हुई समस्याओं से घबरा कर आत्महत्या कर लेना जैसी सुर्खियां हम लगभग प्रतिदिन ही समाचार पत्रों में पढ़ते हैं। इसके अलावा बीड़ी-सिगरेट पीते, शराब के नशे में यहां-वहां गिरते, एक्सीडेंट करते, तंबाकू-गुटखा मुँह में दबाये, टीवी के विज्ञापनों-दृश्यों से दिग्भ्रमित होते, यौन अपराधों में लिप्त किशोर, माता-पिता, अध्यापक व अन्य आदरणीय लोगों की नसीहतों की अवहेलना करते किशोर हमें अपने आसपास नजर आ जाते हैं।

किशोरों को इन बुरी आदतों से निजात दिलाने के लिए हम सबको कदम से कदम मिलाकर कार्य करने होंगे। इस कार्य में परिवार के प्रत्येक सदस्य तथा समाज की सभी संस्थाओं को अपनी अहम भूमिका निभानी होगी। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने अच्छे आचरण द्वारा बालकों में जीवन मूल्यों का बीजारोपण कर सकता है। शांति, दया, सेवा, त्याग, ममता, प्रेम, उपकार, समानता, आनंद, सुंदरता, सहकारिता, अनुशासन, ईमानदारी जैसे नैतिक मूल्य बच्चा परिवार में ही सीखता है। कहा भी गया है, "बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होती है।" किस्से-कहानियां बच्चों को इतना नहीं सिखाते जितना उनकी आँखों से देखा हुआ किसी का आचरण। माता-पिता अपने व्यवहार के द्वारा बच्चों में उन नैतिक गुणों का विकास कर सकते हैं जो वह अपने जीवन में आत्मसात कर लेगा तो कभी किसी बुराई के चंगुल में नहीं फँसेगा। माता-पिता को स्वयं के प्रति बच्चे में इतना विश्वास पैदा करना होगा कि बच्चा कभी उनसे कुछ न छिपाये। अभिभावकों व अध्यापकों द्वारा उत्तम आदर्श व्यवहार तथा आचरण प्रस्तुत करके किशोरों के नैतिक चरित्र का विकास किया जा सकता है। परिवार व विद्यालय के बाद बालक समुदाय से प्रभावित होता है। यदि समुदाय का वातावरण शुद्ध, अनुशासित एवं सरल होता है तो बालक में चारित्रिक एवं नैतिक गुण विकसित होते हैं।

किशोरों में असीमित ऊर्जा होती है। हमें उस ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाना होगा। उन्हें साहसिक गतिविधियों में लिप्त करना होगा। आउटडोर गेम्स के माध्यम से उन्हें ऑनलाइन गेमिंग से दूर करना होगा। अच्छे साहित्य का उनके जीवन में पुनः प्रवेश करवाना होगा। पुस्तकों का महत्व समझाते हुए यह सिखाना होगा कि "पुस्तकें इंसान की सबसे अच्छी मित्र होती हैं, जो उन्हें कभी धोखा नहीं देती, कभी उन्हें गलत रास्तों पर नहीं ले जातीं।" पारिवारिक पृष्ठभूमि से ही लड़कों में लड़कियों की इज्जत करना, बालक-बालिका की समानता जैसे गुण सिखाने होंगे ताकि आगे चलकर वे महिलाओं को बराबर का दर्जा दे सकें और अपने नैतिक मूल्यों के कारण उनकी तरफ गलत दृष्टि से देखने का साहस न कर सकें। अगर ऐसा हुआ तो निश्चित रूप से लड़कियों के प्रति गलत व्यवहार व यौनाचार के मामलों में कमी आ सकेगी। शराब, गुटखा, ड्रग्स जैसे दुर्व्यसनों से दूर रखने के लिए किशोरों को बाल्यकाल से ही उनके दुष्प्रभावों के बारे में विभिन्न माध्यमों से इस हद तक सचेत करना होगा कि वे इन हानिकारक चीजों को उपयोग में लेने की सोच भी न सकें। उनके दुष्परिणामों के बारे में सोचकर वे सहम उठें और स्वतः ही इन चीजों से दूर हो जाएं।

प्रौद्योगिकी की उपस्थिति और इसके हानिकारक उपयोग के कारण 21वीं सदी में जीवन मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व कहीं अधिक हो गया है। किशोरों को मानवीय मूल्यों के बारे में समझा कर हम उन्हें सर्वोत्तम डिजिटल कौशल के साथ-साथ नैतिक व्यवहार और उसके महत्व को समझने में मदद कर सकते हैं। शेक्सपियर कहते थे, "हमारा शरीर एक बगीचे की तरह है और नैतिक मूल्य इसके लिए माली का काम करते हैं। जो इस

बगिया को जीवन भर बहुत सुंदर और महकती हुई बना सकते हैं।" मूल्य आधारित शिक्षा देना समय की मांग है। एक बार जब ये मानवीय मूल्य जीवन में किसी की प्राथमिकता बन जाते हैं तो जीवन के सभी नकारात्मक पहलू स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं। दुनिया को सभी के रहने की एक बेहतर जगह बनाने के लिए आज की पीढ़ी में मूल्यों की शिक्षा को आत्मसात करवाना आवश्यक है।

अपने भावी जीवन के प्रति चिंतित किशोरों की हमें कैरियर काउंसलिंग करनी होगी ताकि वे अपने जीवन को चलाने के लिए कोई गलत रास्ता न अपना पाएं। उन्हें अच्छे व हितकारी रास्तों की ओर अग्रसर करना होगा। आज के युग में हम चाह कर भी किशोरों को तकनीकी से दूर नहीं कर सकते, पर उसका सीमित व लाभदायक उपयोग तो उन्हें विभिन्न उदाहरणों द्वारा सिखा ही सकते हैं।

जीवन मूल्य खोते किशोरों के लिए हमें विशेष प्रयास करने होंगे तभी हम आज की दुनिया का सामना करने के लिए उन्हें उचित मानसिकता और मूल्यों से लैस होते देख पाएंगे। हमारे प्रयासों से ही जीवन के बारे में उनका दृष्टिकोण व्यापक व सकारात्मक हो सकेगा और वे जिम्मेदार नागरिकों के रूप में सफलतापूर्वक जीने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हो सकेंगे।

कोटा के राजकीय विद्यालय में वरिष्ठ अध्यापिका पद पर कार्यरत लेखिका शिक्षण कार्यों में नवाचार और चंबल नदी की सहायक नदियों को प्रदूषण से बचाने के कार्यों के साथ ही साहित्य-सृजन में संलग्न हैं।

दो ग़ज़लें

नित्यानंद 'तुषार'- गाजियाबाद

जो चीज़ थी दिलों में, सलामत नहीं रही
लोगों में अब ज़रा भी मुहब्बत नहीं रही

रिश्तों की असलियत का हमें जब पता चला
हमको किसी से कोई शिकायत नहीं रही

बदलाव ला दिया, उम्र ने, ज़िन्दगी में ये
वो शोख़ियाँ मिटीं, वो शरारत नहीं रही

कुर्सी सँभालने में सभी तेज़ हो गये
कुर्सी पे बैठने की लियाक़त नहीं रही

तहज़ीब से यहाँ काम चलता नहीं 'तुषार'
हालात कह रहे शराफ़त नहीं रही

■■■

दूसरों की शैलियाँ बरती नहीं हैं
हम किसी की कार्बन कापी नहीं हैं

तुम अकेले हो वजह इसकी यही है
तुमने दिल की खिड़कियाँ खोली नहीं हैं

एक जैसे दिन सदा रहते नहीं हैं
बारिशें हर रोज़ तो होती नहीं हैं

तुम परेशाँ हो, ज़रा सी बात से ही
उलझनें किसके यहाँ रहती नहीं हैं

बंदिशें बेकार हैं, बच्चों के ऊपर
तितलियाँ, फूलों से कब बोली नहीं हैं

दोस्ती मुमकिन नहीं है हर किसी से
सब गुलों में खुशबुएं होती नहीं हैं

ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस

लाईफ इंश्योरेंस

कैशलेस मेडीक्लेम

हमारे विशेषज्ञों द्वारा
अपनी पुरानी ज्वैलर्स ब्लॉक पॉलिसी
या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और
अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ
मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें ।

नो रुम कैटगरी वाली
कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें
और इसे केवल 2600/- की
मामूली राशि से सुपर टॉप अप
पॉलिसी के साथ जोड़ें

इंश्योरेंस टिप्स

अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी
नंबर के साथ शेयर करें,
हम एक परिवार पोर्टफोलियों प्रदान करेंगे
और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना
की सलाह देंगे ।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके
मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है
और आपको किसी सहायता या सलाह
की आवश्यकता होती है, तो हम
मदद के लिए तैयार है ।

Legacy of 38 Years

25000 HAPPY CUSTOMERS INDIA & ABROAD

11000 Claims Solved

300 National & International Awards

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए है जिसमे पॉलीसी है
ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी.

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !

हम देश विदेश में सभी ग्राहको को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते है.

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

26 A, Dagina Bazar, Mumbadevi Rd, Mumbai 400 002 | Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com
Contact: +91 7045 850012/13/14/15/16 / 9869230444 / 9869050031 / 022-22448800

विनयशील जैन

आत्मनिर्भरता की सीख

बाबूजी हमेशा कहते थे कि कोई बात चाहे वह बच्चा ही क्यों न कह रहा हो, ध्यान से सुनना चाहिए। उसमें भी कुछ शिक्षा छिपी हो सकती है। जेठाराम ने कहा था, ''बाबूजी, आप इन पेड़ों को सहारा मत दीजिए। हवा के जितने थपेड़े इन्हें लगेंगे, इनकी जड़ें उतनी ही मजबूत होंगी। हो सकता है इनमें से कुछ पेड़ मर जाएं, परंतु जो बचेंगे, वे बहुत मजबूत होंगे।''

बाबूजी का मन आज बड़ा ही दु:खी था। चेहरे पर उदासी छायी हुई थी। दिल बहुत ही व्याकुल था। स्कूल की सीढ़ियों पर बैठे-बैठे सोच रहे थे कि कब माली जेठाराम आये और उसे अपनी परेशानी बताएं।

दरअसल कल ही बाबूजी ने स्कूल कैम्पस में सामने रहकर जेठाराम से सारे पेड़ बड़े जतन से लगवाये थे। खाद-पानी देकर उन्हें इस प्रकार से खड़ा किया था कि बिना किसी परेशानी के सभी पेड़ जल्दी ही बड़े हो जाएंगे। चिलचिलाती धूप में पेड़ों की छाया में कितना सुकून मिला करेगा! पक्षियों को भी अपना घोंसला बनाने की जगह मिलेगी, परंतु किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। रात को इतनी जोर से आंधी-तूफान आया कि बहुत सारे पेड़ गिर गये। जब रात को तूफान अपने पूरे वेग पर था, तभी बाबूजी की नींद खुल गयी। फिर वे रातभर सो नहीं पाये। भोर होने से पहले ही वे स्कूल की तरफ तेज कदमों से चल पड़े। जैसा कि उनको अंदेशा था, गिरे हुए पेड़ों को देखकर उनका मन द्रवित हो उठा।

सुबह के आठ बजने वाले थे। माली जेठाराम ने जैसे ही स्कूल में प्रवेश किया, बाबूजी ने उन्हें कहा, "जो हो गया सो हुआ, उसे कौन टाल सकता था। परंतु तुम्हें अब एक काम और करना होगा। प्रत्येक पेड़ को वापस खड़ा करके उनके एक-एक सहारा लगा दो ताकि ये फिर से न गिर जाएं क्योंकि आंधी-तूफान का कोई भरोसा नहीं है। न जाने कब अपने विकराल रूप में आ जाये।"

बाबूजी की बात सुनकर जेठाराम गहन चिंतन में डूब गया। वह दो-तीन मिनट तक तो कुछ बोल ही नहीं सका। बाबूजी का कहा उसने कभी टाला नहीं था आज तक। थोड़ी देर बाद हिम्मत करके बोला- "बाबूजी, आप मेरे से बड़े हैं। मैंने आज तक आपकी किसी बात की मनाही नहीं की। लेकिन यदि आप बुरा न मानो तो एक बात कहूं और यदि बात बुरी लगे तो उसके लिए पहले ही क्षमाचायना करता हूँ।"

बाबूजी हमेशा कहते थे कि कोई बात चाहे वह बच्चा ही क्यों न कह रहा हो, ध्यान से सुनना चाहिए। उसमें भी कुछ शिक्षा छिपी हो सकती है। उन्होंने जेठाराम से कहा, "बताओ, तुम क्या कहना चाहते हो, मुझे कुछ भी बुरा नहीं लगेगा। तुम बुरी लगने वाली बात बोलोगे ही नहीं, मुझे यह विश्वास है।"

अगले पल ही जेठाराम ने जो कहा, बाबूजी आँखें बंद कर शांत भाव से सुनते रहे। एक पल के लिए उन्हें लगा कि जेठाराम ने अपनी बागवानी के जो पाँच दशक गुजारे हैं, उसका अनुभव उसके दिल से निकल कर बाहर आ रहा है।

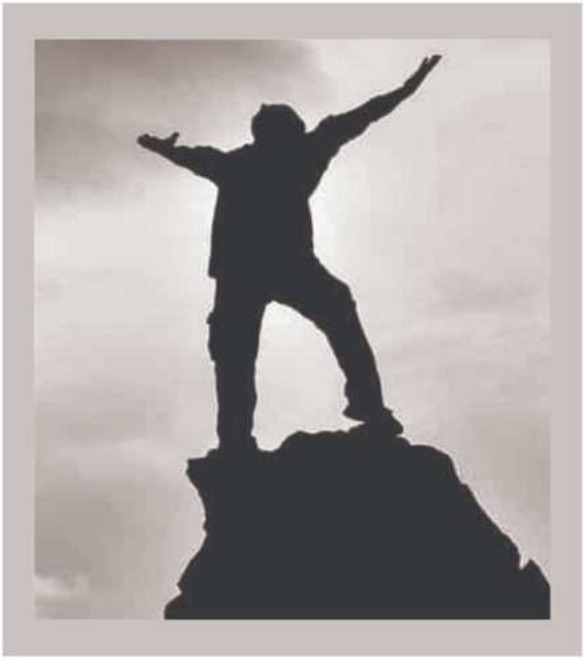

जैसे ही जेठाराम ने अपनी बात समाप्त की, बाबूजी ने उसके कंधे पर हाथ रखा और आँखों के इशारे से उसके विचारों को मूक सहमति देकर घर की तरफ चल पड़े। पूरे रास्ते भर उनके दिलो-दिमाग में जेठाराम के शब्द उथल-पुथल मचाते रहे।

जेठाराम ने कहा था, ''बाबूजी, आप इन पेड़ों को सहारा मत दीजिए। हवा के जितने थपेड़े इन्हें लगेंगे, इनकी जड़ें उतनी ही मजबूत होंगी। हो सकता है इनमें से कुछ पेड़ मर जाएं, परंतु जो बचेंगे, वे बहुत मजबूत होंगे।''

शाम को घर पहुँच कर बाबूजी ने अपने बच्चों को बुलाया और कहा - "आज से तुम्हें अपने पैरों पर खड़ा होना है। अपनी पढ़ाई-लिखाई, पुस्तकों के खर्च की स्वयं ही व्यवस्था करोगे।" बच्चे यह सुनकर मंद-मंद मुस्कुराने लगे। उन्हें मालूम था कि बाबूजी इस तरह की हँसी-मजाक की बातें उनसे यदा-कदा करते रहते थे। बाबूजी ने कहा - "यह हँसी-मजाक की बात नहीं है। आज से आप लोगों को आत्मनिर्भर बनना है।" अगले ही दिन बाबूजी बच्चों को लेकर बाजार की दुकानों पर गये और दुकानदारों से कहा - "ये मेरे बच्चे हैं। ये आपसे कुछ सामान लेकर जाएंगे। घर-घर जाकर बेचेंगे। शाम को आपका भुगतान करके कल के लिए फिर सामान ले जाएंगे।" इस तरह बाबूजी ने अपने बच्चों को आत्मनिर्भरता की सीख दी।

माली जेठाराम के शब्दों ने जैसे उन्हें अंदर तक उद्वेलित कर दिया था। बच्चों को भी एक नया अनुभव जीने को मिला। जैसे-जैसे उनकी आय बढ़ती गयी, उन्होंने अपनी शिक्षा-दीक्षा के अलावा घर खर्च में भी सहयोग देना आरंभ कर दिया। मेहनत करके पैसे कमाने में उन्हें अजीब-सा सुकून मिलता था।

जयपुर निवासी लेखक अणुव्रत जीवनशैली के समर्थक हैं। वे समसामयिक विषयों पर लिखते रहते हैं।

लघुकथा

सुवृत्ति

■ मीरा जैन - उज्जैन ■

शहर के विद्या निकेतन स्कूल में शिक्षा के साथ संस्कारों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता था। इसी क्रम में शाला के समस्त विद्यार्थियों में संस्कारों को जीवंत रखने व पुष्ट बनाने हेतु प्रत्येक सोमवार एक सुनियम दिया जाता जिसका विद्यार्थियों को पूरे सप्ताह पालन करना होता था।

इस सोमवार सभी विद्यार्थियों को प्रधानाचार्य द्वारा नियम दिया गया -

"इस सप्ताह सभी बच्चे अपने माता-पिता की प्रत्येक आज्ञा का पालन करेंगे।"

सभी बच्चों ने एक सुर में सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। तभी सातवीं कक्षा में पढ़ने वाला समर्थ अचानक प्रधानाचार्य के करीब आया और कहने लगा- "गुरुवर ! यह नियम आप मुझे जीवन भर के लिए दिला दीजिए।"

प्रधानाचार्य आश्चर्यजनक मुद्रा में कुछ क्षण उसका चेहरा देखने के पश्चात् समझाते हुए बोले - "बेटा ! तुम्हारी भावना तो बहुत अच्छी है लेकिन अभी तुम छोटे हो। भविष्य में कभी परिस्थितिवश या मुश्किल में पड़ने की संभावना को देखते हुए ऐसा हो सकता है कि तुम माता-पिता की हर आज्ञा का पालन न कर सको।"

इस पर समर्थ ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा - "गुरुवर ! मुझे पता है कि कोई भी माता-पिता अपने बच्चे को ऐसी आज्ञा कभी नहीं दे सकते जिससे वह कभी किसी मुश्किल में पड़े या उसे कोई तकलीफ हो।"

समर्थ का उत्तर सुन प्रधानाचार्य भाव विभोर हो गये और उन्हें महसूस हुआ कि उनके छोटे-छोटे प्रयास वास्तव में फलीभूत हो रहे हैं।

Prof.N.Radhakrishnan

Human Survival and the Need to Foster Eco-centric Spirituality – A Gandhian Perspective

It is not fashionable now to discuss and share experiences and practices on Ahimsa or Nonviolence as a positive philosophical or spiritual frame of reference, and action strategy to minimize and ultimately root out violence in various forms from our daily life. Spirituality is viewed as otherworldly and violence as a fact of life while nonviolence is considered as a desirable objective but difficult to achieve.

Man always lived in harmony with Nature and what sustained him in all the crisis he faced in his profound, courageous and determined march towards unravelling the mysteries of various kinds is his respect for all forms of life around him. What had guided him in this long, very often distressing and disappointing and at the same time lively search for identity, is the realization of how everything in nature is dependent on one another. This is the core of the ancient wisdom.

Unprincipled Exploitation of Nature

It was Socrates who defined Wisdom as "Knowing that you do not know". The emerging present-day realities perhaps defy even a wise man like Socrates. As humanity cruised towards the twenty-first century with the vain hope of a world without war and boundaries, and statesmen, scientists, social activists, religious leaders and others reiterate from various world forums their commitment to the ushering in of a just and peaceful world order, the one thought that troubles the minds of sensitive souls who have no stake in any of these high-profile declamations is how wise are we in believing that the web of a soulless consumerist and materialistic culture with all temptations it offers is a dependable and durable shield for humanity from exploitation and injustice of all varieties?

Ninetieth Century and Twentieth Century witnessed feverish and almost unprincipled appropriation of nature's wealth for enhancing the material comfort and wealth of humankind. Like theives, humankind continues to plunder nature's wealth disregarding all warnings.

Our continued neglect of ecological aspects disturbed most of the environmentalists all over the world and the Greens in Germany inspired by Gandhi under Petra Kelly spared no efforts to highlight the danger this planet faces from the unprincipled use of what nature keeps like a treasure for all her

The ozone depletion, acid rain, and global warming are all related to human-generated emission in to the atmosphere. The dilemma of development has been that the very means by which it is achieved – namely industrialization has destroyed the natural resources which it is based."

children from all times to come. Petra Kelly wrote, "As human beings, we have exploited and controlled our environment. We have treated this environment like a river, with a seemingly endless supply of pure water. Only now it is beginning to dawn on us that the planets environment circulates in a close system, and that what we add to it, stays with us. The ozone depletion, acid rain, and global warming are all related to human-generated emission in to the atmosphere. The dilemma of development has been that the very means by which it is achieved – namely industrialization has destroyed the natural resources which it is based."

Ahimsa or Nonviolence as Spiritual Frame of Reference

It is not fashionable now to discuss and share experiences and practices on Ahimsa or Nonviolence as a positive philosophical or spiritual frame of reference, and action strategy to minimize and ultimately root out violence in various forms from our daily life. Spirituality is viewed as otherworldly and violence as a fact of life while nonviolence is considered as a desirable objective but difficult to achieve.

While Gandhi, one of the outstanding proponents and champions of alternative lifestyle, used nonviolence as a technique and a way of life to cleanse individuals and social and political systems and prepare to ground for a new global social order with local community as the base and individual human being as center place, his efforts alas after his death is fast degenerating into a highly pernicious system where in even those who were in the front line of his nonviolent army succumbed to the temptations of power and epicureanism to which in turn, make India one of the most violent countries of the World, raising also the question where is Gandhi in India today.

In fact the whole world is in turmoil today. Violence has gripped us all. At the global level, we are dissipating our energies in hot and cold wars, in trade wars and information wars while at the national level we are torn by ethnic, religious and political conflicts, and at the individual level, we have now practically lost much of the individuality and autonomy. We flow with the current to play safe to begin with, and end up in margin in the crowd and losing our identities.

Inspite of its failure in the land of Gandhi in the recent decades, 'Ahimsa' appears to be only remedy to cure the ills of humanity today. It is now being widely recognized even by those who continue to do violence to win the race. Violence has been used to curb violence ever since man emerged from animal stage of evolution, but without any success. Humanity could survive this inherent violence only because of the counter balancing nonviolence.

Great epic leaders of past such as Ram, Krishna, and historical leaders such as

'Ahimsa' appears to be only remedy to cure the ills of humanity today. It is now being widely recognized even by those who continue to do violence to win the race. Violence has been used to curb violence ever since man emerged from animal stage of evolution, but without any success. Humanity could survive this inherent violence only because of the counter balancing nonviolence.

Budhha, Mahavira, Ashoka, Christ, Zoroster, Mohammed and Gandhi, spiritual masters like Acharya Tulsi, Acharya Mahapragya and Dalai Lama tried to strengthen nonviolence as a means to subdue violence and thereby to create a nonviolent (Ahimsatmak) social order. They kept torch burning and enlightened humanity but could not eliminate the darkness forever.

The centaury that we have left behind, namely the 20th century, by and large, has been essentially a period of science and technology. No doubt, Science and technology have helped humanity to combat effectively some of the most dreaded diseases and enhance the quality of human life. It has also at the same time sharpened unfortunately, the violent nature latent in human beings, as reflected in the development of weapons of mass destruction and spreading of violent tendencies on a global scale. Students of history describe the 20th century as the most violent century in the known history of humanity.

This century also witnessed a decline in some of the cherished institutions which humanity developed with considerable passion and hope over the centuries, particularly the religions. Religions have ceased to be the focal points of transformations and there has been undoubtedly a contemporary decay in so far as the reach and import of the message enshrined in the religious precepts.

Spirituality, which was misunderstood earlier to be a kind of journey in mysticism or such exercise of ascetic and mendicants and such people who were exploring the mysteries of human life, has also ceased to be of any interest to contemporary men and women, who are caught up in a mad pursuit of comforts. They are all enticed by market economy, talk about global village, cosmic order and such other endearing formulations which go by the new culture which is being assiduously sought. The surprising, perhaps, alarming, fact is that nobody knows where he or she is heading to. This situation reinforces the urgent need to discover the springs of spirituality in each person.

In a cultural milieu where man has been reduced to the status of a commodity whose worth is assessed on the basis of his/her purchasing power or bank balance, any consideration about spirituality, its role in shaping the destiny of every human being, nay, humanity, at large will only invite derisive response. On the contrary, optimistists who had vision and whose ability to see through the womb of time have never been dissuaded from looking ahead and unraveling the mysteries of the mind of human beings where dwell springs of spiritualism. Spirituality in the simplest term is just the natural light in every person which enables him or her to steer clear of the internal darkness. To feel to see and to bath in the ever-inspiring well of spiritualism one should have a certain kind of inspired and

heightened consciousness.

Need to Foster the Inner and Outer Dialogue

While science and technology have given us tremendous material advancement, the problem remains as to where humanity is heading for. What is happening to the individual, to the inner dialogue, the perpetual debate between the inner and outer dialogue, the inner man and outer man, the inner woman and the outer woman, the inner human being and the outer human being ? The manner in which things are happening – earthquakes, floods and droughts, changes in the troposhere, atmosphere and i other areas, force us to ask few questions. Questions, which are disturbing, those which we don't want to ask, and are afraid of asking where do we go from here ? What is in store for humanity ? We hear people talking about the role of religion, particularly those who call themselves intellectuals, who take pride in asserting that religion is dead, that it has no role in present day society which is essentially based on science and technology. The world is proud of its IT acheivements but what about this world itself ? Let us not be fooled into believing that IT is going to solve all our problems.

Oneness of the Living Being and its Environment

When do we realize the oneness of the Living Being and its Environment ? Unless and until we move away from our obsession with material growth and restructure our priorities on the basis of basic moral considerations all our talks, all the international agreements and covenants would remain as scraps of paper exchanged between suave diplomats. Environmental conservation has to become a central issue concerning the very survival of not only human race but the entire universe itself.

Is there anything more frightening than to be told that the earth's forest covers are fast disappearing, the blue waters of the

Violence has been used to curb violence ever since man emerged from animal stage of evolution, but without any success. Humanity could survive this inherent violence only because of the counter balancing nonviolence.

oceans that surround the earth are getting more and more polluted thereby the marine products which cater more than a half of humanity's food requirements are either getting repleted or threatened, earth's canopy, namely the sky is developing holes which would increase several folds the temperature of the earth ? To put more fright we are now told that there are signs of ice melting in the polar regions which would eventually increase the level of seas which in turn would spell disaster of an unimaginable scale. The tragedy is, still the humanity, is unmoved and unconcerned, notwithstanding the much-hyped Earth Summits and other international gatherings on Sustainable Development. While whatever is happening to highlight the danger looming large on humanity is to be appreciated, they suffer from a basic lacuna : they highlight only the material and physical aspects while the spiritual relationship of all creations and their organic relationship with Nature are either ignored or side-tracked. People are to be encouraged to take environmental issues as their personal concern. In order to drive home the importance of our common future, all efforts are to be harmonized keeping in view of the holistic nature of the problem. The spiritual and cultural aspects of survival cannot be under-estimated or ignored in the din of economic progress and what is highlighted now,'sustainability.'

The author is the Chairman of Indian Council for Gandhian Studies and the Managing Trustee of Gandhi Peace Mission. He has been closely associated with Anuvrat Movement and its non-violence training programmes.

अतीत के झरोखे से...

इस स्तम्भ में 'अणुव्रत' पत्रिका के अर्द्धशती पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री पुनर्प्रकाशित की जा रही है ताकि अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास को हम वर्तमान से जोड़कर भविष्य की दिशा तलाश सकें। इस अंक में प्रकाशित चार पृष्ठ की यह सामग्री 'अणुव्रत' पाक्षिक के ***16 दिसम्बर 1970*** *के अंक से ली गयी है।*

सभी के रास्ते पृथक हैं और लक्ष्य एक परिधि

डॉ. सुवालाल उपाध्याय 'शुकरत्न'

'शृणवन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्राः' यह समस्त मनुष्य जाति एक ही परमात्मा की सन्तान है। सब एक ही प्रेम सूत्र में बंधे हुए परस्पर भाई-भाई हैं। सभी एक ही बगिया के फूल, एक ही डाली के पक्षी, एक ही सागर की लहर, एक ही आकाश के तारे अथवा एक ही वृक्ष के फल हैं। मौलिक दृष्टि से जगत का प्रत्येक परमाणु परस्पर सम्बन्धित है, वह एक-दूसरे की सहायता के बिना कुछ नहीं कर सकता। हम सब एक-दूसरे के प्रति चिर कृतज्ञ हैं।

श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं, सभी रास्ते मुझ तक आते हैं। जो जिस रास्ते से आता है, उसे मैं उसी रास्ते से स्वीकार करता हूँ और यह भी कि 'मैं प्राणिमात्र का सुहृद हूँ, मुझे जानकर व्यक्ति शान्ति प्राप्त करता है' किन्तु यह आश्चर्य का विषय है कि संसार का इतिहास परमात्मा के नाम पर अत्यन्त मजहबी उन्माद में क्षुब्ध, विमूढ़ और घृणाकुल होकर, देश और जातियों के तथा विभिन्न धर्मावलम्बियों के बीच होने वाली भीषण लज्जाजनक और क्रूर रक्तपात की घटनाओं से भरा पड़ा है। इससे धर्म और मनुष्यता दोनों ही कलंकित हुए हैं। साधारण बुद्धि में भी यह बात नहीं आ सकती कि मनुष्य को मार देने से खुदा को क्या आनन्द प्राप्त हो सकता है या किसी जीव हत्या का परमात्मा की प्रसन्नता से क्या सम्बन्ध है? आज इस वैज्ञानिक युग में भी धर्मोन्माद के ये दृश्य दिखायी पड़ते हैं।

कितनी विडम्बना है यह? किसी विशेष पंथ, मत या संप्रदाय का अनुयायी हो जाने पर उसी के अन्ध समर्थन में तत्पर व्यक्ति यह भूल जाता है कि इस दृष्टिकोण से वह अपने मत को ही सत्य समझकर और अपनी भावनाओं के पोषण में एकमात्र उसी को सत्य धर्म घोषित कर सम्पूर्ण विश्व के अधिपति, सर्वोपास्य, सर्वशक्तिमान परमात्मा को एक निश्चित मत की परिधि के भीतर ही दबाकर रखना चाहता है। कितने ही व्यक्ति धर्मों के स्थायी और केन्द्रीय उद्देश्यों को समझे बिना, इस प्रकार के सूत्ररहित मिथ्या और आंशिक निष्कर्षों के बीच ठोकरें खाते हुए भूल-भुलैया में फँसे हुए हैं। यह सारा विराट जीवन एक है किन्तु अहंकार में हम सब अलग खड़े हो गये हैं। सभी ने अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता और महत्तर ज्ञान का दावा किया है।

प्रत्येक धर्मानुयायी को उदारतापूर्वक यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति, प्रवृत्ति, रुचि, श्रद्धा, संस्कार और अधिकारों के अनुसार उपासना प्रणाली में पृथकता हो सकती है। रोम के सीनेट के एक सदस्य ने कहा है कि उस महान रहस्यवादी के हृदय-द्वार तक सिर्फ एक ही सड़क से नहीं पहुँचा जा सकता। जैसे कुशल चिकित्सक प्रत्येक रोगी के लिए, उसके रोगानुसार ही अनुकूल औषधि की व्यवस्था करता है। सभी को एक ही प्रकार की औषधि नहीं देता। वैसे ही अधिकार भेद से साधना में भी भेद स्वीकार किया जाता है। इसीलिए साधकों का जीवन धर्म-जीवन की असंख्य अनुभूतियों से सम्पन्न देखा जाता है।

'नैकोर्मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्।'

विवेकानन्द ने लिखा है कि अनन्त विविधता एक उत्कृष्ट संस्कृति का लक्षण है।' अनन्त को प्राप्त करने के लिए जीवात्मा अनन्त प्रकार से उद्योगशील हो सकती है। महायोगी अरविन्द के अनुसार भारतीय धर्म ने सदैव यह अनुभव किया है कि मनुष्य के स्वभाव और बौद्धिक आकर्षण की विविधता का कोई अन्त नहीं, अतएव अनन्त तक पहुँचने के लिए व्यक्ति को विचार और पूजा की पूर्ण स्वतंत्रता अवश्य देनी चाहिए। प्रत्येक धर्म मानो अनन्त की एक तरंग है, जो महासागर के सम्पूर्ण गर्जन और वृत्तान्त को अपने अन्दर वहन करती है। भारत ने अपने चरम उत्कर्ष के समय भी यही सिद्धान्त माना था और उसकी सांस्कृतिक और धार्मिक धाराएं भी इसी मान्यता से अनुप्राणित रही हैं। इस सम्बन्ध में कालिदास का यह कथन अत्यन्त स्पष्ट है -

'बहुधाप्यागमभिन्नाः पन्थानः सिद्धिहेतवः।
स्वयैव निपतन्त्योधा जाह्नवीया इवार्णवे।।

अर्थात् गंगा के प्रवाह की तरह, विभिन्न पन्थों के प्रवाह केवल एक तुझ में ही प्रवेश करते हैं।

मानवीय भाषा में उस परम सत्य के चरम दर्शन को अभिव्यक्त करना अति कठिन कार्य है। गीता में कहा गया है – 'कुछ लोग उसे आश्चर्य से देखते हैं। कुछ लोग उसे आश्चर्य से सुनते हैं, परन्तु सुनते हुए भी उसे कोई नहीं जानता।' परमात्मा के

सत्य स्वरूप को जान लेना भी कोई सरल कार्य नहीं है। उसके द्वारा वरण किये गये महान साधक के अतिरिक्त, किसी के द्वारा इस प्रकार की घोषणा करने का साहस करना, कि मैंने उस परम पुरुष को सम्पूर्ण रूप से जान लिया है, विश्वसनीय नहीं है।

भक्त और साधक के भावानुसार एक ही परम तत्त्व विभिन्न रूपों में आविर्भूत होता है। संसार में कोई भी दो मनुष्य इस प्रकार के नहीं जो सभी प्रकार से एक भावापन्न हों, अतः इस सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि भिन्न-भिन्न साधकों ने अपने-अपने भावों के अनुसार, परमतत्त्व का अनुभव किया है। फलतः सभी को एक-दूसरे की अनुभूतियों का सम्मान करना चाहिए। ऋग्वेद में 'एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति' कहकर इस केन्द्रीय रहस्य को प्रकट किया गया है। वस्तुतः साधकों के द्वारा उपास्य सभी रूप एक ही परमतत्त्व के विभिन्न प्रकाश हैं।

जिस प्रकार बीज की एकता में से ही वृक्ष की शाखाएं, पत्र, पुष्प, फल आदि अनेक रूपों, रंगों एवं गुणों की भिन्नता लेकर अभिव्यक्त होते हैं, जबकि वे मूल में एक ही हैं। उसी प्रकार सभी धर्म तथा वैश्व शक्तियाँ परमात्मतत्त्व की ही विविध अभिव्यक्तियाँ हैं। महाभारत के अनुशासन पर्व में बताया गया है कि वह एक ही तत्त्व हजारों रूपों में अभिव्यक्त होता है।

एकवा चद्विधा चैव बहुधा च स एव हि।
शतधा सहस्रधा चैव तथा शतसहस्रशः॥

कबीर ने यही भाव अनेक स्थानों पर व्यक्त किया है -

हिन्दू तुरक का साहिब एक।
कहा करे मुल्ला कहा करे शेख।।

यह रहस्य जानकर भिन्न-भिन्न भावों के बीच परस्पर पूरकता एवं परस्पर अनुकूलता का विकास करते हुए हमें अत्यन्त उदारतापूर्वक, अपने भीतर सभी दिशाओं से प्रकाश को प्रवेश करने देना चाहिए। मौलाना आजाद कहते हैं, "ईश्वर विभिन्न जातियों, राष्ट्रों या सम्प्रदायों द्वारा अपना मान लिया हुआ ईश्वर नहीं है। यह ईश्वर तो सम्पूर्ण सृष्टि का परोपकारी एवं रचयिता है। सम्पूर्ण मानव-जाति जिसकी क्षमाशीलता और दयाभाव की अधिकारिणी है।" उर्दू के शेर की एक पंक्ति में विभिन्न नामों से एक ही परमात्मा को सम्बोधित बताया गया है – "फकत तफावत है नाम ही का दरअसल सब एक ही हैं यारो।"

यह स्पष्ट रूप से जान लेना चाहिए कि मौलिक रूप से परमात्मा एक है – 'एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा' (वेद)। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर आदि में सर्वत्र उसकी प्रार्थना भी एक ही है। एक मध्ययुगीन रहस्यवादी ने सुन्दर शब्दों में इसी भाव को व्यक्त किया है – "यदि अलग-अलग दीयों में अलग-अलग तेल हों और उनकी बत्तियां भी अलग-अलग तरह की हों तो भी जब वे जलेंगी तो उनकी लौ और प्रकाश एक जैसा ही होगा।" संस्कृत के एक पद्य में इसी भाव को भिन्न-भिन्न रंगों वाली गायों के दूध की एक वर्णता की उपमा के द्वारा प्रकट किया गया है -

'गवामनेकवर्णानां क्षीरस्यास्त्येकवर्णता।
तथैव सर्वधर्माणां तत्त्वस्याप्येकवस्तुता।।'

सच पूछा जाये तो कलह की स्थिति नकली और दुरभिमानी धार्मिक जीवन में ही हो सकती है। धर्म के मौलिक भाव जिनके जीवन में घुल गये हैं, उस समाज में तो कानून और बाहरी शासन भी आवश्यक नहीं होता। धर्म के प्रभाव से ही सम्पूर्ण समाज व्यवस्था, गंगा के शान्त प्रवाह की तरह अपने आप सुव्यवस्थित रूप से चलती रहती है। उपनिषद् काल में इस प्रकार की व्यवस्था के प्रमाण मिलते हैं - 'धर्मेणैव प्रजाः सर्वाः रक्षन्तिस्म परस्परम्।'

ईश्वर किसी विशिष्ट व्यक्ति या वर्ग की ही सम्पत्ति नहीं है। ईश्वर के सन्देश की विश्व व्यापकता में जो विश्वास करता है, उसे असहिष्णुता की भावना का त्याग करना ही होगा। श्री राधाकृष्णन का कहना है - "धर्म का प्रयोजन लोगों का मत बदलना नहीं, बल्कि उनका जीवन बदलना है – धार्मिक व्यक्ति का काम सोये हुओं को जगाना और कट्टरपंथी विचार वाले लोगों को झकझोरना होता है।"

एक ओर तो यह युग भयंकर संहारक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित है और दूसरी ओर इस युग में हमारे चारों ओर अनेक विघटनकारी शक्तियां और संकुचित दृष्टिकोण उत्पन्न हो गये हैं, जिनसे राष्ट्रीय प्रगति एवं समृद्धि तथा मनुष्य-समाज की शान्ति के लिए अत्यन्त संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गयी है। निहित स्वार्थ वाले राजनीतिज्ञों ने इस सबको और अधिक खतरनाक मोड़ दे दिया है। अतः इस भयावह परिस्थिति में, हमें सही होने के एकाधिकार का दावा छोड़कर, सहयोग और सहिष्णुता के सहारे ही विभिन्नताओं के गड्डमड्ड में से अपना रास्ता निकाल लेना चाहिए। किसी अन्य काल की अपेक्षा इस अणु युग में राष्ट्रीय जन और मनुष्य जाति की एकता अधिक अनिवार्य और अपरिहार्य हो गयी है। इसके लिए हमें सभी मनुष्यों में एक ही परमात्मा के प्रकाश का दर्शन तथा विस्तृततर धार्मिक सहिष्णुता का विकास करते हुए मतों, मजहबों, सम्प्रदायों और धर्मों की उमड़ती हुई अनेक धाराओं को एक साथ मिलकर महाप्रवाह के रूप में बहाना होगा। अपने 'अहम्' में ही बन्द रहना मनुष्य की पूर्णता नहीं है। उसे एक विशाल महत्तर, विश्व चेतना के रूप विस्तृत करते हुए, विश्वव्यापी सत्ता और सभी प्राणियों के साथ एक होना ही मानव विकास की पराकाष्ठा और मनुष्य के आत्मोत्कर्ष की अन्तिम भूमिका है।

शान्ति की खोज और भटकाव

घनश्याम दास बिड़ला

हमारा देश बहुत कुछ अज्ञान से पीड़ित है। हमें यह अज्ञान दूर करना है। इस अज्ञान से अनेक बुराइयाँ उत्पन्न हुई हैं। निर्धनता इनमें से एक है। ईर्ष्या, वैमनस्य आदि भी अनेक बुराइयां इसी अज्ञान से उत्पन्न हुई हैं।

मैं प्रतिवर्ष विदेश यात्रा करता हूँ। वर्ष में दो बार या कभी-कभी तीन बार। यह क्रम सन् 1927 से चालू है। मैंने सभी देशों की यात्रा की है और मैं यह धीरे-धीरे देखता रहा हूँ कि अमेरिका जैसे विकसित देश खास तौर पर गिरते जा रहे हैं। हालाँकि आर्थिक दृष्टि से वे समृद्ध हैं। विज्ञान में भी बढ़े-चढ़े हैं और वहां लोगों का जीवनस्तर काफी ऊँचा है, लेकिन वहां सुख नहीं है। गत जुलाई मास में जब मैं वाशिंगटन में था, मुझे अपने दूतावास से जो सर्वप्रथम संदेश मिला वह यह था कि "रात को बाहर न निकलिए, यहां कोई सुरक्षा नहीं है।"

यह अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन का हाल है। मैंने तो समझा कि यह अतिरंजना मात्र है, पर अमरीकियों ने तथा महिलाओं ने मुझे बतलाया था कि रात को सड़कों पर निकलना बहुत खतरनाक है। इतनी शिक्षा, समृद्धि, धन और उच्च जीवनस्तर के होते हुए भी वहां क्या हो रहा है? इसका कारण यह है कि वहां जातीय उपद्रव हो रहे हैं। यही नहीं, लोगों को वहां यह भी पता नहीं कि शान्ति कैसे प्राप्त हो सकती है। फल यह है कि वहां अनेक तरह की बातें होने लगी हैं। हाल ही में कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय चल पड़ा है। लोग श्रीकृष्ण की प्रतिमा लेकर जुलूस बनाकर हरे कृष्ण का कीर्तन करते हुए घूमते रहते हैं। ऐसे कई लोग भारत में भी आये हैं और बम्बई में सिर मुंडाए, शिखा रखे और रुद्राक्ष माला पहने हुए अनेक पीताम्बरधारी अमरीकी "हरे कृष्ण, हरे राम" का जप और कीर्तन करते हुए दिखायी देते हैं। पता नहीं, इस तरह उन्हें शान्ति मिलेगी या नहीं। लेकिन तथ्य यह है कि वे इस विश्व में शान्ति एवं सुख के लिए अंधेरे में भटक रहे हैं। इस जीवन के परे, इस दृश्य जगत के परे भी कुछ है, जिसे हमें भूलना नहीं चाहिए। धार्मिक जीवन बहुत महत्वपूर्ण है।

दो मुक्तक

मुनिश्री अभयकुमार

उस दीप का जलना व्यर्थ है जो तम को आलोकित नहीं करता,
उस पुष्प का खिलना व्यर्थ है जो मन को उल्लसित नहीं करता,
ऐसे तो बहुत से मनुष्य जन्म लेते हैं और मरते हैं जग में,
उस मनुष्य का जन्म व्यर्थ है जो दूसरों की पीड़ा नहीं हरता।

जिससे दूसरों को कष्ट होता है, वह सन्ताप है।
जिससे मन उत्पीड़ित होता है, वह ताप है।।
मनुष्य को अच्छे और बुरे कार्य करने पड़ते हैं,
परन्तु जिसको करने में मन साक्षी न दे, वह पाप है।

बेघर

साध्वीश्री सुमनश्री

नीरव एकाकी क्षणों में,
विद्युत खम्भों के तारों पर
पंक्तिबद्ध बैठे हैं
मौन उदास कबूतर।
कुछ देर सुस्ताकर
उड़ जाते हैं पुनः
अनन्त व्योम में,
खोजने अपने घर
और थक कर लौट जाते हैं
फिर फिर कर
बेघर - उन्हीं पर।

आत्मा और परमात्मा

शिवकांत पाण्डेय

आत्मा -
अपने ही में समाये
अस्तित्व को
खोजती रही,
अस्तित्व खोजता रहा
आत्मा को,
दोनों भटकते रहे,
न आत्मा को मिला अस्तित्व
न अस्तित्व को मिली आत्मा।
भूल गये दोनों
सबसे बड़ा है परमात्मा।

अतीत के झरोखे से...

आंदोलन समाचार

अपनी आत्मा की पवित्रता के लिए करना चाहिए धर्म : आचार्य तुलसी

श्री भदन्त आनन्द कौशल्यायन के विशेष अनुरोध पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी पुनः 22 नवम्बर को नागपुर पधारे। नागपुर शहर की सीमा पर जिलाधीश श्री केमकर व बौद्ध भिक्षु भदन्त आनन्द कौशल्यायन ने आचार्य श्री का स्वागत किया।

अपराह्न में एक विशेष पत्रकार सम्मेलन में आचार्य श्री ने फरमाया, "मैं लगभग सात सौ साधु-साध्वियों एवं अनेक कार्यकर्ताओं के साथ बीस-पच्चीस वर्षों से अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में लगा हूँ। भावात्मक एकता, धार्मिक सद्भाव, सहिष्णुता तथा नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना के लिए हमने पंजाब से कन्याकुमारी तक पदयात्रा की। आज हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ एक प्रकार से खिलवाड़ किया जा रहा है। मैं चाहता हूँ देश का भविष्य रचनात्मक कार्य करने वाले संस्थानों के हाथ में हो। अणुव्रत एक रचनात्मक कार्य करने वाला संगठन है। देश को ऐसे अनेक संगठनों की आवश्यकता है।"

23 नवम्बर के आयोजन में नागपुर विश्वविद्यालय के पालि प्राकृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. भागचन्द्र जैन ने आचार्य श्री का स्वागत करते हुए कहा - "हमारे नगर में आध्यात्मिक जीवन जीने वाले साधुओं का आगमन हुआ है। यह हम सब लोगों के लिए गौरव की बात है। साधु समाज की रीढ़ होते हैं। ये अनासक्त भाव से समाज की सेवा करते हैं।"

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अनंतगोपाल शेवड़े ने कहा - "आज हमारे राष्ट्र की सबसे गंभीर समस्या चरित्र की है। यह समस्या दूसरी समस्याओं की भी जड़ है। आचार्य श्री का एक ही संदेश है कि सब लोग चरित्रवान बनें। हमारे देश ने भौतिक क्षेत्र में निश्चित ही भारी विकास किया है, परन्तु नैतिक क्षेत्र में गिरावट भी आयी है। इस विशाल देश में इतनी बड़ी आबादी संकल्पपूर्वक जिस कार्य में लग जाएगी, उसको पूर्ण कर सकती है। आवश्यकता है नैतिक शक्ति के जागरण की। मुझे खुशी है कि आचार्य श्री अणुव्रत के माध्यम से वही कार्य कर रहे हैं, जिसकी आज सर्वाधिक आवश्यकता है।"

आचार्य प्रवर ने अपने मंगलमय प्रवचन में कहा, "मैं सोचता हूँ कि आज लोग धर्म करते हैं, उनमें से अधिकांश नरक के डर से करते हैं। धर्म की आवाज में स्वर्ग और नरक की प्रमुखता रहती है। लोग सोचते हैं धर्म करने से स्वर्ग मिलता है, अन्यथा नरक। इसलिए आज धर्म की जहाँ-तहाँ आवाज सुनायी पड़ती है, उसमें नरक का भय ही प्रमुख रहता है। मेरी मान्यता है कि धर्म स्वर्ग-नरक की दृष्टि से नहीं बल्कि अपनी आत्मा की पवित्रता के लिए करना चाहिए।" इस अवसर पर मुनिश्री नथमल, श्री बच्छराज व्यास के प्रेरणादायी वक्तव्य हुए। मुनिश्री रूपचन्द्र ने चुने हुए मुक्तक प्रस्तुत किये। कार्यक्रम संयोजन श्री कन्हैयालाल फूलफगर ने किया।

24 नवम्बर को आचार्य श्री देगांव पधारे। स्थानीय सरपंच सहित सैकड़ों लोगों ने आपका भावभीना स्वागत किया। आचार्य श्री के प्रेरणादायी वक्तव्य के पश्चात् तीन व्यक्तियों ने शराब का परित्याग किया। सायंकाल आचार्य श्री का पधारना सावगी हुआ। 25 नवम्बर को प्रातः सावनेर व साथ उमरी पधारे। 26 नवम्बर को आजनगाँव पधारे। यहां से आपने पुनः मध्य प्रदेश में प्रवेश किया। 27 नवम्बर को सिवनी में मध्यप्रदेश के कृषि एवं लोक कल्याण राज्यमंत्री श्री माधवलाल दवे ने आचार्य श्री से भोपाल पधारने की प्रार्थना की। उच्चतर माध्यमिक शाला के आयोजन में आचार्य श्री ने विद्यार्थियों को संबोधित किया। विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से बीड़ी तथा शराब त्यागने का संकल्प किया।

1000 विद्यार्थियों ने ग्रहण किये वर्गीय नियम

कोटा। 30 नवंबर को कोटा जंक्शन में हायर सैकण्डरी स्कूल व माध्यमिक शाला में विद्यार्थियों व अध्यापकों के मध्य मुनिश्री धर्मचंद 'पीयूष' के प्रवचन हुए। लगभग 1000 विद्यार्थियों ने अणुव्रत के विद्यार्थी वर्गीय नियम ग्रहण किये। दोनों ही स्थलों पर अध्यापक गोष्ठियां भी सम्पन्न हुई।

कहानी

प्रगति गुप्ता

शेष चाहत

"हमारे आसपास सब वैसा ही जुटता है जैसा कि ईश्वर ने तय किया है। हमारे सुख और दु:ख में जिन्हें साझी भूमिकाएं निभानी होती हैं, वे पास आ जाते हैं। जैसे कि तुम्हारी सहृदयता और अपनापन मुझे यहाँ खींच लाता है। बेटा! मैं तुम्हारे व्यक्तित्व में अपने बच्चों की उपस्थिति को महसूस करता हूँ। तभी बहुत खुश होकर घर लौटता हूँ। जब भी बच्चों की याद या हूक उठती है, मैं तुम्हारे क्लीनिक पर चला आता हूँ।"

डॉ. आभास अक्सर शुगर टेस्ट के लिए डॉ. विभा की क्लीनिक में आया करते थे। उनकी उम्र यही कोई सत्तर वर्ष के आसपास होगी। जब भी वह क्लीनिक की सीढ़ियां चढ़ते, उनके चेहरे पर मुस्कुराहट हमेशा खिली रहती। शुगर लेवल के बढ़ने या घटने से उनकी मुस्कुराहट में बदलाव आया हो, विभा ने कभी महसूस नहीं किया।

क्लीनिक का हर स्टाफ डॉ. आभास के व्यवहार का मुरीद था। वह हमेशा ही सोचने पर मजबूर कर देते थे कि कैसी भी परिस्थिति हो, मुस्कुराकर आगे बढ़ा जा सकता है। वे जब भी आते, अपना कोई न कोई अनुभव स्टाफ से साझा करते। फ्री होने पर डॉ. विभा भी उनकी बातें ध्यान से सुनने की कोशिश करतीं क्योंकि उनकी बातें अर्थपूर्ण होती थीं। सभी का उनके प्रति आदर भाव था।

आज इत्तेफाक से एक ही समय पर आभास और विभा का क्लीनिक पर पहुँचना हुआ। विभा ने अभिवादन करके पूछा - "कैसे हैं अंकल आप? आपकी ब्लड शुगर बराबर चल रही है, कोई और दिक्कत तो नहीं? आप काफी महीनों से हमारे यहाँ शुगर की जाँच करवाने के लिए आ रहे हैं। चाहकर भी नहीं पूछ पायी कि आपके परामर्श डॉक्टर कौन हैं?"

"विभा! तुमने एक साथ कितने प्रश्नों की झड़ी लगा दी, अब बूढ़ा होने लगा हूँ। कुछ जवाब देने से छूट गया तो...अगर बेटा तुम मेडिसिन की डॉक्टर होती तो मेरे परामर्श डॉक्टर का काम भी यहीं हो जाता।" यह कहकर वह जोर से हँस दिये और बोले- "विभा! जानती हो, तुम्हारे क्लीनिक पर हफ्ते में दो बार आने से मेरे दो मकसद पूरे होते हैं। चूँकि अकेला रहता हूँ तो घर से निकलने पर मेरा मन बदल जाता है। हालाँकि यह टेस्ट मैं घर पर भी कर सकता हूँ। दूसरा, मुझे तुम्हारे क्लीनिक में बहुत अपनापन महसूस होता है। तुमसे मिलने के बाद अपने बच्चों की कमी महसूस नहीं होती। तुम्हारा स्नेह मुझे खींच लाता है।"

विभा और उनकी उम्र में काफी फर्क था, पर उनका मित्रवत व्यवहार स्वत: ही अनौपचारिकता महसूस करवा बात करने पर मजबूर करता था। "अंकल! आज आप मेरे चैम्बर में चलिए, हम बातें करते हैं। अभी मेरा कोई मरीज भी नहीं है। आपसे मिलकर हमेशा मन में कई प्रश्न उठते हैं। हालाँकि हमारी बातें टुकड़ों में ही होती रही हैं। जब आपका सभी के प्रति व्यवहार देखती हूँ तो आपके बारे में जानने की उत्कंठा होती है।"

विभा के आग्रह करते ही डॉ. आभास की आँखें पनीली हो आयीं। वह उनके बोलने की प्रतीक्षा कर ही रही थी कि उन्होंने खुद को संयत कर मुस्कुराते हुए कहा, "बेटा! अच्छा चलो... आज हम कुछ तुम्हारे बारे में जानेंगे और कुछ अपने बारे में भी बताएंगे, मगर ध्यान रहे...शुरुआत तुमसे ही होगी।" विभा ने भी मुस्कुराते हुए उनकी बात का जवाब सहमति में सिर हिला कर दिया।

"पहले यह बताओ तुम्हारे पति क्या करते हैं? कितने बच्चे

हैं तुम्हारे? घर में और कौन-कौन साथ रहता है?" आभास ने कुर्सी पर बैठते हुए पूछा। उन्हें खुद से पहले दूसरों को तवज्जो देना खूब अच्छे से आता था।

"अंकल! मेरे कार्डियोलॉजिस्ट पति डॉ. अखिल इसी शहर के एक गवर्नमेंट अस्पताल में कार्यरत हैं। हमारे एक बेटा और बेटी है, जो आजकल दसवीं और बारहवीं बोर्ड की परीक्षा की तैयारियों में लगे हैं। पापा यानी ससुरजी रिटायर्ड प्रोफेसर हैं। मम्मी का गत वर्ष ही देहांत हुआ है। मेरे पीहर की साइड में भी पापा प्रोफेसर पद से रिटायर हुए। माँ का देहांत हुए तीन साल हो चुके हैं। पापा बड़े भाई के साथ ही रहते हैं। उनकी देखभाल अच्छे से हो जाती है।" जब विभा संक्षिप्त में आभास को अपने परिवार के बारे में बता रही थी, तब मंद-मंद मुस्कुराते आभास के चेहरे पर बिखरी हुई मुस्कुराहट बहुत कुछ बोल रही थी।

विभा के बात पूरी करते ही वह बोले, "जानती हो विभा! तुम्हारे क्लीनिक पर मेरा आना निमित्त के अधीन हुआ। मैं शिक्षक हूँ, तुम्हारे पिता भी शिक्षक रहे हैं। हमारे आसपास सब वैसा ही जुटता है जैसा कि ईश्वर ने तय किया है। हमारे सुख और दु:ख में जिन्हें साझी भूमिकाएं निभानी होती हैं, वे पास आ जाते हैं। जैसे कि तुम्हारी सहृदयता और अपनापन मुझे यहाँ खींच लाता है। हाँ बेटा! एक बात कहना चाहता हूँ कि बढ़ती उम्र की वजह से कई बार अपनी बातें दोहरा देता हूँ, तुम उन्हें नजरअंदाज कर देना।"

विभा को डॉ. आभास का उसे सिर्फ विभा पुकारना भला लग रहा था। "कोई बात नहीं अंकल। मुझे आपसे बातें करके ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं कुछ सीख रही हूँ।" जैसे ही विभा ने अपनी बात पूरी की, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "बेटा! मैं तुम्हारे व्यक्तित्व में अपने बच्चों की उपस्थिति को महसूस करता हूँ। तभी बहुत खुश होकर घर लौटता हूँ। जब भी बच्चों की याद या हूक उठती है, मैं तुम्हारे क्लीनिक पर चला आता हूँ।" यह कहते हुए जैसे ही उनकी आवाज भावुक होकर धीमी हुई, उन्होंने तुरंत ही अपनी बात बदलते हुए विभा से पूछा, "तुम्हें मेरी बातें भाषण जैसी तो नहीं लग रहीं।" एकाएक वह चुप होकर किसी सोच में डूब गये।

"नहीं अंकल, ऐसा कुछ भी नहीं है। आप जिस सद्भावना से सबसे मिलते-जुलते हैं, वह हमेशा ही पितातुल्य भावों को जगाता रहा है।" विभा ने बातचीत को बढ़ाते हुए कहा। इस बीच अपने स्टाफ को चाय लाने का बोलकर विभा ने सुनना जारी रखा। पहले भी डॉ. आभास का उनके क्लीनिक में एक सेवक के साथ आना बहुत कुछ महसूस करवा गया था, मगर आज वह उनसे ही बातें सुनने के लिए उत्सुक थी।

अपनी हर बात को बहुत धीरे से कहना, हरेक की बात को सुनकर बहुत दिल से उत्तर देना, उनकी आदतों में शुमार था। यही सब विभा को बहुत आत्मीय-सा महसूस करवाता था। पहले भी उनके आने-जाने में हुई बातों से विभा को पता चल चुका था कि वे किसी बड़े विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे और काफी बच्चों को पढ़ा चुके थे। यही वजह थी कि वे हर बात को बहुत नाप-तौल कर बोलते थे। जब कुछ बताना नहीं चाहते तो मुस्कुराकर अपनी बातों को विराम दे देते।

थोड़ी देर चुप रहकर अंकल ने पुन: अपनी बात बतानी शुरू की "बेटा! सब अच्छा चलते-चलते कभी-कभी इंसान अकेला महसूस करता है। अड़तीस साल के अध्यापन-काल में न जाने कितने बच्चों को दिल से सिखाते-सिखाते और पढ़ाते-पढ़ाते उनसे दिल से जुड़ता गया। अब जब भी अतीत के पन्ने उलट-पलट करता हूँ, तो उनकी शरारतों से जुड़ी सैकड़ों यादें मुझे आज भी तरोताजा कर देती हैं। मुझे अपने स्टूडेंट्स का प्रेम हमेशा याद आता है, पर जानती हो बेटा! जैसे-जैसे मेरे पढ़ाये हुए बच्चे अपनी-अपनी मंजिल के लिए निकले, मुझे उनकी उन्नति से अथाह खुशियाँ मिलीं। आज भी उनके निश्छल स्वच्छंद ठहाकों और बातों की कमी मुझसे कॉलेज के गलियारों के चक्कर

लगवाती है। तब मुझे अपना रिटायर होना अखरता है। आज भी जब कोई स्टूडेंट मेरे पास किसी भी तरह की मदद माँगने आता है, खुश हो जाता हूँ।"

"अंकल! आज भी आपके पास स्टूडेंट्स आते हैं?"

"हाँ बेटा! काफी स्टूडेंट्स आते हैं। उन्हें थीसिस वर्क पूरा करने में गाइड कर देता हूँ या फिर अन्य कोई भी जरूरत जो मेरे बस में हो, पूरी करने की कोशिश करता हूँ। तुम्हें एक किस्सा सुनाता हूँ कॉलेज के दिनों का।" अंकल जब अपने स्टूडेंट्स की बातें कर रहे थे, उनके चेहरे की चमक देखते ही बनती थी।

"मेरा एक स्टूडेंट था विकास। वह बहुत मेधावी था। मैं उस समय डीन फैकल्टी था। इम्तिहान की तारीखों को लेकर कॉलेज का माहौल गर्म था। हर रोज ही शरारती स्टूडेंट्स कुछ न कुछ फसाद करते थे। एक रात कुछ स्टूडेंट्स ने काफी पत्थर हमारे घर पर फेंके और टीचर्स के खिलाफ नारेबाजी की। जब कुछ समझ नहीं आया तो मैंने विकास को फोन करके सूचना दी। उस वक्त रात के दो बजे थे। वह जितनी जल्दी आ सकता था, घर आ गया। सारी रात हमारे साथ रहा ताकि वह हमारी परेशानी में संबल बन सके। आज भी वह मेरे संपर्क में है। उसकी पोस्टिंग अलग-अलग शहरों में होने की वजह से बहुत मिलना संभव नहीं होता। दरअसल गुरु अगर स्टूडेंट की निगाहों में उच्च स्थान पर बैठा हो न बेटा, तो उसे इतना आदर भाव मिलता है कि कल्पना भी नहीं की जा सकती। हम शिक्षकों की यही पूँजी है। वे जब भी फोन पर बातचीत करते हैं, मन खुश हो जाता है।"

विभा को अंकल की बातें शत-प्रतिशत अपनी-सी ही महसूस हो रही थीं क्योंकि वह भी जब अपने टीचर्स से बात करती थी, वे भी ऐसा ही महसूस करते थे। अंकल ने तो रिटायर होने के बाद भी अपने स्टूडेंट्स का साथ नहीं छोड़ा था। जैसे ही अंकल ने पुनः बोलना शुरू किया, विभा ने अपना ध्यान उनकी ओर केंद्रित कर लिया।

"एक बेटा और एक बेटी है मेरी... बहुत अच्छी संतान। हर बार साथ चलने की जिद करते हैं...'पापा अब अकेले मत रहिए, साथ चलिए।' संस्कारवान बच्चे हैं मेरे। कुछ समय उनके साथ रहकर वापस लौट आता हूँ क्योंकि मैं बहुत स्वाभिमान से जिया हूँ बेटा। मैं कभी नहीं चाहता कि बुढ़ापे में जिद्दी होता मेरा मन उनसे कुछ ऐसा कहलवा दे कि मैं अकेला रह जाऊं। अभी तो मन में यह विश्वास है बच्चे मेरी हर बात में साथ हैं। उनके पास जरूर जाऊँगा...पर कुछ साल बाद। दरअसल बेटा! मैं जाने से पहले बच्चों के प्यार को उसी रूप में याद रखना चाहता हूँ जैसा कि आज है।" अपने बच्चों की बात करते-करते अंकल मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे। उनकी बातों में गर्व का एहसास था। जब उन्होंने अपनी पत्नी के बारे में बताना शुरू किया तो ऐसा लगा मानो ढेरों स्मृतियाँ उनकी आँखों में उतर आयी हों...

"बेटा! आज मेरी पत्नी को गुजरे हुए पूरे सात साल हो गये हैं। आज तुम और मैं क्लिनिक में साथ-साथ दाखिल हुए। इसके पीछे

भी एक वजह थी। आज सवेरे से उसका खयाल बार-बार यादों की साँकल खोलकर मन-मस्तिष्क के द्वार पर आकर खड़ा हो रहा था। जब तुमने मुझे बहुत स्नेह व आदर से सुनने की बात कही तो बस यही मेरे भावुक हो जाने की वजह बन गयी। बेटा! आज तुमसे बात करके मन हल्का हो रहा है। हम दोनों पति-पत्नी ने एक-दूसरे के स्वाभिमान को निभाने की हमेशा कोशिश की। विदा लेने के बाद भी मेरी पत्नी संबल बनकर खड़ी है। उसका विकल्प न कभी था, न कभी होगा। उसका साथ अनगिनत यादों की पूँजी है। जब-जब उसकी यादें अकेला महसूस करवाती हैं, उसकी इच्छाओं की पूर्ति करने की सोचता हूँ, शायद भगवान ने इसलिए समर्थता दी है।"

अब अंकल ने खुद के साथ-साथ विभा को भी भावुक कर दिया था। विभा अंकल की बातों में गहरे उतरकर उनसे जुड़े रिश्तों को भी अपने बहुत करीब महसूस कर रही थी। तभी अंकल ने अपनी बात बदलते हुए कहा, "दो-तीन पुराने सेवक हैं। जो आगे-पीछे घूमकर मेरी जरूरतें पूरी करते हैं। शायद ये लोग न होते तो बच्चों के पास जाने के अलावा कोई विकल्प ही नहीं होता। इनके साथ होने से भी मेरा अकेलापन भर जाता है। कुछ उनकी सुनता हूँ तो कुछ अपनी भी उन्हें सुना देता हूँ। ...और एक तुम हो बेटा जिसके पास बिना बात के भी मिलने चला आता हूँ। जब तुम्हें अपना जी-जान मरीजों के साथ लगाते देखता हूँ तो याद करता हूँ अपने पढ़ाये उन बच्चों को, जिनकी उड़ानों में मैं सहभागी था। बेटा! यह तुम्हारा स्नेह ही है जो मुझे वक्त-बेवक्त तुम्हारे पास खींच लाता है। मेरा ढेर सारा आशीर्वाद तुम्हारे लिए है।"

उनकी फिर से नम हुई आँखें विभा को भी रुआँसा कर गयीं। रक्त सम्बन्धी न होकर भी अंकल बहुत करीबी महसूस हो रहे थे। अपनी बात बोलते-बोलते एकाएक उन्होंने विभा के सिर पर हाथ रखकर कहा, "खुश रहो बेटा! मैं अब चलता हूँ। तुमसे मिलते रहना चाहूँगा क्योंकि तुमसे मिलना, मरीजों के साथ तुम्हें जी-जान से लगे देखना मेरे जीवन की कुछ शेष चाहतों में से एक है।"

यह कहकर डॉ. आभास चले गये। विभा उनके जाने के बाद सोचती रही कि अंकल जैसे व्यक्तित्व आशीर्वाद देने के लिए जीवन में आसपास रहें, यही उसकी भी शेष चाहतों में एक है।

जोधपुर में रहने वाली लेखिका मरीजों की काउंसलिंग के साथ ही साहित्य-सृजन में संलग्न हैं। साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। अब तक इनकी कई कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं। अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।" आचार्य महाश्रमण कहते हैं, ''भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।''

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गयी। तब से 27 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री सीताशरण शर्मा
विनोबा के सारथी और अणुव्रत के संवाहक

बिहार में गंगा के दक्षिण में बेगूसराय के दियारा के शाम्हो गाँव के एक ऐसे किसान परिवार में 26 मार्च 1931 को सीताशरण शर्मा का जन्म हुआ, जिस गाँव के वासी अंग्रेजों तक से चुंगी वसूल लेते थे। इनकी माताजी रोज आसपास की महिलाओं को रामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों के बारे में बताती थीं। पिताजी भी कंठस्थ रामायण के सुमधुर गायन में पारंगत थे। ऐसे में सीताशरण शर्मा को रामचरितमानस के प्रति आस्था और गहरा ज्ञान हो गया।

युवक सीताशरण को गाँव में ही पोस्टमास्टर की नौकरी मिल गयी। काम के सिलसिले में एक बार उन्हें कलकत्ता जाना पड़ा। वहां से लौटते समय दुर्गापुर रेलवे स्टेशन पर भटक रहे बच्चे ने कुछ खिलाने का अनुरोध किया तो उसे खाना खिलाया और अपने साथ गाँव ले आये। समाज ने जब बच्चे के जात-पात के बारे में पूछना शुरू किया तो जाति प्रथा के प्रति विद्रोह करते हुए शर्माजी ने घर और नौकरी दोनों छोड़ दी और अपने चाचा श्री बृजमोहन शर्मा के पास चले गये। स्वतंत्रता सेनानी रह चुके चाचाजी उन दिनों आचार्य विनोबा भावे की बिहार में चल रही भूदान यात्रा में शामिल थे। श्री सीताशरण शर्मा ने बाबा की सेवा में स्वयं को पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया एवं एक दशक से अधिक तक भारत भर में भूदान पदयात्रा की।

1963 में बाबा के निर्देश पर वे बेंगलुरु पहुँचे और वल्लभ निकेतन विनोबा आश्रम के संचालन की जिम्मेदारी संभाली। वहीं कर्नाटक के प्रमुख राजनेता और विनोबाजी के शिष्य श्री रामकृष्ण हेगड़े की भतीजी शारदा से इनका विवाह हुआ। श्री शर्मा ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा संस्थापित दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा से जुड़कर लगभग पाँच दशकों तक दक्षिण में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहभागिता निभायी।

बेंगलुरु में मोतीलाल एच. रांका, धनराज सेठिया आदि के सम्पर्क से शर्माजी अणुव्रत आंदोलन से जुड़े। आचार्य तुलसी की दक्षिण यात्रा में शर्माजी का प्रमुख योगदान रहा। 1969 में बेंगलुरु में आचार्य श्री का चतुर्मास कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में वल्लभ निकेतन विनोबा आश्रम में ही हुआ।

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के निर्देश पर शर्माजी 1971 में पूर्वी पाकिस्तान में 8-9 महीने रहे तथा बांग्लादेश मुक्ति वाहिनी के नेता शेख मुजीबुर्रहमान की मदद की। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर 1974 में हुई सम्पूर्ण क्रांति में उन्होंने महत्वपूर्ण सहभागिता निभायी तथा मीसा कानून के अंतर्गत जेल भी गये। 1977 के लोकसभा चुनाव में टिकट के प्रस्ताव के बावजूद शर्माजी दलगत राजनीति से विलग रहे। शर्माजी ने सैकड़ों कविताएँ, बच्चों के लिए बालसुलभ बारहखड़ी के साथ ही "रामकथा की परंपरा में अग्नि परीक्षा" और "त्रिलोचन" पुस्तकें भी लिखीं।

श्री सीताशरण शर्मा जीवनपर्यंत अणुव्रत आंदोलन से जुड़े रहे तथा 1997 और 2000 में अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। दक्षिण में अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार के साथ ही सर्वोदय के शीर्षस्थ नेताओं को "अहिंसा समवाय" के जरिये आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के निकट लाने का प्रयास किया। 5 जुलाई 2001 को बेंगलुरु में हृदयाघात से श्री शर्मा का आकस्मिक निधन हो गया।

उन्हें मरणोपरांत अणुव्रत पुरस्कार 1999 से सम्मानित किया गया। उनका पूरा परिवार – पत्नी श्रीमती शारदा, पुत्र श्री सिद्धार्थ, पुत्रवधू प्रो. श्वेता, प्रपौत्री एडवोकेट मानसी और प्रपौत्र साकेत अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार में आज भी प्रयासरत हैं।

अणुव्रत बालोदय

बालोदय प्रकल्प के अन्तर्गत संचालित यह सबसे महत्वपूर्ण उपक्रम है। अणुव्रत बालोदय शिविर आवासीय होते हैं एवं सामान्यतः तीन दिवसीय होते हैं। इन शिविरों का उद्देश्य है बच्चों की अन्तर्निहित क्षमताओं को उभार कर स्वयं अपने व्यक्तित्व के विकास का मुक्त अवसर प्रदान करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए चिल्ड्रन्स पीस पैलेस में सृजित कक्ष-दीर्घाओं व उनमें संकलित साधन-सामग्री का उपयोग बाल-मनोविज्ञान को केन्द्र में रखकर किया जाता है। बच्चों के मनोनुकूल वातावरण के मध्य मानवीय मूल्यों के प्रति उनके अन्तर्मन में सहज-स्वाभाविक रूप से समझ व आस्था के अंकुर प्रस्फुटित होने लगते हैं। शिविरार्थी बच्चे इस माहौल में रह कर स्वयं को अपनी प्रतिभा को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं और यही उनके भावी जीवन निर्माण की बुनियाद सिद्ध होता है।

राजसमन्द स्थित अणुविभा के 'चिल्ड्रन्स पीस पैलेस' को यह नाम देते हुए अमेरिका में होनोलूलू स्थित हवाई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ग्लेन डी. पेज ने इसे अमेरिका के डिजनीलैण्ड से भी अधिक महत्वपूर्ण बताया था। उन्होंने कहा था कि डिजनीलैंड में तो मात्र मनोरंजन है, लेकिन यहाँ मनोरंजन के साथ-साथ बच्चों के व्यक्तित्व-विकास की भरपूर सम्भावनाएँ भी हैं।

यहां की बालोदय दीर्घाओं में प्रमुख हैं

1. अणुव्रत चित्र दीर्घा : अणुव्रत दर्शन पर आधारित चित्र दीर्घा जिसमें प्रदर्शित 30 पेटिंग्स आदर्श व्यक्तित्व निर्माण का प्रभावी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

2. जीवन विज्ञान कक्ष : 50 योगासनों की मूर्तियों के साथ सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास हेतु जीवन-विज्ञान के व्यावहारिक प्रयोगों का परिचय एवं अभ्यास।

3. विश्व दर्शन दीर्घा : विश्व के विभिन्न देशों का सांस्कृतिक, भौगोलिक, राजनैतिक आदि विभिन्न विषयक परिचय एक ही छत के नीचे।

4. बालोदय पुस्तकालय : हिन्दी, अंग्रेजी व अन्य भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ बाल साहित्य का संकलन, 5000 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध।

5. बाल संसद : भारतीय संसद की प्रतिकृति के रूप में निर्मित हॉल में लोकतंत्र, नागरिकों के अधिकार व कर्तव्य तथा संसदीय शासन व्यवस्था पर आधारित मॉक पार्लियामेण्ट संचालन की स्थायी व्यवस्था।

6. विज्ञान कक्ष : दैनंदिन जीवन में विज्ञान की उपयोगिता को रेखांकित करते वैज्ञानिक प्रयोग ताकि बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो सके।

7. गुड़ियाघर : 'अनेकता में एकता की भावना को संपुष्ट करती भारत के विभिन्न राज्यों की वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक विरासत की गुड़ियाओं का प्रदर्शन व उस पर आधारित एक्टिविटी।

8. महान बालक कक्ष : भारतीय इतिहास व वर्तमान समय के वीरता, आध्यात्मिकता, सेवाभावना, विद्वता आदि क्षेत्रों में अनुकरणीय कार्य करने वाले महान् बच्चों के उदाहरणों की झाँकियाँ।

9. कौतुकालय : सर्वधर्म सद्भाव आधारित स्लाइड शो के माध्यम से बच्चों का मनोरंजन व ज्ञानवर्द्धन।

10. संग्रहालय : दैनंदिन जीवन उपयोग की वस्तुओं का संग्रह एवं उनका गुण-दोष, उत्पादन आदि विषयक परिचय।

11. भाव जागरण गुफा मानव की विभिन्न भाव धाराओं के महत्त्व से परिचित कराती लाइट एण्ड साउण्ड आधारित झाँकियाँ।

12. इंद्रिय एकाग्रता गुफा पाँचों इन्द्रियों के महत्त्व से परिचय एवं एकाग्रता का अभ्यास।

13. चित्त एकाग्रता गुफा : ध्यान से परिचय एवं प्रयोगों के माध्यम से मानसिक एकाग्रता का अभ्यास।

14. झिलमिल मीनार : अध्यात्म, धर्म, समाज-सुधार, राष्ट्र-निर्माण, साहित्य, विज्ञान, खेल, कला, संगीत आदि विभिन्न क्षेत्रों के महापुरुषों का सचित्र परिचय।

15. चित्रकला कक्ष : चित्रकला की बुनियादी जानकारी, विविध विधाओं, इतिहास व जीवन में इसके महत्त्व से परिचय एवं अभ्यास के अवसर।

16. संगीत कक्ष : संगीत की बुनियादी जानकारी, विविध विधाओं, इतिहास व जीवन में इसके महत्व से परिचय कराते विभिन्न वाद्ययंत्रों का प्रदर्शन एवं अभ्यास के अवसर।

17. भारत जोड़ो भित्ति : राष्ट्रीयता की भावना को पुष्ट करती प्रत्येक राज्य के लोकनृत्य की 100 फीट लम्बी झाँकी एवं भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की कलात्मक प्रस्तुति।

18. समन्वयी टॉवर : सर्वधर्म सद्भाव का संदेश देती आकर्षक झाँकियाँ।

19. बाल क्रीड़ांगन : मनोरंजन व खेलकूद के आकर्षक रचनात्मक साधन।

20. प्राकृतिक भूल-भुलैया : भरपूर मनोरंजन के अवसर प्रदान करती पेड़-पौधों-लताओं से घिरी भूल-भुलैया।

21. नन्दनवन : पर्यावरण प्रेम का सार्थक संदेश देते बाग-बगीचे, पेड़-पौधों की लगभग 200 प्रजातियाँ एवं बच्चों को उनसे परिचित कराने की एक्टिविटीज।

22. दूर- दृश्य दर्शन : 'चिल्ड्रन्स पीस पैलेस के आसपास के दृश्यों का दूरबीन के माध्यम से अवलोकन, विशाल राजसमन्द झील में बर्डवाचिंग।

23. इण्डोर गेम्स हॉल : शिविरार्थियों बच्चों के लिए इण्डोर गेम्स की सुविधा।

24. सहस्त्रधारा : कृत्रिम बरसात का दृश्य एवं ध्वनि-प्रकाश के माध्यम से जीवन्त वातावरण की प्रस्तुति।

25. तरणताल : नन्हे-मुन्ने बच्चों को तैराकी का सुखद अनुभव।

26. ऑडिटोरियम: सामूहिक कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के लिए उत्कृष्ट स्थान।

27. मुक्ताकाशी रंगमंच : झील के किनारे, प्राकृतिक वातावरण के बीच कायक्रमों के लिए अनूठा स्थान।

28. बालोदय छात्रावास : शिविरार्थियों बच्चों के लिए आवास की व्यवस्था।

29. विश्वमैत्री अतिथिगृह : आगन्तुकों व शिविरार्थियों के लिए आवास की व्यवस्था

30. भोजनालय व डायनिंग हॉल : आवास के साथ सात्विक भोजन की व्यवस्था।

'चिल्ड्रन्स पीस पैलेस' : आनंद और शांति का संगम

राजसमंद पहाड़ी पर बसा हुआ एक मनोरम अद्वितीय स्थान, जिसका नाम है अणुव्रत विश्व भारती संस्थान। यहां का नयनाभिराम दृश्य, आसपास में हरियाली की चादर बिछी हुई। हिलोरें खाती हुई राजसमन्द झील। नीरव वातावरण। मलयज की सी ठंडी बयार। वहां जाते ही हर जन का मन शान्ति एवं प्रसन्नता की अनुभूति करता है। श्वास की गति भी संतुलित हो जाती है।

वह स्थान है - अणुविभा। ऐसे सुरम्य स्थान एवं संस्थान के निर्माण में एक ऐसे बलिदानी, प्रबल पुरुषार्थी, नि:स्वार्थ सेवी, संघ एवं संघपति के प्रति पूर्व समर्पित, गांधी के विचारों से प्रभावित, न धन से लिप्सा, न नाम-प्रतिष्ठा-यश की कामना, कर्तव्यनिष्ठा एवं अध्यात्मनिष्ठा के रंग में रंगे हुए पारदर्शी जीवन जीने वाले विरले ही व्यक्ति थे - श्रीमान मोहनलालजी जैन (दस्साणी) जिनका एक ही लक्ष्य था - अपने जीवन को संघ सेवा, समाज सेवा व मानव सेवा में समर्पित करके कुछ नया करना।

इसी लक्ष्य को लेकर उन्होंने निरन्तर अपनी सूझबूझ एवं अथक श्रम की बूँदों से इस भव्य संस्थान को तैयार करवाया। यहां अणुव्रत, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान संबंधी विषयों पर बच्चों के भावी जीवन निर्माण के लिए अनेक विधाएं तैयार की गयीं। तब से अब तक नये-नये युगानुकूल प्रेरणादायी योजना द्वारा निर्माण कार्य आगे बढ़ रहा है। शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक स्वास्थ्य विकास हेतु बनी बाल दीर्घाओं को देखकर, जानकर बच्चों का भविष्य सुन्दर, सुगठित एवं व्यवस्थित बनेगा।

इसके साथ ही आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ के जीवन दर्शन एवं अनेक विषयों पर आधारित प्रेरणादायी चित्रकारी द्वारा समझाने वाले प्रसंग अत्यंत आकर्षक एवं रोचक हैं। साथ ही सबको अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान को गहराई से समझने का अवसर मिल रहा है। इस संस्थान में आने वाले व्यक्ति, बच्चे आदि सभी मनोहर एवं प्रेरणादायी चित्रकारी देखकर बहुत ही आनन्द एवं शान्ति का अनुभव करते हैं। इस तरह उन्हें दोतरफा लाभ मिलता है।

समाज भूषण श्री मोहनलाल जैन ने बहुत ही सादगी एवं संयममय जीवन जीया और अपने पूरे परिवार में भी उन्हीं संयम व सादगी के संस्कार दिये हैं। उनके सुपुत्र श्री संचय जैन भी अपनी पिताश्री की लकीर पर चलकर बड़ी जागरुकता से अणुव्रत का कार्य करने में निरन्तर लगे हुए हैं और अणुविभा को आगे बढ़ाने में अपनी पूरी शक्ति नियोजित कर रहे हैं। वर्तमान में वे अणुविभा के अध्यक्ष पद पर हैं और अपनी पूरी टीम को साथ लेकर बड़ी तन्मयता से इस संघीय सेवा में पूर्ण निस्पृह बनकर अणुविभा के कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाने को तत्पर हैं। उनके प्रति हम तो यही आध्यात्मिक मंगल कामना करते हैं कि वे इसी प्रकार हमेशा सामाजिक सेवा के साथ आध्यात्मिक विकास भी करते रहें। इसी मंगलकामना के साथ।

साध्वी मंजुयशा
एवं सहवर्ती साध्वीवृंद 18 सितम्बर 2022 को चिल्ड्रन्स पीस पैलेस एवं यहां स्थित बालोदय दीर्घाओं के अवलोकन के पश्चात् व्यक्त उद्गार

अणुव्रत प्रबोधन कार्यशाला

■■ राष्ट्रीय संयोजक मर्यादा कुमार कोठारी की रिपोर्ट ■■

- अणुव्रत दर्शन का सम्यक् संप्रेषण और अणुव्रत जीवनशैली का अनुकरण वर्तमान समस्याओं के समाधान का सशक्त आधार है। अणुव्रत विश्व भारती ने इस महती आवश्यकता को देखते हुए अणुव्रत प्रबोधकों के रूप में अणुव्रत का सक्षम प्रचार-प्रसार करने योग्य प्रबुद्ध व्यक्तियों का नेटवर्क तैयार करने का प्रयास आरंभ किया है।
- उचित मात्रा में अनुभव, समुचित ज्ञान, सही संप्रेषण कला व उच्च मंतव्य वाले व्यक्ति प्रबोधक के रूप में अणुव्रत जीवनशैली से जन-जन को परिचित करवाएंगे। इन प्रबोधकों की तैयारी का प्रथम चरण अणुव्रत प्रबोधन कार्यशाला के माध्यम से 3 से 9 अक्टूबर के मध्य ऑनलाइन संपन्न किया गया।
- प्रबोधकों के दायित्व व प्रबोधन की आवश्यकता पर चर्चा के साथ आरंभ हुआ यह सत्र अणुव्रत गीत की विवेचना, वक्तृत्व कला, अणुव्रत आचार संहिता की मीमांसा, कार्यकर्ता की अर्हता व अणुव्रत का गौरवशाली इतिहास विषयों पर प्रभावी प्रबोधन, चिंतन व मनन की सामग्री विभिन्न सत्रों में अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा उपलब्ध करवायी गयी।
- विचार-विमर्श के साथ वक्तृत्व कला की प्रतीकात्मक प्रस्तुति व इन 5 दिनों में संकलित ज्ञान का मापन करने हेतु एक ऑनलाइन परीक्षा भी हुई। देशभर से सम्मिलित कार्यकर्ताओं ने उत्साहवर्धक तरीके से सभी गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।
- विषय के विशेषज्ञों द्वारा गहराई से प्रस्तुत अनुभवात्मक तथ्यों को जानकर समस्त भावी प्रबोधक रोमांचित थे।
- कार्यक्रम संयोजक मर्यादा कोठारी के नेतृत्व में अणुव्रत के अनेक केंद्रीय व क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं ने इसमें अपना समय व श्रम नियोजित किया।
- अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन ने अणुव्रत गीत की भावपूर्ण व्याख्या की, वहीं अणुव्रत सेवी राजेंद्र सेठिया ने अणुव्रत जीवनशैली एवं अणुव्रत आचार संहिता के 11 सूत्रों पर अपना उद्बोधन दिया। वक्तृत्व कला को प्रायोगिक रूप में समझाने का दायित्व जहां पवन मांडोत ने लिया, वहीं कार्यकर्ता की अर्हता के बारे में वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर ने अपना अनुभवात्मक वक्तव्य सबके समक्ष रखा। अणुव्रत गौरव डॉ. महेंद्र कर्णावट ने इतिहास की शाब्दिक यात्रा से सबको रोमांचित किया।
- कार्यक्रम के छठे दिन श्रेयांश कोठारी ने वक्तृत्व कला का प्रायोगिक परीक्षण लिया जिसमें सभी संभागियों ने 90 सेकंड के अंदर अपने विषय पर प्रस्तुति देकर प्रशिक्षण की सार्थकता को अंकित करवाया।
- तीन चरण के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले पड़ाव के अंत में 23 संभागियों को प्रथम चरण से द्वितीय चरण की ओर अग्रसर होने की अर्हता प्राप्त हुई।
- अंतिम दिन निष्पत्ति सत्र में न्यायाधीश गौतम चौरड़िया ने इस कार्यशाला की परिकल्पना हेतु अणुविभा को बधाई देते हुए समस्त संभागियों को इस महान कार्य के लिए निरंतर प्रयासरत रहने की सलाह दी। संपूर्ण अणुविभा परिवार को शुभकामनाओं के साथ उन्होंने कामना की कि यह उपक्रम निरंतर बढ़ता रहे। कार्यशाला का सत्र संचालन और तकनीकी व्यवस्था अणुविभा के अंतरराष्ट्रीय संगठन मंत्री जय बोहरा ने कुशलतापूर्वक की।

  विभिन्न सत्रों में अणुविभा के उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, प्रताप दुगड़ व अशोक डूंगरवाल, महामंत्री भीखम सुराणा, संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, विनोद कोठारी व संजय जैन, प्रबोधन प्रतियोगिता संयोजक अशोक चोरडिया की सहभागिता रही।
- प्रबोधन कार्यक्रम के द्वितीय चरण में प्रोन्नत संभागियों की सूची इस प्रकार है -

रेखा धाकड़, मुंबई, अशोक मालू, गुवाहाटी, बजरंग बैद, गुवाहाटी, महेंद्र दक, बेंगलुरु, छतर सिंह चोरड़िया, गुवाहाटी, डोली नाहटा, बंगाईगांव, डॉ. स्वाति भंसाली, जोधपुर, हेमलता मुनोत, मुम्बई, जिनेन्द्र कुमार कोठारी, कांता चोरड़िया, कोलकाता, मधु मेहता, मामूल कोचेटा, अंबिकापुर, नवीन दुग्गड़, कोलकाता, नीतू पालगोता, धारवाड़, प्रदीप सिंघी, कोलकाता, प्रमिला सेठिया, बंगाईगांव , सरोज सिंघी, कोलकाता, आशा खाब्या, अहमदाबाद, वीरेंद्र भाटी, लाडनूं, मधु नाहटा, विकास दुगड़, हावड़ा, नवरत्न गादिया, गुवाहाटी, सुमित्रा धारीवाल।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह 2022

■■ राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया की रिपोर्ट ■■

- अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तहत कार्यक्रम आयोजित किये गये। राजनेता, समाजनेता, प्रशासनिक वर्ग, शिक्षक वर्ग, व्यापारी वर्ग, कर्मचारी वर्ग, आम जनता व नये कार्यकर्ता भी बड़ी संख्या में इन कार्यक्रमों से जुड़े तथा अणुव्रत को जाना, माना और अपनाया।
- 25 सितम्बर, 2022 को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का बैनर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में लोकार्पित हुआ। साप्ताहिक आयोजन को गुरुदेव ने अणुव्रत अमृत देशना से आप्लावित किया।
- अणुव्रत आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने विशेष दिशादर्शन के साथ ही छापर समिति के आयोजनों में सन्निधि प्रदान कर हजारों विद्यार्थियों को लाभान्वित किया।
- देश भर में विराजित चारित्र आत्माओं ने नवाह्निक अनुष्ठान की आराधना के साथ-साथ अणुव्रत कार्यक्रमों में भी सान्निध्य प्रदान किया। अन्य धर्मगुरुओं और विद्वानों ने भी अणुव्रत पर सारगर्भित वक्तव्य दिये।
- दक्षिण भारत तथा पूर्वोत्तर की अणुव्रत समितियों ने स्थानीय भाषाओं में अणुव्रत दर्शन को प्रसारित किया। मुंबई समिति ने 94 कार्यक्रमों के आयोजन का कीर्तिमान रचा। अन्य कई समितियों ने सातों दिवसों के सफल आयोजन किये। छोटी-छोटी समितियों ने सीमित साधनों के बावजूद अपार इच्छाशक्ति के सहारे रचनात्मक कार्यक्रम किये।
- अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष संचय जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल, प्रताप दुगड़, राजेश सुराणा, महेन्द्र नाहर के अलावा प्रबन्ध मण्डल, संगठन मंत्रियों, राज्य प्रभारियों व कार्यसमिति सदस्यों ने भी कार्यक्रमों में सहभागिता दर्ज करायी।
- अणुव्रत मीडिया के पंकज दुधोड़िया, जयन्त जी, बीरेन्द्रजी व सन्तोष जी ने समयबद्धता के साथ प्रतिदिन वीडियो बुलेटिन व पीडीएफ प्रसारण में अहम भूमिका निभायी।
- दिल्ली ऑफिस से समितियों को समय से गाइडलाइन, बैनर, पोस्टर, सॉफ्ट कॉपी आदि भेजने में सक्रिय भूमिका निभायी। डॉ. धनपत लुनिया व परिवार के सहयोग से दायित्व का सम्यक निर्वहन हुआ।

पहला दिन - सांप्रदायिक सौहार्द दिवस

अणुव्रत समिति **कटक** द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री जिनेश कुमार ने कहा कि अणुव्रत का मूल आधार है मानवीय एकता, साम्प्रदायिक सौहार्द और प्रामाणिकता। स्वागत भाषण समिति अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल ने दिया। संचालन मुनि परमानंद ने किया।

अणुव्रत समिति **जोधपुर** की ओर से आयोजित सर्व धर्म सम्मेलन में ज्ञानशाला के बच्चों ने नाटिका के माध्यम से साप्रदायिक एकता का संदेश दिया। साध्वीश्री जिनबाला जी ने कहा कि धर्म, संप्रदाय कितने भी हों, किंतु हमारा आपस में ईर्ष्या, आक्षेपात्मकपूर्ण व्यवहार न हो। बौद्ध धर्म के डॉ. हेमंत शर्मा, स्वामी रामप्रसाद महाराज, काजी तैवन अली अंसारी, ब्रह्माकुमारी शील दीदी ने भी विचार रखे।

अणुव्रत समिति **अहमदाबाद** की ओर से मानव उत्थान सेवा समिति गिरधरनगर, शाहीबाग में आयोजित कार्यक्रम में महात्मा अद्वैतानंदजी ने कहा कि अणुव्रतों को अपनाने से सद्‌संस्कार जीवन में प्रवेश करते हैं। अध्यक्ष सुरेश बागरेचा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

अणुव्रत समिति **हावड़ा एवं कोलकाता** की ओर से तेरापंथ सभागार उत्तर हावड़ा में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री स्वर्ण रेखा ने छोटे-छोटे व्रतों की छतरी के अन्तर्गत अपने आचार-विचार को परिष्कृत करने की बात कही। मुख्य वक्ता तरुण सेठिया ने भी विचार रखे। हावड़ा समिति के अध्यक्ष मनोज कुमार सिंघी तथा कोलकाता समिति के अध्यक्ष प्रदीप सिंघी ने अतिथियों का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **भिवानी** द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी सरोज कुमारी ने कहा कि सभी धर्म अच्छे हैं, लेकिन साम्प्रदायिकता बुरी है। ब्रह्मकुमारी सुमित्रा बहन ने कहा कि साम्प्रदायिकता से समाज में विघटन होता है। हरियाणा के दिव्यांग जन आयुक्त रामकुमार मक्कड़ ने कहा कि अणुव्रत के नियमों पर चलने से विश्वशान्ति हो सकती है। बाबा जगन्नाथ और साध्वीश्री सोमप्रभा ने भी विचार रखे। आस्था स्पेशल स्कूल के दिव्यांग बच्चों ने भी साध्वीश्री का आशीर्वाद ग्रहण किया।

अणुव्रत समिति **सिलीगुड़ी** की ओर से तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि तृणमूल कांग्रेस दार्जिलिंग

जिला अध्यक्ष पापिया घोष, मुख्य वक्ता पत्रकार डॉ. आर. पी. सिंह और अणुविभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री राकेश मालू ने सांप्रदायिक सौहार्द के महत्व पर प्रकाश डाला।

अणुव्रत समिति **आसींद** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी जसवती ने कहा कि जन्म के लिए सौहार्द की अपेक्षा नहीं होती, पर जीने के लिए यह आवश्यक है। मुस्लिम समाज के सदर मशकूर अहमद शेख ने आपसी भाईचारा सांप्रदायिक सौहार्द के विषय में विचार रखे। महाप्रज्ञ इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस के उपाचार्य संकर्षण पांडा ने अतिथियों का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **दिल्ली** द्वारा श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज ऑफ वूमेन में "सद्‌भाव : गांधी व तुलसी" विषयक संगोष्ठी का आयोजन लगभग 1400 छात्राओं के मध्य किया गया। अणुविभा कार्यसमिति सदस्य और गांधीवादी चिन्तक प्रो. अनिलदत्त मिश्रा ने मुख्य वक्ता के रूप में विषय का प्रतिपादन किया। अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया ने छात्राओं को अणुव्रत के संकल्प दिलाये। अणुव्रत समिति अध्यक्ष शान्तिलाल पटावरी ने अणुव्रत साहित्य देकर कॉलेज की प्रिंसिपल प्रो. साधना शर्मा का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **जसोल** की ओर से पुराना ओसवाल भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा ने कहा कि अणुव्रत का लक्ष्य है सभी भेदों को मिटाकर मानव मात्र में मानवता की भावना पैदा करना। मुख्य अतिथि सेन्ट पॉल फादर रौनाड, ब्रह्माकुमारी आश्रम की बहन अस्मिता दीदी, उमा दीदी और मौलाना शौकत अली अकबरी ने भी विचार रखे।

अणुव्रत समिति **मुंबई** द्वारा ठाणे तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री शासनश्री जिनरेखा ने कहा कि बुरा सम्प्रदाय नहीं, सांप्रदायिकता है। फादर माइकल रोजारियो, फादर लियो फार्गोस, ब्रह्माकुमारी हर्षा बहन एवं बिंदिया बहन, बौद्ध धर्म के भदंत राहुल बोधि महाथेरो, लॉयन डब्ल्यू परवेज, लॉयन बसंत राज मेहता ने विचार रखे। मुख्य अतिथि अणुविभा के संगठन मंत्री विनोद कोठारी थे।

अणुव्रत समिति **पुणे** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री सुरभिप्रभा ने अणुव्रत के महत्व पर प्रकाश डाला। विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने कहा कि प्रत्येक धर्म का रास्ता अलग-अलग है, मगर वह मार्ग प्रभु के पास ही जाता है। अतिथियों का स्वागत अणुव्रत समिति अध्यक्ष धर्मेंद्र चोरड़िया ने किया।

अणुव्रत समिति **बालोतरा** की ओर से न्यू तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री मोहजीतकुमार ने कहा कि सभी धर्मों में सकारात्मकता ही असली सौहार्द है। मुनिश्री जयेशकुमार, मौलाना पीरबक्श साहब और ब्रह्मकुमारी संस्थान से उमा दीदी ने भी विचार रखे। समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा ने अतिथियों का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **गुवाहाटी** की ओर से गुरुद्वारा एवं मस्जिद में जाकर लोगों को अणुव्रत के बारे में बताने के साथ ही सांप्रदायिक सौहार्द पर चर्चा की गयी। "आज की परिस्थिति में सांप्रदायिक सौहार्द की महत्ता" विषय पर ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

अणुव्रत समिति **ग्रेटर सूरत** द्वारा तेरापंथ भवन सिटीलाइट में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री उदित कुमार ने कहा कि सांप्रदायिक सौहार्द किसी भी समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। वहीं, तेरापंथ भवन उधना में साध्वीश्री लब्धिश्री ने कहा कि अणुव्रत सभी धर्म के लोगों को एक साथ बैठने का मंच उपलब्ध कराता है। अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विजय कांत खटेड़ एवं मंत्री सुनील श्रीश्रीमाल ने क्रमशः सूरत एवं उधना में स्वागत वक्तव्य दिया।

अणुव्रत समिति **अजमेर** ने तेरापंथ भवन में साध्वीश्री गुप्तिप्रभा के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें सर्व धर्म मैत्री संघ के अध्यक्ष प्रकाश जैन, महंत श्याम सरण, फादर सनी, बोहरा मस्जिद के सचिव मोहम्मद अली, सरदार दिलीप सिंह छाबड़ा तथा ब्रह्माकुमारी रूपा बहन ने सर्व धर्म सद्भाव पर विचार रखे।

सवाई माधोपुर के अणुव्रत भवन में मुनिश्री सुमति कुमार व मुनिश्री देवार्य कुमार ने सांप्रदायिक सौहार्द के बारे में उद्‌बोधन दिया। मुख्य अतिथि पूर्व विधायक मोतीलाल मीणा, संरक्षक रतन लाल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश जैन, उपाध्यक्ष घनश्याम जैन आदि ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के बैनर का विमोचन किया।

अणुव्रत समिति **नाथद्वारा** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री रविन्द्र कुमार ने कहा कि आज आदमी की शक्ल से आदमी डर रहा है। आदमी को लूट कर आदमी घर भर रहा है। मुनिश्री अतुल कुमार ने कहा कि सहयोग, सदाचार व सद्भाव जैसे गुण ही मानव को अन्य जीवों से श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं।

अणुव्रत समिति **जयपुर** की ओर से साध्वीश्री धनश्री के सान्निध्य में कार्यक्रम हुआ। इसमें अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, अणुव्रत लेखक पुरस्कार से पुरस्कृत नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', पूर्व विधायक गुल मोहम्मद, समग्र सेवा संघ राजस्थान के अध्यक्ष सवाई सिंह, भारतीय बौद्ध महासभा के प्रदेशाध्यक्ष टी. सी. राहुल, तेरापंथ सभा जयपुर के अध्यक्ष हिम्मत डोसी, अणुविभा जयपुर केन्द्र के अध्यक्ष पन्नालाल बैद आदि ने सांप्रदायिक सद्भाव के महत्व पर विचार रखे। समिति अध्यक्ष विमल गोलछा ने अतिथियों का स्वागत किया।

सुनाम, चूरू, पालघर, सरदारशहर, शाहपुरा, सुजानगढ़, भुज-कच्छ, किशनगंज, तेजपुर, आमेट, श्रीडूंगरगढ़, भीलवाड़ा, गंगाशहर अणुव्रत समिति ने भी कार्यक्रम आयोजित किये।

दूसरा दिन - जीवन विज्ञान दिवस

अणुव्रत समिति **मुंबई** की ओर से ज्ञान मंदिर स्कूल डोंबिवली, ज्ञानोदय विद्यालय उल्हासनगर, महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल कालबा देवी तथा पब्लिक स्कूल एंड नाइट कॉलेज वाकोला सांताक्रूज पूर्व में कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस अवसर पर शासनश्री साध्वीश्री सोमलता जी ने कहा कि जीवन विज्ञान के प्रयोगों से विद्यार्थियों में अनुशासन, विनम्रता, सहिष्णुता व अभय का विकास होता है। साध्वीश्री रक्षितयशाजी ने ध्यान के प्रयोग करवाये तथा साध्वी शकुंतला कुमारीजी व संचितयशाजी ने स्मृति विकास के प्रयोग बताये। समिति की अध्यक्ष कंचन सोनी ने बताया कि इन कार्यक्रमों में जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

अणुव्रत समिति **गंगाशहर** की ओर से मुनिश्री जितेंद्र कुमार के सान्निध्य में बोथरा गर्ल्स कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री सुधांशु कुमार जी ने बताया कि हर प्राणी के जीवन में कठिनाइयां होती हैं, लेकिन उन कठिनाइयों के बीच से विश्वास के साथ समाधान को खोजते हुए समस्या का निवारण करना ही जीवन विज्ञान है। मुख्य वक्ता संतोष बोथरा ने कहा कि जीवन विज्ञान हमें कलात्मक जीवन जीने की कला सिखाता है। समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा ने अतिथियों का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **देवगढ़-मदारिया** की ओर से बाल मंदिर जूनियर विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री आस्थाप्रभाजी एवं साध्वीश्री मलययशाजी ने बालकों को महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश चंद डागा ने भी विचार रखे।

अणुव्रत समिति **सवाई माधोपुर** की ओर से अणुव्रत भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री देवार्य कुमार व मुनिश्री सुमति कुमार ने कहा कि जीवन विज्ञान जीवन जीने की कला सिखाता है।

अणुव्रत समिति **भिवानी** द्वारा श्रीमती उत्तमी बाई स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री सोमप्रभा ने कहा कि जीवन विज्ञान से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सकता है। साध्वीश्री चिरागप्रभा ने कहा कि जीवन विज्ञान के प्रयोगों से भावनात्मक संतुलन बना रहता है।

अणुव्रत समिति **सिलीगुड़ी** की ओर से सूर्य सेन पार्क में आयोजित कार्यक्रम में जीवन विज्ञान के संयोजक महावीर सिरोहिया ने जीवन विज्ञान को अपनाकर खुशहाल जीवन जीने के बारे में जानकारी दी। समिति की अध्यक्ष पुष्पा चंडालिया ने स्वागत भाषण दिया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री जूली सिरोहिया ने किया।

अणुव्रत समिति **सरदारशहर** की ओर से शाकम्भरी विद्यापीठ में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री विशालयशाजी और साध्वीश्री विशालप्रभाजी ने जीवन विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला।

अणुव्रत समिति **हावड़ा** की ओर से हावड़ा हिंदी हाई स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. प्रेमलता चौरडिया ने वीडियो के माध्यम से जीवन विज्ञान के बारे में जानकारी दी। अणुव्रत विश्व भारती के उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष मनोज सिंघी, उपाध्यक्ष सुषमा सिंघी ने भी विचार रखे।

अणुव्रत समिति **दिल्ली** की ओर से शिशु भारती शिव मंदिर विद्यालय झिलमिल में आयोजित कार्यक्रम में राज गुनेचा ने जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये। प्रोफेसर राजेश मूतरेला ने इसके सैद्धांतिक प्रयोगों के बारे में जानकारी दी। अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के व्यवस्था प्रभारी शांति कुमार जैन ने भी विचार रखे। समिति अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने अतिथियों का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **जसोल** की ओर से नवकार विद्या मंदिर माध्यमिक में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी, साध्वीश्री ध्यानप्रभाजी व साध्वीश्री श्रुतप्रभाजी ने पाथेय प्रदान किया। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक पवन छाजेड़ ने जीवन विज्ञान व योग के प्रयोग करवाये। समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने अतिथियों का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **पाली-मारवाड़** की ओर से राजकीय बांगड़ अस्पताल के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री तत्त्वरुचि 'तरुण' ने जीवन जीने की कला को उच्च बनाये रखने की प्रेरणा दी। मुख्य अतिथि पाली के विधायक ज्ञानचंद पारख, विशिष्ट अतिथि रेड क्रॉस सोसाइटी के सचिव जिनेंद्र जैन, बांगड़ कॉलेज के प्रिंसिपल डी. सी. व्यास एवं ए.एन.एम. प्रिंसिपल के. सी. सैनी ने भी विचार व्यक्त किये। समिति अध्यक्ष सुबुद्धि समदड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **फारबिसगंज** की ओर से तेरापंथ महिला मंडल परिसर में आयोजित कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष प्रभा सेठिया ने जीवन विज्ञान के बारे में बताने के साथ ही लोगों को अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा दी।

अणुव्रत समिति **सिरसा** द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वीश्री सुमनश्री ने बच्चों के सर्वांगीण विकास में जीवन विज्ञान की भूमिका पर प्रकाश डाला। साध्वीश्री सुरेखा श्रीजी ने जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये।

अणुव्रत समिति, **बल्लारी** द्वारा गवर्नमेंट हायर प्राइमरी हिन्दी स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में चतुर सिंह ने योग एवं प्राणायाम करवाये। सबसे बेहतर योग करने वाली दूसरी क्लास की विद्यार्थी कुमारी मानव का सम्मान किया गया।

अणुव्रत समिति, **बालोतरा** की ओर से वर्धमान सी. सै. स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री मोहजीत कुमारजी ने विद्यार्थियों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये।

अणुव्रत समिति **बारडोली** की ओर से सिनसियरिटी स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष पायल चोरड़िया ने बच्चों को योगासन करवाये।

अणुव्रत समिति **ग्रेटर सूरत** की ओर से भगवान महावीर इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की महामंत्री मधु देरासरिया ने कहा कि जीवन विज्ञान स्वस्थ समाज की संरचना का विशिष्ट उपक्रम है। जीवन विज्ञान-योग प्रशिक्षक रेणु नाहटा ने बच्चों को विनय, विनम्रता और अनुशासन के पाठ सिखाये। गौतम गादिया ने आसन-प्राणायाम के प्रयोग करवाये। अणुव्रत समिति अध्यक्ष विजयकांत खटेड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया।

अणुव्रत समिति **हिसार** के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वीश्री यशोधरा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन मॉडल टाउन में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री तरुण यशाजी ने अणुव्रत ज्योति स्कूल के बच्चों को महाप्राण ध्वनि, दीर्घश्वास प्रेक्षा, ताड़ासन की क्रियाएं करवायीं। समिति अध्यक्ष कुंदन लाल गोयल ने बताया कि बच्चों को 'बच्चों का देश' पत्रिका वितरित की गयी।

अणुव्रत समिति **जोधपुर** की ओर से साध्वीश्री जिनबाला जी, साध्वीश्री करुणा प्रभाजी के सान्निध्य में अणुव्रत प्रश्नोत्तरी का आयोजन सरदारपुरा तातेड़ गेस्ट हाउस में किया गया। मुख्य अतिथि जिला न्यायाधीश मेघना जैन थीं।

अणुव्रत समिति **हैदराबाद** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री त्रिशला कुमारी जी ने विद्यार्थियों और श्रावक-श्राविकाओं को जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये।

अणुव्रत समिति **कोलकाता** की ओर से श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी विद्यालय (ब्वायज) में आयोजित कार्यक्रम में प्रशिक्षक संजय पारख ने श्वास के प्रयोगों को करवाया एवं स्वस्थ शरीर, मन, भाव के मंत्र बताये। मुख्य वक्ता पूनम सिंह, अणुविभा के उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पंकज दुधोडिया ने भी विचार रखे। अध्यक्ष प्रदीप सिंघी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अणुव्रत समिति **अजमेर** की ओर से मॉडर्न स्कूल में साध्वीश्री गुप्ति प्रभा जी और साध्वीश्री भाविक यशा जी के सान्निध्य में बालिकाओं को आसन व कायोत्सर्ग के प्रयोग कराये गये।

अणुव्रत समिति **चूरू** की ओर से राजकीय पारख बालिका विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में योगासन के साथ ही बच्चों व स्टाफ को अणुव्रत के संकल्प करवाये गये। समिति ने जीवन विज्ञान को स्कूली शिक्षा का हिस्सा बनाने का प्रयास करने का प्रण लिया।

अणुव्रत समिति **कानपुर** की ओर से डॉ. साध्वी पीयूष प्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में पूनम चंद सुराणा ने कहा कि जीवन विज्ञान हमारे शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक तथा भावनात्मक और चारित्रिक विकास के लिए अति आवश्यक है। विद्यालयों में इसका प्रचार-प्रसार होना चाहिए।

अणुव्रत समिति **रायपुरिया** की ओर से मध्य प्रदेश के झाबुआ के सम्पर्क बुनियादी हाई स्कूल, शा. हायर सेकेण्डरी स्कूल, सरस्वती शिशु मन्दिर, सद्‌गुरु श्री साईं पब्लिक स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अणुव्रत समिति **भुज** की ओर से इन्द्राबाई गर्ल्स हाईस्कूल में डॉ. मुनिश्री पुलकित कुमारजी और नचिकेता मुनि आदित्य कुमार के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। समिति अध्यक्ष नरेंद्र भाई मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया।

सुनाम, हांसी, छापर, इस्लामपुर, राजसमन्द, नाथद्वारा, सुजानगढ़, लाडनूं, भिवानी, गुवाहाटी, भीलवाड़ा, तेजपुर, आमेट, पालघर, अहमदाबाद, फारबिसगंज, उदयपुर, जयपुर, नगांव और काठमाण्डू की अणुव्रत समिति ने भी कार्यक्रम आयोजित किये।

तीसरा दिन - अणुव्रत प्रेरणा दिवस

अणुव्रत समिति **जयपुर** की ओर से संत जयाचार्य महाविद्यालय, शास्त्रीनगर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता पूर्व आईएएस अधिकारी प्रेम चंद बेरवाल ने छात्राओं से कहा कि अणुव्रत के विभिन्न संकल्पों में से कोई भी एक संकल्प लें और उसका ईमानदारी से पालन करेंगे तो निश्चय ही मंजिल पर पहुँचा जा सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि अणुव्रत छोटे-छोटे संकल्पों की ओर प्रेरित करता है। अणुव्रत की चेतना भीतर होनी चाहिए। इससे पहले समिति अध्यक्ष विमल गोलछा ने अतिथियों का स्वागत किया। समिति की मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा ने कार्यक्रम का सफल संयोजन किया। आभार ज्ञापन महाविद्यालय की प्रधानाचार्या निशा आचार्य ने किया।

अणुव्रत समिति **सिलीगुड़ी** की ओर से हिंदी बालिका विद्यापीठ स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में जीवन विज्ञान संयोजक महावीर सिरोहिया ने बताया कि योगाभ्यास, खानपान की शुद्धि, संयमित जीवन से रोगों से दूर रहा जा सकता है। समिति अध्यक्ष पुष्पा चंडालिया ने स्वागत भाषण दिया।

अणुव्रत समिति **भिवानी** द्वारा लिटिल हार्ट पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री सोमप्रभा ने कहा कि संयम के पाठ के बिना वर्तमान शिक्षा अधूरी है। अगर संकल्प मजबूत हो तो सफलता मिलना निश्चित है। साध्वीश्री चिरागप्रभा ने बच्चों को अपने नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों पर हावी न होने देने की सीख दी। समिति अध्यक्ष रमेश बन्सल ने बच्चों को विद्यार्थी अणुव्रत के संकल्प ग्रहण करवाये। विद्यालय के एमडी डॉ. पवन गोयल, प्रमुख शिक्षाविद् डॉ. रमाकान्त शर्मा, सुरेन्द्र जैन एडवोकेट ने भी विचार व्यक्त किये।

अणुव्रत समिति **आसींद** की ओर से तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री जसवती ने कहा कि अणुव्रत आज प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रासंगिक बन गया है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम ही व्यक्ति के जीवन विकास का माध्यम हो सकते हैं। साध्वीश्री ऋषभ प्रभा, साध्वीश्री अनेकांत प्रभा एवं साध्वीश्री मननीय प्रभा ने भी विचार रखे। समिति अध्यक्ष पारसमल ओस्तवाल ने आभार ज्ञापित किया।

अणुव्रत समिति **जसोल** की ओर से शासनश्री साध्वीश्री सत्यप्रभा (देवगढ़) के सान्निध्य में पाठशाला सेकंडरी स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में अध्यापकों और विद्यार्थियों ने अणुव्रत के नियमों की पालना करने का संकल्प लिया। मुख्य वक्ता शिक्षाविद् ईश्वर सिंह इंदा थे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने सभी का स्वागत किया। विद्यालय के संरक्षक कालूराम संखलेचा ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सफरू खां ने किया।

अणुव्रत समिति **देवगढ़-मदारिया** की ओर से सुबोध ज्ञान मंदिर विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री सिद्धप्रभाजी ने अणुव्रत को अपनाने की सलाह दी। साध्वीश्री आस्थाप्रभाजी ने बच्चों को ज्ञान मुद्रा, शशांकासन व महाप्राण ध्वनि के प्रयोग करवाये। समिति अध्यक्ष प्रकाश चंद डागा ने आभार ज्ञापित किया।

अणुव्रत समिति, **बल्लारी** द्वारा स्त्री सेवा निकेतन एवं बाल कल्याण केंद्र में कार्यक्रम आयोजित किये गये। प्रेक्षाध्यान प्रायोजक मंजुला छाजेड़ ने स्त्री सेवा निकेतन की 75 बहनों एवं बाल कल्याण केंद्र के 56 बच्चों को स्वेटर प्रदान किये। कार्यक्रम का सफल संयोजन समिति की मंत्री परवीना ने किया।

अणुव्रत समिति **कोलकाता** की ओर से श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी विद्यालय (गर्ल्स) में आयोजित कार्यक्रम में अणुविभा के उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने छात्राओं से कहा कि नकल, झूठ और बुरी आदतों से बचें। मुख्य वक्ता संजय पारख ने अणुव्रत के मंत्र को समझाते हुए कहा कि अणुव्रत कैसे और क्यों अपनाएं। राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी पंकज दुधोडिया और समिति अध्यक्ष प्रदीप सिंघी ने भी विचार रखे। संचालन समिति के मंत्री नवीन दुगड़ तथा आभार ज्ञापन प्रधानाध्यापिका माधवी शर्मा ने किया।

अणुव्रत समिति **दिल्ली** की ओर से विवेक विहार के ओसवाल भवन में शासनश्री साध्वी रतनश्रीजी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम का प्रारंभ भारत ब्लाइंड स्कूल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत अणुव्रत गीत से हुआ। अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, दिल्ली स्कूल पब्लिक स्कूल मैनेजमेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष आर.सी. जैन, जीवन विज्ञान प्रशिक्षक रमेश कांडपाल ने विचार रखे। समिति अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने अतिथियों का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **चूरू** द्वारा आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री प्रशमरति जी ने बताया कि कैसे हम अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को अपनाकर जीवन को उत्कृष्ट बना सकते हैं। समिति अध्यक्ष रचना कोठारी ने लोगों को अणुव्रत का एक संकल्प दिलवाया। कार्यक्रम का संचालन समिति के मंत्री ताहिर खान ने किया।

भीलवाड़ा, पुणे, आमेट, अजमेर, तेजपुर, कानपुर, पालघर, हांसी, नगांव, पाली-मारवाड़, सिरसा, पेटलावद, जोधपुर, पीलीबंगा, भिवानी, सुजानगढ़, किशनगंज, गंगाशहर, फारबिसगंज, अहमदाबाद, इस्लामपुर, राजसमंद, छापर, दिवेर, सरदारशहर, सवाई माधोपुर और काठमाण्डू अणुव्रत समिति की ओर से भी अणुव्रत प्रेरणा दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किये गये।

चौथा दिन - पर्यावरण शुद्धि दिवस

अणुव्रत समिति **छापर** की ओर से पर्यावरण शुद्धि दिवस पर रैली निकाली गयी। इसमें शामिल पाँच सौ से अधिक विद्यार्थी स्लोगनों व तख्तियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दे रहे थे। रैली कस्बे के मुख्य मार्गों से होती हुई आचार्य महाश्रमण के प्रवचन स्थल पहुँची।

इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि जल का अपव्यय न करें। बिजली का अनावश्यक उपयोग न हो। उन्होंने हरे वृक्षों को न काटने, आजीवन आत्महत्या नहीं करने और द्वेषवश किसी की हत्या नहीं करने का भी संकल्प भी कराया। इससे पहले पालिकाध्यक्ष श्रवण माली, अणुविभा के उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, महामंत्री भीखमचंद सुराणा, अणुव्रत समिति छापर के संरक्षक मगनसिंह दूधोडिया, अध्यक्ष प्रदीप सुराणा व अणुव्रत सेवी माला कातरेला ने गांधी चौक से हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया।

अणुव्रत समिति **विजयवाड़ा** की ओर आयोजित कार्यक्रम में अणुविभा के सहमंत्री विमल बैद ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेन्द्र कोठारी ने बताया कि पलास्टिक की थैलियों का प्रयोग बंद करने को लेकर दुकानदारों में जागरुकता लाने के लिए सचित्र पट्टिका उन्हें भेंट की गयी।

अणुव्रत समिति, **सिरसा** की ओर से तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी सुमनश्रीजी ने कहा कि भगवान महावीर महान पर्यावरणविद् थे। जैन धर्म में पर्यावरण संतुलन के जितने गहरे सूत्र हैं, अन्यत्र मिलना शोध का विषय है। एसएस जैन स्कूल व समाज के बच्चों ने पर्यावरण विषय पर चित्रकला प्रदर्शनी भी लगायी। समिति अध्यक्ष रविंद्र गोयल के अनुसार इससे पहले अणुव्रत समिति व शहर की संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अग्रवाल पार्क में पौधे लगाये।

अणुव्रत समिति **आसींद** की ओर से सीनियर हायर सेकेंडरी उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री जसवती ने कहा कि पर्यावरण को शुद्ध रखना है तो सबसे पहले संयमित जीवनशैली को अपनाना होगा। मुख्य अतिथि विद्यालय के प्रधानाचार्य बालमुकुंद वैष्णव ने पर्यावरण शुद्धि के बारे में जानकारी दी। आभार ज्ञापन समिति अध्यक्ष पारसमल ओस्तवाल ने किया।

अणुव्रत समिति **सुजानगढ़** की ओर से राजकीय कनोई बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में शासनश्री साध्वी संयमश्रीजी के सान्निध्य में कार्यक्रम हुआ। साध्वी प्रसिद्धि प्रभाजी एवं सहज प्रभाजी ने बताया कि पर्यावरण शुद्धि से पहले हमें अपनी आत्मा की शुद्धि करना अति आवश्यक है। अध्यक्ष महेश तंवर ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। विद्यालय की प्राचार्या सरोज पूनिया वीर ने भी विचार रखे।

अणुव्रत समिति **जोधपुर** की ओर से तेरापंथ भवन जाटावास में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वीश्री कुंथुजी ने बच्चों को पानी बेकार खर्च न करने, नशामुक्ति और पेड़ों को न काटने का संकल्प करवाया। मुख्य अतिथि अणुव्रत प्रबोधन प्रकल्प के राष्ट्रीय संयोजक मर्यादा कोठारी ने कहा कि अणुव्रत के माध्यम से पूरे विश्व में शांति और स्वच्छता स्थापित की जा सकती है। स्कूली बच्चों के लिए "पर्यावरण का संरक्षण : दायित्व हमारा हर क्षण" विषयक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

अणुव्रत समिति **भिवानी** द्वारा भारती पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री सोमप्रभा ने कहा कि अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों का पालन करके पर्यावरण को शुद्ध रखा जा सकता है। अणुव्रत समिति अध्यक्ष रमेश बन्सल ने बच्चों को दीपावली पर पटाखे न चलाने की शपथ दिलायी। प्राचार्या राजबाला कौशिक ने भी विचार रखे।

अणुव्रत समिति **गंगाशहर** की ओर से चोपड़ा स्कूल में हुई संगोष्ठी में मुनिश्री जितेन्द्र कुमार ने कहा कि पर्यावरण असंतुलन का मूल कारण असंयम है। मुनिश्री सुधांशु कुमार ने कहा कि जीवन के कष्ट ईश्वरीय संकेत हैं कि आप अपनी क्षमताओं को बढ़ाकर जीत की ओर बढ़ें। अणुविभा के राष्ट्रीय प्रचार प्रसार मंत्री धर्मेंद्र डाकलिया ने भी विचार रखे। इससे पहले विद्यालय परिसर में पौधरोपण किया गया।

अणुव्रत समिति **हांसी** की ओर से तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में शासनश्री साध्वीश्री भाग्यवती जी ने कहा कि प्रदूषण समाप्त करने के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाने के साथ-साथ व्यक्ति को अपने मन में व्याप्त मैल को मिटाकर समाज के उत्थान में सहयोग करना चाहिए। अणुव्रत समिति अध्यक्ष अशोक जैन ने बताया कि कार्यक्रम के बाद मॉडल टाउन पार्क में पौधरोपण किया गया।

अणुव्रत समिति **पालघर** की ओर से ट्विंकल स्टार इंग्लिश हाई स्कूल के असेंबली सेशन में 1600 बच्चों को अणुव्रतों की जानकारी देने के साथ ही उन्हें विद्यार्थी अणुव्रत अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में सातवीं कक्षा के 300 बच्चों ने पर्यावरण बचाओ विषय पर चित्र बनाये। कार्यक्रम के बाद अणुव्रत टीम ने लोगों को पौधे वितरित किये।

अणुव्रत समिति **ग्रेटर सूरत** के सदस्यों ने सूरत महानगर पालिका के सफाई कर्मचारियों के साथ मिलकर डुमस तट की सफाई की। समिति अध्यक्ष विजयकांत खटेड़ ने सभी का स्वागत करते हुए पर्यावरण सुरक्षा की जरूरत का संदेश दिया।

अणुव्रत समिति **फारबिसगंज** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष प्रभा सेठिया, मंत्री नीलम बोथरा एवं अन्य वक्ताओं ने कहा कि बिजली और पानी के उपयोग में संयम बरत कर पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सकता है। कई महिलाओं ने अपने घरों में पौधे भी लगाये।

अणुव्रत समिति **किशनगंज** की ओर से तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री शान्तिप्रभाजी ने कहा कि मानसिक संकीर्णता को छोड़कर मनुष्य को प्रदूषण से बचना चाहिए। अध्यक्ष संजय बैद के मुताबिक कार्यक्रम के बाद पौधरोपण भी किया गया।

अणुव्रत समिति **बारडोली** की ओर से उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समिति अध्यक्ष पायल चोरड़िया के अनुसार इस अवसर पर सभी ने संकल्प लिया कि जन्मदिन, एनिवर्सरी या अन्य शुभ अवसर पर एक पौधा अवश्य लगाएंगे और उसकी देखभाल करेंगे।

अणुव्रत समिति **जसोल** की ओर से चुआदेवी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री ध्यान प्रभाजी ने हरे पेड़ नहीं काटने, पानी-बिजली के संयम और गन्दगी न फैलाने का संकल्प दिलाया। समिति अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने स्वागत भाषण दिया। संचालन मंत्री सफरुखान ने किया।

अणुव्रत समिति **सुनाम** की ओर से तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री कमल कुमार ने फरमाया कि पर्यावरण शुद्ध होने से ही आत्मा, स्वास्थ्य और परिवार-व्यापार का उत्थान हो सकता है। हमें प्रेक्षाध्यान और संयम को अपना कर क्रोध, मान, माया और लोभ पर विजय पाने का प्रयास करना चाहिए जिससे हम आत्मस्थ बनकर स्व-पर कल्याणकारी बन सकें।

अणुव्रत समिति, **चूरू** के प्रतिनिधियों ने स्कूलों में जाकर बच्चों को पर्यावरण का महत्व बताया तथा उनसे पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता फैलाने का आग्रह किया। समिति द्वारा महिला मंडल व कन्या मंडल के सहयोग से शहर की लंपी रोग से ग्रस्त बीमार गायों की सेवा की गयी तथा उनके लिए गुड़, खल, दवाइयां भेंट की गयीं।

अणुव्रत समिति **मुंबई** की ओर से हनुमान टेकड़ी क्षेत्र सायन कोलीवाड़ा तथा डोंबिवली के जन गण मन विद्यालय, पंडित मदनमोहन मालवीय विद्यालय, केबी वीरा स्कूल, स्वामी विवेकानंद स्कूल और उल्हासनगर ज्ञानदा विद्यालय में पौधरोपण किया गया। अध्यक्ष कंचन सोनी के मुताबिक रायगढ़ (उरण) पीरवाडी बीच, नागाव, उरण क्षेत्र रायगढ़ में बीच पर सफाई अभियान चलाया गया।

जयपुर, कटक, काठमाण्डू, पुणे, आमेट, गुवाहाटी, अजमेर, तेजपुर, बोइसर और सिलीगुड़ी की ओर से भी पर्यावरण शुद्धि दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किये।

पाँचवां दिन - नशामुक्ति दिवस

अणुव्रत समिति **दिल्ली** और सेलिब्रेटिंग लाइफ फाउंडेशन की ओर से अणुव्रत भवन में 'सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति' विषयक संगोष्ठी का शुभारंभ शासनश्री साध्वीश्री संघमित्राजी के प्रेरणा पाथेय से हुआ। मुख्य वक्ता अणुविभा कार्यसमिति सदस्य व गांधीवादी चिंतक डॉ. अनिल दत्त मिश्रा और मानवशास्त्री डॉ. कैलाश कुमार मिश्रा थे। अध्यक्षता सत्यपाल चावला ने की। अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने सभी का स्वागत किया। सेलिब्रेटिंग लाइफ फाउंडेशन की अध्यक्ष कुमारी बबीता झा ने अपनी संस्था का परिचय दिया। इस अवसर पर 17 वरिष्ठ नागरिकों और जनकल्याण के लिए कार्यरत संस्थाओं के प्रमुखों को सम्मानित किया गया। शाहदरा के शशिराज फाउंडेशन नशामुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र में भी कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अणुव्रत समिति **चूरू** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री प्रशमरति जी ने लोगों को नशामुक्त रहने का संकल्प दिलाया। अणुव्रत समिति सदस्य शशि कोठारी ने नशे के दुष्परिणामों के बारे में बताया।

अणुव्रत समिति **मुंबई** की ओर से श्री गुजराती समाज विद्यालय कुर्ला वेस्ट, गुंदवलि म्युनिसिपल स्कूल अंधेरी ईस्ट, डोंबिवली ईस्ट लेबर कट्टा, डोंगरी रिमांड होम, केसीबीडी बेलापूर, खारघर के स्वामी ब्रह्मानंद प्रतिष्ठान, मंगलम फाउंडेशन एवं जिला परिषद स्कूल, भिवंडी में कारखानों में कार्यरत कर्मचारियों एवं धमोले गाँव में आदिवासी समुदाय के मध्य नशामुक्ति का कार्यक्रम आयोजित किया गया। समिति अध्यक्ष कंचन सोनी ने बताया कि इन कार्यक्रमों में वक्ताओं ने नशा के दुष्परिणामों के बारे में बताते हुए लोगों से नशा न करने की अपील की।

अणुव्रत समिति **आसींद** की ओर से कृष्णा पब्लिक माध्यमिक विद्यालय में शासनश्री साध्वीश्री जसवती जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में लगभग 400 विद्यार्थियों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया।

अणुव्रत समिति **जोधपुर** की ओर से शासनश्री साध्वीश्री सत्यवतीजी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में स्कूली बच्चों ने दो नाटकों की प्रस्तुतियां दीं। अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली ने बताया कि इन नाटकों के माध्यम से नशा के दुष्परिणामों को बताने के साथ ही इनसे बचने का आह्वान किया गया।

अणुव्रत समिति **रीछेड़** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सोहनलाल कोठारी ने 800 बच्चों को जीवन में कभी भी नशा नहीं करने का संकल्प दिलाया।

अणुव्रत समिति **सिलीगुड़ी** की ओर से ट्रक ड्राइवर यूनियन एसोसिएशन के साथ मिलकर नशामुक्ति के लिए होम्योपैथिक दवा के साथ ही नशा के दुष्परिणामों को बताने वाले पैम्फलेट वितरित किये गये।

अणुव्रत समिति, **बालोतरा** की ओर से मुनिश्री मोहजीतकुमारजी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि नगर परिषद सभापति सुमित्रा जैन थीं। अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा के मुताबिक इस अवसर पर निकाली गयी रैली में 200 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

अणुव्रत समिति **नगाँव** की ओर से 34 बटालियन सीआरपीएफ कैम्प, कातिमारी में नशामुक्ति अभियान चलाया गया। समिति अध्यक्ष छत्रसिंह जैन के मुताबिक इसमें बटालियन के कमांडेंट शिव शंकर उपाध्याय तथा अन्य अधिकारियों के साथ ही सीआरपीएफ के 100 से ज्यादा जवान शामिल हुए।

अणुव्रत समिति **गुवाहाटी** की ओर से फैंसी बाजार चाराली में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को नशामुक्ति का संदेश दिया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि वार्ड पार्षद प्रमोद स्वामी तथा ट्रैफिक इंस्पेक्टर नृपेन सैकिया, अणुविभा के सहमंत्री छत्तर सिंह चौरड़िया, असम राज्य प्रभारी बजरंग बैद, समिति अध्यक्ष बजरंग डोसी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति **ग्रेटर सूरत** की ओर से अति व्यस्त सूरत रेलवे स्टेशन पर नशामुक्ति एवं सफाई जागरुकता रैली निकाली गयी। इसमें डीआरएम मुकेश यादव, सूरत रेलवे परिवार एवं अणुव्रत समिति के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य शामिल हुए। समिति की ओर से सूरत रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं.2 पर यात्रियों के लिए नशामुक्ति संदेश के साथ थ्री सीटर चेयर का अनावरण किया गया।

अणुव्रत समिति **सुनाम** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री कमल कुमार ने हिंदू सभा कॉलेज में विद्यार्थियों एवं गणमान्य लोगों को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने संकल्प ग्रहण किये।

इंदौर, अजमेर, तेजपुर, बोइसर, टिटलागढ़, चेन्नई, पाली-मारवाड़, बीकानेर, हावड़ा, देवगढ़ मदारिया, सवाई माधोपुर, किशनगंज, सरदारशहर, डूंगरगढ़, सुजानगढ़, कटक, भिवानी, हांसी, नाथद्वारा, काठमाण्डू, पीलीबंगा, राजसमन्द, कोलकाता, कानपुर, इस्लामपुर, बारडोली, पालघर, जसोल, आमेट, धुबड़ी, नाथद्वारा, फारबिसगंज, पचपदरा, छापर, दिवेर, बल्लारी, उदासर, बाड़मेर, गंगाशहर, जयपुर, बंगाईगांव और विजयवाड़ा की अणुव्रत समिति ने भी कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को नशामुक्ति का संदेश दिया।

छठा दिन -अनुशासन दिवस

अणुव्रत समिति **मुंबई** की ओर से रायगढ़ क्षेत्र के सुषमा पाटिल विद्यालय एंड जूनियर कॉलेज, कामोठे, प्रबोधनकार ठाकरे माध्यमिक विद्यालय माणगांव बुटुक-खोपोली और रायगढ़ जिला परिषद शाला भेलीव-खोपोली में विद्यार्थी अणुव्रत का सनबॉर्ड पोस्टर लगाया गया। संयोजक राजेश मेहता ने अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों के बारे में जानकारी दी। स्कूल के सीईओ मंदार पनवेलकर, चेयरमैन दिलीप पाटिल, प्रिंसिपल मनीषा जाधव तथा अध्यापक और पैरेंट्स अणुव्रत एवं विद्यार्थी अणुव्रत नियम से काफी प्रभावित हुए।

अणुव्रत समिति **आसींद** की ओर से अनुशासन दिवस समारोह महात्मा गांधी उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जसवतीजी ने कहा कि किसी भी परिवार, समाज या राष्ट्र की नींव का आधार है - अनुशासन। अनुशासन के बिना कोई भी संघ या संगठन की प्राणवत्ता टिक नहीं सकती। कार्यक्रम में लगभग 450 विद्यार्थियों ने अणुव्रत के नियमों का संकल्प लिया।

अणुव्रत समिति **अजमेर** की ओर से गुजराती स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री गुसिप्रभाजी ने कहा कि अनुशासन व्यक्ति को जीने का तरीका, बड़ों का सम्मान करना, माता-पिता का आदर करना, अध्यापकों का सम्मान करना और परिश्रम करना सिखाता है।

अहमदाबाद, इस्लामपुर, भिवानी, पीलीबंगा, मोमासर, सुजानगढ़, कटक, हिसार, वापी, छापर, फारबिसगंज, काठमाण्डू, भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर, सरदारशहर, सिलीगुड़ी, आमेट, बेंगलुरु, नगांव, सुनाम, हावड़ा, जसोल, गुवाहाटी, चेन्नई, भुज, राजसमन्द, पालघर, लाडनूं, भद्रू कला मंडी, कोलकाता, बालोतरा, सुनाम, ग्रेटर सूरत, जयपुर, उदयपुर, बारडोली, हांसी, सिरसा, जोधपुर, दिल्ली, डाबड़ी, देवगढ़ मदारिया, तेजपुर और चूरू की अणुव्रत समिति ने भी विद्यालयों और सार्वजनिक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को अनुशासन की महत्ता से अवगत कराया।

सातवां दिन - अहिंसा दिवस

अणुव्रत समिति **छापर** की ओर से आचार्य श्री महाश्रमण, अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री मनन कुमार और मुनिश्री दिनेश कुमार के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अविनाश नाहर की उपस्थिति में समिति अध्यक्ष प्रदीप सुराणा ने नशामुक्ति के 3000 संकल्प पत्र आचार्य महाश्रमण को समर्पित किये।

अणुव्रत समिति **जयपुर** की ओर से जेएलएन मार्ग स्थित गांधी सर्किल पर अहिंसा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत थे। इस अवसर पर मंत्रीगण महेंद्रजीत सिंह मालवीय, गोविंद राम मेघवाल तथा प्रताप सिंह खाचरियावास के अलावा राजस्थान समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष सवाई सिंह एवं सचिव राजेन्द्र कुम्भज भी उपस्थित थे। समिति अध्यक्ष विमल गोलछा ने मुख्यमंत्री महोदय को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तहत हुए कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी तथा उन्हें अणुव्रत डायरी एवं साहित्य भेंट किया। वहीं समिति सदस्यों ने उपस्थित जनसमुदाय को अणुव्रत के 11 संकल्पों के बारे में बताया। कार्यक्रम में समिति की मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा, पूर्व अध्यक्ष आशा नीलू टाक, पूर्व मंत्री अनामिका जैन, संजय बैद, राजेन्द्र जैन, रणजीत हीरावत, जी. एल. शर्मा भी उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति **दिल्ली** की ओर से दिल्ली के श्याम लाल कॉलेज में "अहिंसा, गांधी और तुलसी" विषयक संगोष्ठी में मुख्य वक्ता अणुविभा कार्यसमिति सदस्य और गांधीवादी चिंतक डॉ. अनिल दत्त मिश्रा ने अहिंसा की उपादेयता पर प्रकाश डाला। अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया और समिति के अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने भी विचार रखे।

अणुव्रत समिति **बालोतरा** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री मोहजीत कुमार ने भगवान महावीर के अहिंसात्मक दृष्टिकोण की मार्मिक व्याख्या की और अणुव्रत के नियमों को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

अणुव्रत समिति **जोधपुर** की ओर से साध्वीश्री जिनबालाजी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों ने लघु नाटिका के माध्यम से अहिंसा का संदेश दिया। अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली ने बताया कि इस अवसर पर 40 वर्ष से गुटखा खाने वाले हितेश भूरट को यह व्यसन छोड़ने पर समिति द्वारा सम्मानित किया गया।

अणुव्रत समिति **हैदराबाद** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री त्रिशला कुमारीजी आने श्रावक-श्राविकाओं को जीवन में अहिंसा अपनाने की विशेष प्रेरणा दी। समिति के अध्यक्ष प्रकाश एच भंडारी ने भी विचार रखे।

अणुव्रत समिति **कोटा** की ओर से साध्वीश्री अणिमाश्री और डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सनातन हिन्दु धर्म से लक्ष्मण कुमाराचार्य, इस्लाम समुदाय से शहर काजी जुबेर अहमद, ईसाई समुदाय से फादर अमित कुमार श्रेष्ठ, प्रजापति ब्रह्माकुमारी आश्रम से उर्मिला दीदी, सिख समुदाय से ज्ञानी रविन्द्र सिंह, बोहरा समाज से माफलुस भाई, श्री हरेकृष्णा मंदिर से रामनाथ दास, आर्ट ऑफ लिविंग से नेहा सारस्वत, इस्कॉन टेम्पल से चितबिहारी प्रभु तथा श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्री संघ के अध्यक्ष पंकज मेहता उपस्थित थे। समिति के अध्यक्ष अशोक दुगड़ ने सभी का स्वागत किया।

अणुव्रत समिति **मुंबई** की ओर से तेरापंथ भवन कांदिवली और तेरापंथ भवन भायंदर में कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अणुव्रत समिति **जसोल** और तेरापंथ सभा के पदाधिकारियों ने अहिंसा छतरी का विमोचन किया।

अणुव्रत समिति **पालघर** की ओर से आमजन को अहिंसा का संदेश देने के लिए रैली निकाली गयी। वृद्धाश्रम और मूक बधिर स्कूल में अणुव्रत के बारे में जानकारी देने के साथ ही उन्हें अणुव्रत आचार संहिता का एक्रेलिक बोर्ड भेंट किया गया।

चेन्नई, श्रीडूंगरगढ़, आसीन्द, हावड़ा, सिरसा, दिवेर, सिलीगुड़ी, सुजानगढ़, सरदारशहर, कटक, भिवानी, गुवाहाटी, गंगाशहर, चेन्नई, काठमाण्डू, बेंगलुरु, डाबड़ी, नाथद्वारा, कानपुर, पाली-मारवाड़, इस्लामपुर, उदयपुर, फारबिसगंज, हिसार, नगांव, सवाई माधोपुर, अहमदाबाद, बल्लारी, सायरा, हासी, पीलीबंगा, धुबड़ी, लाडनूं, दलखोला, देवगढ़ मदारिया, भीलवाड़ा, रीछेड़, शाहपुरा, पचपदरा, कोलकाता-हावड़ा, बारडोली, आमेट तथा ग्रेटर सूरत की अणुव्रत समिति ने भी कार्यक्रमों के माध्यम से अहिंसा का संदेश जन-जन तक पहुँचाया।

ગુજરાત ગાર્ડિયન

સમાજ અને રાષ્ટ્રના વિકાસ મ... સોહાર્દ ઘણું જરૂરી છે: મુનિ

बच्चों ने लघु नाटिका से दिया एकता का संदेश

मुनि तत्वरुचि ने दी ... कला को उच्च बना...

अणुव्रत समिति ने भरवाए संकल्प पत्र

पाली @ पत्रिका. अणुव्रत समिति की ओर से जैन स्नेह मिलन में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। अध्यक्ष सुबुद्धि समदड़िया ने बताया कि मंत्री प्रियंका चौपड़ा ने अणुव्रत प्रेरणा दिवस पर लोगों को प्रेरित कर संकल्प पत्र भरवाए। इस मौके रमेश कुमार बरड़िया, राधेश्याम भाटी, मांगीलाल तंवर, चन्द्रा खाटेड़, लीना वेदमुथा, चन्द्रा गादिया, राजेन्द्र समदड़िया आदि मौजूद रहे।

ईको फ्रेंडली दीपावली

अमावस के गहन अंधकार को मिटाकर पूरे परिवेश को दीपों की जगमग ज्योति से आलोकित कर देने का अवसर है दीपावली। अणुविभा ने पर्यावरण संरक्षण के गुरुतर दायित्व का निर्वहन करते हुए इस बार भी ईको फेंडली दीपावली अभियान चलाया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में 11 अक्टूबर, 2022 को ईको फ्रेंडली दीपावली के बैनर का लोकार्पण किया गया।

देशभर की अणुव्रत समितियों के माध्यम से पोस्टर-बैनर व पटाखों से प्रभावित मार्मिक वीडियो का प्रदर्शन कर जनमानस से ईको फेंडली दीपावली मनाने की अपील की। इस प्रकल्प की संयोजिका डॉ. नीलम जैन की विस्तृत रिपोर्ट आगामी अंक में।

चित्रदीर्घा

अणुव्रत समिति, बालोतरा
आपका हार्दिक स्वागत करती है
अणुव्रत
उद्‌बोधन सप्ताह
साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस
अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह
अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

चित्रदीर्घा

चित्रदीर्घा

75 - வது சுதந்திர தின விழா
अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह
अणुव्रत समिति - विजयवाड़ा
आपका हार्दिक स्वागत करती है
अणुव्रत उद्‌बोधन

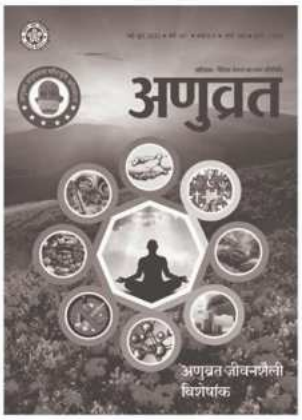

विशेषांक विमर्श

अणुव्रत विश्व भारती ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की षष्टिपूर्ति के सुअवसर तथा अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष पूरे होने की पूर्व वेला में " अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक" प्रकाशित करने का निश्चय किया। उद्देश्य था अणुव्रत दर्शन को प्रतिबिम्बित करते आलेखों के माध्यम से आमजन को उपभोक्तावाद के शिकंजे से मुक्त कराने के साथ ही अणुव्रत जीवनशैली के रूप में एक नयी राह दिखाना। एक ऐसी जीवनशैली जो वर्तमान वैयक्तिक और वैश्विक समस्याओं का स्थायी समाधान देते हुए एक अहिंसक और शांतिप्रिय समाज निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर सके।

इस उद्देश्य में कितनी सफलता प्राप्त हुई, इसका आकलन तो विशेषांक की सामग्री को समय की कसौटी पर कसने वाले पारखी ही कर सकते हैं, मगर विभिन्न प्रदेशों के समाचार पत्र-पत्रिकाओं ने जिस तरह प्रमुखता से इसकी समीक्षा प्रकाशित की तथा सुधी पाठकों ने मुक्त कण्ठ से इसे सराहा, वह हमारे हृदय में आत्मतोष की भावना का संचार करता है।

आसान शब्दों में गूढ़ तत्त्वों की व्याख्या

दैनिक समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका में जब मैंने 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' की समीक्षा पढ़ी तो इसे पाने की इच्छा बलवती हो गयी। मैंने अणुविभा अध्यक्ष और संपादक श्री संचय जैन जी का संपर्क सूत्र तलाशा और मोबाइल पर उनसे विशेषांक की प्रति भेजने का आग्रह किया। विशेषांक प्राप्त होने पर मैंने इसका अध्ययन और मनन किया। यदि गृहस्थ, व्यापारी, राजनेता, प्रशासक, नियोक्ता, कर्मचारी, श्रमिक, विद्यार्थी, अध्यापक अपने-अपने कार्यक्षेत्र में नैतिकता एवं प्रामाणिकता का अवलंबन करें तो पहले व्यक्ति, फिर समाज, राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण व उत्थान अपने आप ही हो जाएगा। अणुव्रत के एक आयाम के रूप में अहिंसा प्रशिक्षण की चर्चा करना मैं समीचीन समझता हूँ। अहिंसा प्रशिक्षण के विविध आयाम महत्वपूर्ण एवं कल्याणकारी हैं जिसमें हृदय परिवर्तन, दृष्टिकोण परिवर्तन, जीवनशैली परिवर्तन तथा व्यवस्था एवं संरचनात्मक परिवर्तन उल्लेखनीय है। लोभ, क्रूरता, मिथ्याभिमान, असहिष्णुता व क्रोध के शमन हेतु हृदय परिवर्तन नितांत आवश्यक है। अनासक्ति, अभय, मृदुता, मैत्री एवं करुणा वे गुण हैं, जो हृदय परिवर्तन के आधार हैं। जीवनशैली में परिवर्तन की दिशा में हिंसा निषेध, अनाक्रमण, विध्वंसात्मक गतिविधियों से पृथकता, मानवीय एकता में विश्वास, सर्व धर्म समभाव, व्यापार-व्यवहार में शुद्धता व प्रामाणिकता, आत्मसंयम, राजनीतिक शुचिता, समाज में व्याप्त कुरीतियों की समाप्ति या उन्हें प्रश्रय न देना, व्यसन मुक्त जीवन एवं पर्यावरणीय चेतना का विकास प्रमुख हेतुक हैं।

'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' के आलेखों में बड़े ही आसान शब्दों में इन गूढ़ तत्त्वों की व्याख्या की गयी है, जो बड़ी सहजता से पाठकों के हृदय में उतर कर इन्हें अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देते हैं। विश्वास है कि इस विशेषांक को पढ़कर समाज के प्रत्येक वर्ग एवं श्रेणी का व्यक्ति अपने-अपने क्षेत्र एवं कार्यों में छोटी-छोटी वचनबद्धताओं के माध्यम से स्वयं की भलाई, विकास व कल्याण का अवलंबन करते हुए प्रकारांतर से समाज, राष्ट्र एवं विश्व के कल्याण का निमित्त एवं वाहक बन सकेगा।

- डॉ. ताराराम बैरवा
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (सेवानिवृत्त), अजमेर

...तो सबका बेड़ा हो जाये पार

सभी जीवों की जीवनी शक्ति आत्मा है, जो साक्षात परमात्मा ही है। परमात्मा परमानंद, सदानन्द है। अतः समस्त प्राणियों के जीवन का एक ही लक्ष्य है - सुख की प्राप्ति, क्योंकि वह सदानन्द से उद्भूत है और उसके जीन में आनन्द है।

मनुष्य समस्त जीवों में श्रेष्ठ माना जाता है। इसमें बुद्धि की विशेषता है। बुद्धि से तर्क-वितर्क, हानि-लाभ, अपना-पराया का भाव जागृत होता है। अगर मनुष्य यह जान ले कि वह प्रकृति के किस गुण के प्रभाव में है तो उसके लिए अपने जीवन की दिशा और दशा सुधारना बड़ा आसान हो जाएगा। मगर अफसोस, वर्तमान समय में भौतिकवाद के चंगुल में फँसा मानव सुख की खोज का सही मार्ग छोड़ विपरीत दिशा में चल पड़ा है और व्यथित-चिंतामग्न जीवन जीने को अभिशप्त है।

परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी ने इस कराल काल से उबरने का जो सटीक रास्ता बतलाया है - अणुव्रत अर्थात् छोटा संकल्प। इसकी महत्ता शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती। उन्होंने इस कलिकाल के विपद जाल से निकलना का अनूठा रास्ता दिया है। वे परम वंदनीय हैं। जिस तरह नारद जी के एक उपदेश से भीषण डाकू रत्नाकर का जीवन बदल गया और वह करुणा का काव्य रचने वाला आदिकवि महर्षि वाल्मीकि बन गया। उसी तरह 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' के विभिन्न आलेखों में अभिव्यक्त अणुव्रत दर्शन को व्यक्ति यदि अपने जीवन और आचरण में अपना ले तो समाज और राष्ट्र का ही नहीं, पूरे संसार का बेड़ा पार हो जाये।

- विष्णुकांत झा, वैशाली (बिहार)

विशिष्ट दिशाबोध देने वाला विशेषांक

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के षष्टिपूर्ति समारोह को समर्पित 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' अपने आप में विलक्षण है। इसमें शामिल रचनाएं भाषा सौष्ठव के साथ गम्भीरता से विषय-वस्तु का सटीक प्रतिपादन करती हैं। अणुव्रत जीवनशैली को व्याख्यायित करता यह विशेषांक पाठक के समक्ष ऐसी अनुपमेय सामग्री प्रस्तुत करता है, जो विशिष्ट दिशाबोध देती है। अणुव्रत के प्रायोगिक पक्ष को रोचकता से प्रस्तुत करते इस विशेषांक में संपादक श्री संचय जैन व सह सम्पादक श्री मोहन मंगलम जी का अथक श्रम प्रत्येक पृष्ठ पर परिलक्षित हो रहा है। संग्रहणीय व पुनः पुनः पठनीय इस विशेषांक की प्रस्तुति के लिए संपादकीय विभाग को शत शत साधुवाद व ढेरों बधाइयां।

-डॉ. कुसुम लुनिया, दिल्ली

पाठकों के दिल में उतर जाने वाले आलेख

मौजूदा दौर में जब सभी जिम्मेदार अपने कर्तव्यों से मुँह मोड़ हुए दिख रहे हैं, 'अणुव्रत' पत्रिका मानवता की मशाल थामे नजर आती है। पत्रिका के 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' में तन से मन तक असर डालने वाली सामग्री बरबस ही पाठकों के दिल में उतर जाती है। मन की संवेदनशीलता पर साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी लिखती हैं कि सीमित सोच वाले व्यक्ति ही अपने और पराये की रेखा खींचते हैं। जिनका दृष्टिकोण विशाल होता है, वे सभी को अपना मानते हैं। डॉ. फकीर चंद शुक्ला का लेख रोगों को निमंत्रण देती लापरवाह जीवनशैली से सावचेत करते हुए तन को निरोगी रखने के उपाय सुझाता है। मनुष्य का कद उसकी जाति से नहीं, आचरण से ऊँचा उठता है। इस दौर में जब मजहब को आपस में बैर कराने वाला बना दिया गया है, फारुक आफरीदी लिखते हैं कि मानवता को कलंकित करने जैसे कर्म किसी भी धर्म में नहीं हैं। मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं हो सकता।

भाषा के असंयम पर डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल चिंता जाहिर करते हैं कि ऐसा माना जाता था कि विद्या से विनम्रता आती है, लेकिन आज जिनके पास विद्या है विद्या से उपार्जित धनसंपदा है, वहां विनम्रता का नितांत अभाव है। विशेषांक में कविताएं, कहानियां,लघुकथाएं भी पठनीय हैं। वीणा जैन की 'चरैवेति चरैवेति' और अशोक अंजुम की कविता 'मानवता की जीत' बेहतर हैं। पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. बसंतीलाल बाबेल बताते हैं कि उन्होंने अनेक फैसले अणुव्रत आधारित दिये और वे समय के दस्तावेज पर सशक्त हस्ताक्षर साबित हुए। ठीक ऐसे ही प्रयासों में अणुव्रत पत्रिका भी तो शामिल है। एक बार फिर इस समग्र अंक को लाने के लिए पूरी टीम को बधाई

- वर्षा भम्भाणी मिर्ज़ा, जयपुर

बीमार मन को स्वस्थ करने वाली औषधि

हमारे मोहल्ले में रहने वाले एक बुजुर्ग हर माह बाबूजी को दो पत्रिकाएं दे जाते थे। इनमें एक अखंड ज्योति होती थी। दूसरे का नाम मैं भूल रहा हूँ। बस इतना याद है कि उस दूसरी पत्रिका में अध्यात्म, योग, आचरण, संयम की बातों के साथ ही विनोबाजी के विचारों की बहुलता होती थी। उन दोनों पत्रिकाओं को पलटते हुए मैं पढ़ने की कोशिश करता लेकिन बोध कथाओं को छोड़कर कुछ भी मत्थे नहीं चढ़ता था तब। पिछले कुछ महीनों से 'अणुव्रत' पत्रिका की पीडीएफ पढ़ने का सुयोग बना हुआ है। इसी क्रम में 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' पढ़ा तो महसूस हुआ कि वाणी, व्यवहार, संयम, सोशल मीडिया, युवा पीढ़ी के आचार-विचार, आपसी सामंजस्य की कमी, सम्बन्धों की गरमाहट के गिरते ग्राफ और सबको संभाल लेने के मंत्र से भरे इस विशेषांक के संपादन में खूब श्रम किया गया है। बाजारवाद के इस युग में तमाम उठापटक के बीच इसके शब्दों को आत्मसात कर एक सहज सुंदर जीवन जिया जा सकता है। अपने बीमार मन को स्वस्थ किया जा सकता है।

कठपुतली कला पर डॉ. महेंद्र भानावत का आलेख पढ़ते हुए 'गेहरो फूल गुलाब रो' के नायक देवीलाल सामर की याद आ गयी। आधुनिक कठपुतली कला के विकास के निमित्त विश्व के कई देशों में मुखौटों की तलाश करते हुए भारतीय कठपुतलियों को सर्वश्रेष्ठ बनाने में उन्होंने अपने जीवन के बहुतेरे वसंत लगा दिये। विशेषांक में कुछ गीत हैं भी हैं - धरती को स्वर्ग बनाने, पानी बचाने, सुंदर जीवन अपनाने का संदेश देने वाले गीत। कुल मिलाकर यह विशेषांक अत्यंत पठनीय और संग्रहणीय है।

- सतीश नूतन, हाजीपुर

संग्रह करने योग्य दुर्लभ ग्रंथ

आजकल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के चकाचौंध ने प्रिंट मीडिया को पीछे धकेल दिया है। तमाम पत्रिकाएं बाजार से गायब हो गयी हैं। तथाकथित धार्मिक संस्थानों से जो पत्रिकाएं निकलती भी हैं, उनमें उन्हीं के गुरुओं के उबाऊ उपदेश मिलते हैं। वे पत्रिकाएं कुछ दिशा-दशा बदलने वाली नहीं।

वहीं, 'अणुव्रत' पत्रिका कई दशकों से मानवीय मूल्यों के संवर्धन में निरत है। नैतिक चेतना जगाने वाली पत्रिका 'अणुव्रत' के इस विशेषांक में विभिन्न विद्वानों के विचारों को सजाकर प्रस्तुत किया गया है। इसमें शामिल कहानियां मानवीय मूल्यों को जगाने वाली हैं। जैसे 'पाँचवीं बेटी' शीर्षक कहानी पुरुष प्रधान मानसिकता पर करारा प्रहार है, लड़कियों को कमतर समझने वालों के लिए एक सीख। जो लोग एक द्वीप की तरह अपने को काटकर व्यक्तिगत आकांक्षाओं को एक अलग ही आकाश प्रदान करते हैं, उनके लिए 'साझी विरासत' कहानी एक संदेश है। काव्य रचनाओं का संकलन भी अद्वितीय है। इन सबका संयोजन संपादक के कौशल्य का प्रमाण है। अंतिम पृष्ठ पर 'अणुव्रत की बात' शीर्षक से अंकित कार्टून व्यसनमुक्त जीवन के लिए एक

बड़ा संदेश है। यह विशेषांक महज एक पत्रिका नहीं बल्कि संग्रह करने योग्य दुर्लभ ग्रंथ है।

- सुशील तिवारी, बहराइच

अणुव्रत के इतिहास का अमिट शिलालेख

अणुव्रत जीवनशैली पर प्रकाशित वृहद् विशेषांक प्राप्त हुआ। अणुव्रत जीवनशैली मानव को जीना सिखाती है। मौजूदा दौर की समस्याओं का समाधान सुझाते इस शानदार विशेषांक में समाहित सामग्री पाठक को प्रेरित करती है। 384 पृष्ठ का यह विशेषांक प्रत्येक दृष्टि से समृद्ध है, जो सही मायने में अणुव्रत के इतिहास का एक अमिट शिलालेख बन गया है। इसमें समाहित प्रत्येक आलेख अणुव्रत जीवनशैली के सिद्धांत, उद्देश्य आदि पर प्रकाश डालता है। संतों, साध्वियों व विद्वान मनीषियों के आलेख अपनी महत्ता व विशेषता के साथ जीवन मूल्यों का प्रशिक्षण देते हैं। विशेषांक पठनीय, मननीय व संग्रहणीय होने के साथ-साथ प्रभावी संपादन शैली का अनूठा संगम है। शानदार साज-सज्जा व सुन्दर कागज पर मल्टीकलर छपाई पाठक को सहज ही प्रभावित कर लेती है।

- डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल, लाडनूं

पीढ़ियों तक करता रहेगा मार्गदर्शन

'अणुव्रत' पत्रिका एक ऐसी जाज्वल्यमान लौ की तरह है जिसकी हर किरण मानवता को स्निग्धता, पवित्रता, विनयशीलता, दयालुता, क्षमाशीलता, समरसता एवं विश्वबन्धुत्व की प्रेरणा देकर एक नज़्ये विनयशील समाज की संरचना में तत्पर है। यह पत्रिका देश भर के विद्वज्जनों को एक साझा मंच देकर उनके उद्गारों को जन-जन तक पहुँचाने का जो गुरुतर दायित्व निभा रही है, वह वंदनीय व अभिनंदनीय है। यह मात्र एक पत्रिका नहीं, वरन मानव जीवन में जागरण लाने की एक मुहिम है। इस विशेषांक में मानवीय मूल्यों को उजागर करने वाले आलेख ही नहीं हैं, बल्कि यह अपने दौर का वह दस्तावेज है जिसकी सामग्री पीढ़ियों तक हमारा मार्गदर्शन करने में सक्षम रहेगी। हम हमेशा इससे कुछ नया सीखते व प्रेरित होते रहेंगे। ऐसी पुनीत विशेषांक के प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल के प्रति हृदय तल से आभार व्यक्त करता हूँ।

- वसीम अहमद नगरामी, लखनऊ

सूचना

अपरिहार्य कारणों से इस अंक में 'उत्सव को कैसे बनाएं और भी अधिक अर्थपूर्ण' विषयक परिचर्चा एवं क्यू10 का प्रकाशन नहीं किया जा रहा है। इसका प्रकाशन आगामी अंक में किया जाएगा। -सं.

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

73 वाँ

अणुव्रत अधिवेशन

29, 30 व 31 अक्टूबर, 2022

छापर-चाड़वास (राजस्थान)

:: स्वर्ण सौजन्यकर्ता ::

कल्याण मित्र

स्व. श्री जुगराज नाहटा परिवार

छापर

श्री भीकम चंद बैद

गुलाब भवन, चाड़वास, वापी

:: रजत सौजन्यकर्ता ::

श्री धर्मचंद जैनसुख अशोक कुमार दूगड़

कोटा - चाड़वास - दिल्ली

श्री शांतिलाल श्री देवेंद्र कुमार श्री महावीर
हर्षिल रिधम ध्याना सोलंकी परिवार

गजपुर-सूरत

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
November, 2022

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/10/2022
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

अणुव्रत संकल्प शृंखला

मैं विश्व का एक जवाबदेह नागरिक हूं।

मैं दृढ़ संकल्पशक्ति के साथ निम्नांकित अणुव्रत स्वीकार करता हूं।

अणुव्रत आचार संहिता

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूंगा।
- मैं आत्म-हत्या नहीं करूंगा।
- मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूंगा।

मैं आक्रमण नहीं करूंगा।
- आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा।
- विश्व-शान्ति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूंगा।

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूंगा।
- जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊंच-नीच नहीं मानूंगा।
- अस्पृश्य नहीं मानूंगा।

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूंगा।
- साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊंगा।

मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा।
- अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुंचाऊंगा।
- छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा।

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूंगा।

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।

मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊंगा।
- मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूंगा।

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा।
- हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूंगा।
- पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूंगा।

अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती

www.anuvibha.org/pledge

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**